तन्त्र - २८
2

❀ श्री गणेशाय नमः ❀

282

असली पुराने छापे का

कौतुक रत्न भण्डार

अर्थात्

123

बृहद् इन्द्रजाल

(बम्बई छापे में)

श्री शंकर जी महाराज द्वारा वर्णन किये हुये

मन्त्र व तन्त्र आदि सहित

सम्पूर्ण नौ अध्याय में

लेखक–पं० श्यामसुन्दर मिश्र तान्त्रिक

प्रकाशक—

ऐन० ऐस० शर्मा गौड़ बुकडिपो

श्याम प्रेस हाथरस।

———:❀:———

मूल्य ३)   तृतीय संस्करण   (सन् १९६४

* आवश्यक सूचना *

तन्त्र मन्त्र अपने कार्य की सिद्धि के लिए हैं न कि उनसे अनुचित लाभ उठाया जावे। पुस्तक में बहुत से उपयोगी तन्त्र मंत्र दिये हैं फिर भी हमारी उसकी कोई जिम्मेदारी नहीं है। जिस प्रकार कुआ या तालाब जल पीने के लिये होता है न कि उसमें डूब कर आत्महत्या की जावे या उससे किसी का अनिष्ट किया जावे।

यह पुस्तक सर्व जन के कल्याण के लिये प्रकाशित की गई है फिर भी बुरी प्रकृति का मनुष्य इसमें वर्णित उपायों द्वारा किसी का अनिष्ट करे या और कोई उपाय अपनाऐं तो उसमें हमारा क्या दोष है।

पुस्तके लिखिता विद्या सादरं यदि जप्यते।
सिद्धिर्न जायते तस्य कल्प कोटि शतै रपि॥
गुरुं विनापि शास्त्रेऽस्मिन्नाधिकारः कथंचन।

अर्थ–जो व्यक्ति केवल पुस्तक लिखित विषय को देख कर ही मंत्र जाप आदि आरम्भ करके सिद्ध होना चाहते हैं वह कभी भी सिद्धि को प्राप्त नहीं कर पाते, क्योंकि इन्द्रजाल अथवा मंत्र शास्त्र की सिद्धि का अधिकार गुरु के समीप ही लाभार्थ माना है अतः बिना गुरु के सिद्धि नहीं मिलती अतः गुरु उपदेशानुसार ही इस कार्य को प्रारंभ करना योग्य है।

वैसे आज का युग वैज्ञानिक व यन्त्रों का युग है। ऐसे तन्त्र मन्त्र का नहीं। फिर भी जिनका विश्वास है उनको फल मिलता ही है।

विनीत–प्रकाशक पं० राधावल्लभ शर्मा गौड़

मंत्र एवं यंत्रों का
अद्भुत चमत्कार

मननात्त्रायते यस्मात्तस्मान्मंत्रः प्रकीर्तितः । जपात्सिद्धि जपात्सिद्धि जपात्सिद्धि र्न संशयः ॥ १ ॥

मंत्र ऐसे दिव्य शब्दों का समूह होता है कि जिनके दृढ़ इच्छा शक्ति पूर्वक उच्चारण मात्र से हम अलौकिक काम कर सकते हैं, थोड़े शब्दों में इस का नाम मन्त्र है। इस में शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारण मात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कंपन (स्वर लहरी) उत्पन्न होता है जिसमें रचना करने की तथा इच्छित वस्तु को आकर्षित करने की बड़ी प्रबल शक्ति होती है और वह मानसिक तथा भौतिक आकृति पर आश्चर्यजनक प्रभाव डालने के साथ २ जिन कामों को हम असंभव समझते हैं या वर्षों में भी नहीं कर सकते उन्हें वह दिव्य शक्ति चन्द मिन्टों में पूर्ण कर सकती है। मन्त्र शास्त्रज्ञों का कथन है कि वेद मन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान

की थी। तांत्रिक मन्त्रों को भगवान शिव ने शक्तिमान बनाया। इसी तरह कलियुग में शिवावतार श्री शावरनाथ जी ने शावर मन्त्रों को अद्भुत शक्ति प्रदान की है।

मन्त्र का पुरश्चरण करते हुए गुप्त रक्खे। प्रगट करने से उस किये हुये पुरश्चरण का प्रभाव प्रगट कम या नहीं के बराबर रह जाता है। ऐसी गलती होने पर पुनः गुप्त रीति से पुरश्चरण करे। अत्युत्कट प्रभाव होगा। कलियुगी क्षुद्र जीवों के उपकारार्थ श्री शावरनाथ जी ने शावरी मन्त्रों का निर्माण किया है। शावरी मन्त्र अनमिले वे जादू शब्द का एक समूह होता है। जिसके प्रायः कोई अर्थ नहीं होते परन्तु श्री शंकरजी के प्रताप से वह असर से खाली नहीं है। गोस्वामी श्री तुलसीदास जी ने इस विषय में क्या ही अच्छा कहा है।

चौपाई

अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रगट प्रभाव महेश प्रतापू॥

नोट—स्मरण रहे इन मन्त्रों को जैसा लिखा बतलाया हो तथा वैसा ही जपना और बोलना चाहिये। अपनी बुद्धि के घोड़े दौड़ाकर किसी शब्द या अक्षर को न्यूनाधिक्य न करें। ऐसा करने से कार्य सिद्धि असम्भव हो जाता है।

——:o:——

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
प्रथम अध्याय	
चित्रवल्ली	६
सेवड़े का जादू	२५
दूसरा उपाख्यान	२६
द्वितीय अध्याय	
इन्द्रजाल कार्य में प्रवृत्त होने से पूर्व कार्य	३३
क्रिया साधन के समय निर्णय तालिका	४०
मालाओं का निर्णय	४३
तृतीय अध्याय	
सिद्धि का स्थान	५०
चतुर्थ अध्याय	
आकर्षण शक्ति बढ़ाने की रीति	५८
वशीकरण विद्या	८१
पंचम अध्याय	
मन्त्रों के मुख्य भेद	१००
मृतक आत्मा पर प्रभाव	१०४
स्तम्भन	१०८

शुभ कार्य चक्र	१२०
मन्त्र की प्रकृति	१२१
शत्रु विद्वेषण विनाशन यंत्र	१२३
मारण मन्त्र	१२५
साधक प्रयोग	१३४
महा साधक यन्त्र	१३७
कामरू देश का जादू (सिद्धि क्या पदार्थ है)	१४०
सिद्धियाँ प्राप्त करने की क्रिया	१४३
आसनों का लाभ	१४३
सिद्धासन बाँधने की क्रिया	१४४
प्राणायाम करने की विधि	१४८
प्राणायाम के विभाग और उससे लाभ	१४६
दूसरे के मन की बात पहचानना	१५२
अन्तर ध्यान होना	"
शरीर का हल्का करना	१५४
हवा में उड़ना	१५५
तारों का ज्ञान	१५८
आत्मा और उसकी शक्ति	१५६
भूत प्रेतादिक का प्रकोप	"
आत्मा का कोप उतारना	१६०
आकर्षण मन्त्र का प्रभाव	१६१
मैस्मरेजम द्वारा चिकित्सा	१६३

छटवाँ अध्याय

यक्षिणी साधन	१६५
महा यक्षिणी का आगवन	१७२
विशाल यक्षिणी का आगवन	१८३

सातवाँ अध्याय

स्त्री व पुरुष की राशि माला	१९२
विवाह का विचार	१९४
मकान बनाने का विचार	,,
प्रस्थान विचार	,,
दिक शूल ज्ञान	१९५
यात्रा करने का मुहूर्त योगिनी विचार	१९६
पंच दशीयन्त्र पद्धिति प्रारम्भ	१९७
बीज युक्त पञ्च दशो यन्त्रम्	२०२
कुला कुल चक्रम	२०३
ऋणी धनी चक्रम तीसरा	२०४
अकडम चक्रम आतिशी यन्त्र	२०५
खाकी तथा वादी यन्त्र	२०६
आरबी व बीसका मन्त्र	२०७
सोलह कोठे का बीसा मन्त्र	२०८
आठ घर का बीसा	२०९
नव घर का बीसा यन्त्र	,,

नौ कोठा का बीसा यन्त्र २०९
बीसा मन्त्र तथा वात रोग की दवा २१०
शीतला का उपचार २११
बुखार दूर करने का यन्त्र २१२
व्यापार द्वारा धन प्राप्ति का मन्त्र २१३
बगला मुखी मन्त्र २१४
लक्ष्मी जी का यन्त्र २१५
समस्त ऊपरी बाधाओं के दूर करने का यन्त्र २१६
शनि यन्त्र २१७
सदा लाटरी जीतने का यन्त्र २१८
गर्भ रक्षा यन्त्र २२०
सर्प विश नाशक गारूड़ास्त्र यन्त्र २२१
सन्तान होने के उपाय २२२
राशि ज्ञान स्वरूप चक्रम २२३

ज्योतिष विज्ञान आठवाँ अध्याय

बारह राशियों का विवरण २२४
वर्ग जानने का यन्त्र २२७
वर्ग के ३६ मिलानों का कोष्ट २२८

कौतुक बिज्ञान नवाँ अध्याय

रात में दिन के समान देखना २३०
अग्नि के समान रूप दिखाना २३१

कालीदे

पँचमुखा हनुमान پنچ مکھی ہنمان

হনুমান

बाजीगर

धूम्रा देवी

بھیروں جی

वगुला मुखी
दवी

दुर्गा देवी

ॐ
५.
भुवनेश्वरी

کملا دیوی
कमलादेवी

ত্রিপুরভৈরবী

सरस्वती
سرستی

تارا دیوی
तारा देवी

ছিন্নমস্তা

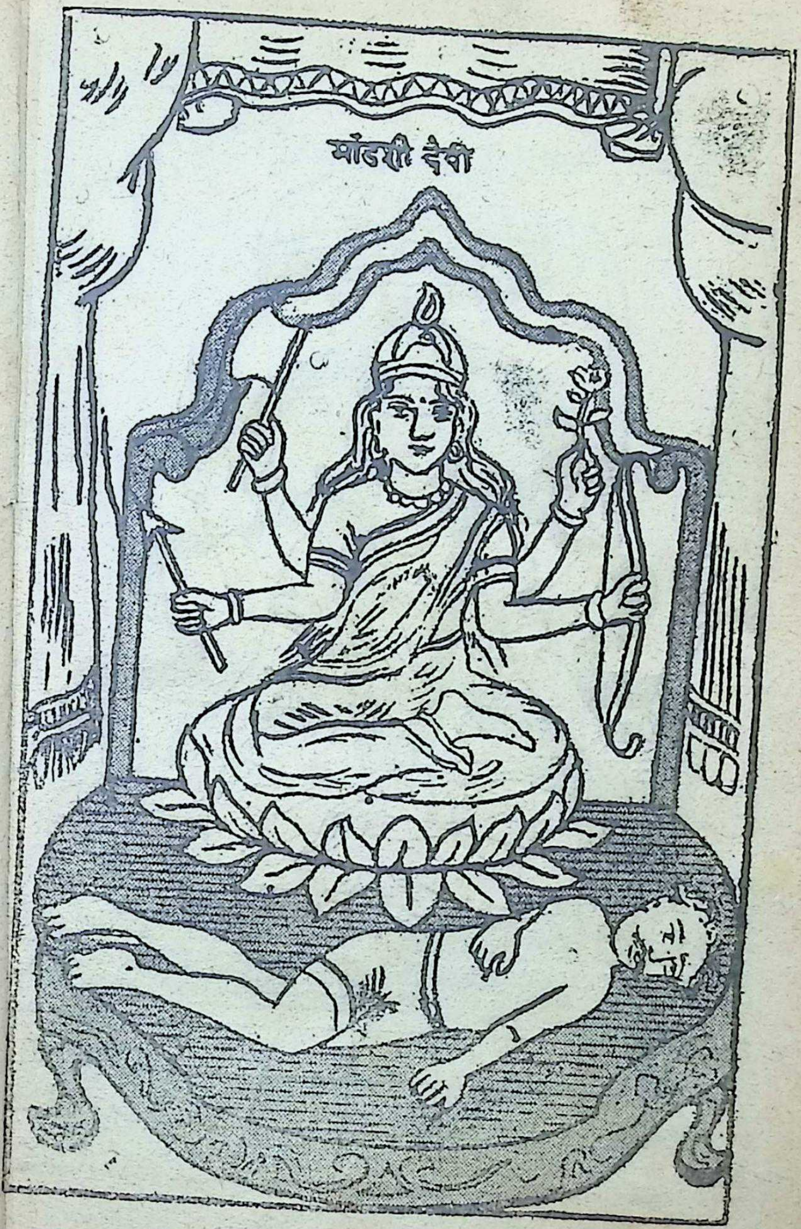
षोडशी देवी

मातंगीदेवी

प्राचीन

(पुराने छापे का)

वृहद् इन्द्रजाल

अर्थात्

सेवरे का जादू

॥ मंगलाचरण ॥

❀ जय ❀

क्रोधाज्ज्वलन्तीं ज्वलनंवमन्तीं
सृष्टिं दहन्तीं दितिजं ग्रसन्तीं ।
भीमं नदन्ती प्रणमामि कृत्यां
रोद्रूयमानां क्षुधयोग्रकालीं ॥

अर्थ—जिन अम्बे का क्रोध युक्त प्रज्वलित स्वरूप जिनके मुखारविंद से प्रदीप्त ज्वाला (अग्नि) का सदैव प्रकाश, जो क्षण मात्र में विश्व को भस्म करने को शक्ति युक्ता, जो दिति पुत्रों को ग्रास (भक्षण) करने वाली—जिनकी गर्जना वाली विकट भयानक, जे क्षुधार्त होते हुए रोदन परायण, ऐसी श्री अंबा उग्रकाली (देवि) को मैं बारम्बार नमस्कार करता हूँ ।

(उपाख्यान)

प्रथम अध्याय

एकदा रावणो तंत्रं प्रष्टुं कैलासमागतः ।
नल नीपु कलं कूजत्खग वृन्दोप शोभितम् ॥ १ ॥
जन्मौषधि तपो मंत्र योग सिद्धैर्नरैतरैः ।
जुष्टंकिन्नर गंर्धवैरसरोभिर्वृतं सदा ॥ २ ॥
नानामणिमयैः शृंगैर्नानाधातुविचित्रतैः ।
नानाद्रुमलतागुल्मंः लीलामृग गणावृतैः ॥ ३ ॥
नानामलप्रस्त्रवणै नाना कन्दर सानुभिः ।
रमणं विरहन्तीनां रमणैः सिद्ध योषिताम् ॥ ४ ॥
मयूर केकाभिरुतं मदान्धालिविमूर्छितम् ।
प्लावितैः रक्तकण्ठानां कूजितैश्चप्रतात्रिणाम् ॥ ५ ॥
आह्वयन्तमिवोद्धस्तै द्विजान् कामदुधैर्द्रुमैः ।
व्रजन्तमिव मातंगैर्गृणन्तमिव निर्झरैः ॥ ६ ॥
मन्दारैः पारिजातैश्च सरलैश्चोपशोभितम् ।
तमालैः शालतालैश्च कोविदारासनार्जुनैः ॥ ७ ॥
तत्रासीनं महादेवं योगिराजं जगद्गुरुम् ।
सनन्दनाद्यैर्महासिद्धैःशान्तैः संशान्तविग्रहम् ॥ ८ ॥
विद्या तपो योगपथमा स्थितं तमधीश्वरम् ।
चरन्तं विश्व सुहृदं वात्सल्यालोक मङ्गलम् ॥ ९ ॥

लिंगंच तापसाभीष्टं भष्म दण्ड जटाजिनम् ।
अंगेन संध्याभ्ररूचा चन्द्र लेखां चविभ्रतम् ॥१० ॥
प्रसाद सुमुखं वीक्ष्य सर्वेषां भद्र काम्यया ।
शशांकशेखरं प्राह प्राञ्जलिश्च दशाननः ॥ ११ ॥

एक समय लंकेश्वर रावण यन्त्र तंत्र शास्त्र को जानने के लिए कैलाश पर्वत पर पहुँचा जिस कैलाश की अनेक प्रकार के कमलों से तथा तड़ागों में बोलते हुए पक्षियों से शोभा हो रही है ॥ १ ॥ जन्म, औषधी, तपस्या, मन्त्र तथा योग से सिद्ध देवता लोग एवं किन्नर और गन्धर्व जिस कैलाश का सेवन करते हैं तथा सदैव अप्सरा जहाँ पर प्राप्त हैं ॥२॥ अनेक प्रकारकी धातुओं से विचित्र अनेक मणिमय शिखर जिसमें हैं तथा अनेक प्रकार के वृक्ष, लता, गुल्म, और अनेक प्रकार से मृगों के गण जिसमें हैं॥३॥अनेक भाँति के निर्मल झरना तथा अनेक प्रकार की कन्दरा जिसमें हैं और पतियोंके साथ विहार करने वाली सिद्धोंकी स्त्रियोंसे जो सुन्दर हो रहा है॥४॥जहाँ मयूरों का शब्दहोरहा हैतथा मदसेअन्ध भ्रमर जिसमें गुंजार कर रहेहैं और कोकिल पक्षियों का शब्द हो रहा है ॥ ५ ॥जिस कैलाश पर कामनाओं को देने वाले वृक्ष ऊँची शाखा रूपी हाथों को उठा कर मानों पक्षियों को बुलाते हैं और हाथियों के चलने से जो चलता हुआ सा जान पड़ता है तथा झरनों के शब्दों से जो बोलता हुआ मालूम

होता है ॥ ६ ॥ एवं मन्दार परिजात तथा देवदारू के वृक्षों से जो शोभित हैं और साँखू ताल तमाल को विदार असैना और अर्जुन के वृक्षों से जो शोभित हैं ॥ ७ ॥ उस कैलाश पर योग शास्त्रके आचार्य एवं विश्वके गुरु शिवजीविराजमान हैं शाँत शरीर वाले जिन शिवजी की सनन्दन आदिक महा सिद्ध उपासना करते हैं ॥ ८॥ जो शिवजी विद्या, तप, और योगमार्गमें स्थितहैं संसार के मित्र हैं और संसार का मङ्गल जप तप स्नेह से करते हैं॥१०॥तथा तपस्वियों के प्रिय वेष धारण किये हुये हैं और भष्म, दण्ड, जटा तथा मृग चर्म धारण किए हैं एवं सन्ध्या समय के लाल रङ्ग वाले मेघ के समान जिनका अङ्ग है चन्द्रमा की कला जिनके मस्तक मेंहै इस प्रकार प्रसन्न मुख महादेवजी को देख संसारके कल्याण हेतु दोनों हाथ जोड़ दशानन ने प्रश्न किया ॥ ११ ॥

हे देव सदा शिव जगत गुरु ! आपके चरणों में मेरा प्रणाम स्वीकार हो तथा जो यन्त्र विद्या क्षण मात्र में सिद्धि प्रदान करने वाली है उस विद्या को मेरे हित के लिए वर्णन करो तब शिवजी ने अनेक प्रकार की इन्द्रजालिका, ताँत्रिक यांत्रिक सिद्धयाँ वर्णन की उनमेंसे मुख्य २ बातें संग्रह करके इस पुस्तक में दी गई हैं।

दूसरा उपाख्यान

इन्द्र सभा में अप्सरा नाचते २ पृथ्वी हर बेहोश होकर गिर पड़ी। तब तो चारों तरफ हलचल पड़ गई। तमाम देवता घबरा गए। और इन्द्र के तो क्रोधका ठिकाना न रहा उसकी सभा की नाचने वाली नर्तकी बेहोश होकर गिर पड़ी इससे इन्द्र का अपमान था। चारों तरफ खोज की गई कि इसका कारण क्या है ? पर कुछ भी मालूम न हो सका। लाचार होकर उन्होंने गुरुदेव बृहस्पति से इस शंका का समाधान करना चाहा।

बृहस्पति जी ने कहा 'राजन्! लंका के रावण ने इस अप्सरा को बेहोश करके तुम्हारा अपमान किया है।'

इन्द्रसभा और इन्द्र देवता स्वयम् ही इस उत्तर से भौचक्के रह गये। इन्होंने हाथ जोड़ कर पूछा "गुरुदेव। रावण तो सभा में है नहीं और न इस अप्सरा के कोई अस्त्र ही लगा है जिससे उसे मूर्छित हो जाना चाहिये"'

गुरुदेव हँस पड़े और बोले 'इन्द्र! अस्त्र बल से अभी तेरी बुद्धि आगे नहीं बढ़ी। अस्त्र बलतो तंत्र मन्त्र बलके आगे तुच्छ है, अस्त्रों का प्रयोग तो केवल सामने से ही किया जा सकता है, परन्तु मन्त्रों का प्रयोग सैकड़ों मील दूर बैठने पर

उसी आसानी से तथा उतने ही अधिक पराक्रम के साथ किया जाता है।

इन्द्र ने हाथ जोड़कर कहा 'महाराज! आपकी इस कथा ने तो मुझे अधिक उत्तेजित कर दिया है। आप मुझे इस विज्ञान के बारे में पूरा हाल बतायें।

इन्द्र की जिज्ञासा देखकर बृहस्पतिजीने तमामबात वर्णन करते हुए कहा—'एक समय दशकन्धरने देवाधिदेव शिवजीकी बहुत बड़ी तपस्या की। भोले शंकर उससे बहुत प्रसन्न हुए, और उन्होंने उसे अपने पास बिठालिया। रावण ने शंकरजी से कुछ नहीं माँगा इससे तो शंकरजी अधिक प्रसन्न हो गये।

एक दिन जब रावण शंकरजीके पैर दाब रहा था और महादेव पार्वती के साथ लेटे थे तो उस समय पार्वती के बहुत कहने पर महादेवजी ने ताँत्रिक विद्याके बारे में बताया कि मनुष्य की साधना से पैदा की हुई शक्ति अस्त्रों की शक्ति से कई गुनी तेज और विशाल होती है। उसकी सिद्धि से कोई भी शक्ति मनुष्यका कुछ नहीं बिगाड़ पाती। मन्त्रों का प्रयोग सैकड़ों मील की दूरी से भी इसी तरह किया जासकता है जिस प्रकार कि शस्त्रों का प्रयोग आमने सामने से।

महादेवजी के मुँहसे यह वर्णन सुनकर तो रावण के

मुँह में पानी आगया और अपने मन में ताँत्रिक विद्या को पूरी तरह सीखने का संकल्प उसने करलिया। रावण के मन की बात महादेवजीको जानते देर न लगी उन्होंने तमाम विद्या उसे सिखाई और कहाकि इस विद्या द्वारा वह संसार के अन्य साध्य कामों को भी पूरा करके यश लूट सकता है। रावण ने उसी विद्या के प्रयोग से आज अप्सरा को मूर्छित किया है।

इन्द्र ने कहा "गुरुदेव ! आप तो मेरे मनकी बात तनिक देर ही में जान लेते हैं। मुझे भी इस विद्या को सीखने की बहुत इच्छा है। मैं भी चाहता हूँ कि आप मुझे जिस तरह हो इस विद्या को सिखाने की चेष्टा करें।

गुरुदेव बृहस्पति बहुत हँसे और फिर बोले "इन्द्र ! तू अभी तक होड़ ही में रहा। खैर यदि तेरी इतनी तीव्र इच्छा है तो मैं तुझे अवश्य ही ताँत्रिक विद्या सिखा दूँगा। तू अपने मनमें स्थिर करले तथा इस बातको अच्छी तरह समझले कि इस विद्या को सीखने के लिये मनुष्य को काम, क्रोध, मद, लोभ, रागद्वेष, ईर्ष्या से दूर रहना पड़ता है। वह मनुष्य इसमें पूर्णतया सफल हो सकता है जो बड़ी ही सादगी से जीवन व्यतीत करता हुआ विद्या को सीखना चाहे। मुझे विद्या सिखाने में कोई ऐतराज नहीं है।

इन्द्र बड़े सोच में पड़ गया मगर फिर हृदय कड़ा कर बोला "महाराज ! मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जैसा आपने कहा है वैसा ही करूँगा। तमाम बातों से दूर रह कर भी मैं इस ताँत्रिक विद्या को अवश्य सीखूँगा। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जो कुछ भी कहेंगे मैं वैसे ही काम करूँगा।

बृहस्पति ने इन्द्र का यह निश्चय देख कहा कि जैसी मैंने जगतगुरु श्री शंकर जी महाराज से यह अनुपम ताँत्रिक विद्या सीखी है वही तुमसे वर्णन करता हूँ। इसके छैः प्रकार के कर्म, शाँति कर्म, वशीकरण स्तम्भन, विद्वेषण उच्चाटन मरण हैं वह प्रयोग नौ तरह के हैं। उनके नाम हैं मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण यक्षिणीसाधन, रसायन क्रिया आदि हैं।

—:❀:—

प्रयोग की विधि

द्वितीय अध्याय

❀ इन्द्रजाल कार्य में प्रवृत्त होने से पूर्व का कार्य ❀

ॐ नमोनारायणाय विश्वंभराय इन्द्रजाल कौतुकानिदर्शये दर्शय सिद्धिं कुरु स्वाहाः ।

अर्थ–उपरोक्त मंत्र का १०८ बार जप करने के पश्चात् इस इन्द्रजाल नामी कार्य को करना चाहिये ! तब तो कार्य सिद्धि की आशा है–अन्यथा नहीं ।

❀ स्वरक्षा मन्त्र ❀

ॐ परंब्रह्म परात्मने मम शरीरं पाहि पाहि कुरु कुरु ।

अर्थ–उपरोक्त मंत्र को १०८ बार जप कर के अपनी मुख की फूँक द्वारा अपने शरीर को आवृत (फूँक से फुँकायमान) करना चाहिये, ऐसा करने से कर्ता को कोई विघ्न नहीं होता है ।

बृहस्पतिजी बोले हे राजन् ! इस विद्या के छः स्तम्भ हैं। इन तमाम स्तम्भों का अलग अलग वर्णन है और कर्म भी अलग अलग हैं ।

षट प्रकार के कर्म

शांति वश्य स्तम्भनानि विद्वेषोच्चाटने तथा।
मारणाँतानिशंसेतिषट् कर्माणि मनीषिण ॥

१–आकर्षण

२–मोहिनी अर्थात् वशीकरण

३–विद्वेषण

४–उच्चाटन

५–मारण

६–साधक

इन छैओं स्तम्भों की साधना विधी तो एक सी है और उनके कर्म भी पूर्ण हैं। पर उनका असर बड़ा ही विचित्र होता है। जैसी भी साधना की जाती है वैसा ही उसका फल होता है। जिस स्तम्भ की साधना की जाय वैसा ही कार्य करना चाहिये।

आकर्षण

इसका महत्व तो केवल आकर्षण करने ही में है। किसी भी जड़ या चेतन को अपनी ओर खींचना हो तो इस स्तम्भ का आश्रय लेना चाहिये। जब कभी स्त्री पुरुष को या अन्य किसी को जैसे राजा किसी अपनी प्रेमिका को वश में करना चाहे, तो इसका प्रयोग करना चाहिये।

मोहनी अर्थात् वशीकरण

वशीकरण के शब्द का जो तात्पर्य है वही उसका कार्य भी है। स्तम्भ द्वारा पूरी तरह वस में किया जाता है। कहा भी है--

वशीकरण के अनुसन्धान द्वारा चेतन ही नहीं जड़ भी वस में होकर त्र के अनुसार कार्य करने लगते हैं। वश में करने का नाम ही वशीकरण है। इसका साधन सहल है तथा अधिक प्रचलित है। साधारण मनुष्यों के भी काम में आने वाली वस्तु है।

विद्वेषण

अधिकतर ऐसा होता है कि कभी कभी अपने विरोध से बहुत से आदमियों में गुट हो जाते हैं ऐसी दशा में ऐसे गुट का मुकाबिला करना एक अकेले आदमी के लिये बहुत मुश्किल हो जाता है। उस समय यह आवश्यक होता है कि जिस तरह हो गुटबन्दी समाप्त की जाय या उसमें फूट डालदी जावे। उसका दूसरा रास्ता यह विद्वेषण ही है। गुट वाले लोगों पर तन्त्रों का प्रयोग करके उनकी मति भ्रष्ट कर दी जाती है। जहाँ पहले वह लोग एक दूसरे के प्रेम और भाई चारेके वश होकर अपने कार्य को पूरा करतेथे वहाँ वह लोग आपस में वैर भाव करने लग जाते हैं। वैर का फल जो निकलता है वह सब लोग अच्छी तरह जानते हैं।

उच्चाटन

ऐसा होता है कि दो आदमियों में आपस में बहुत प्रेम होता है किसी २ को किसी वस्तु से बहुत प्रेम होता है जो कभी कभी हानिकारक होती है। जैसे कभी कोई औरत किसी दूसरे से प्रेम करने लगती है। माँ बाप तथा पति इसे सहन नहीं कर सकते। इसका मतलब यही होता है कि जिस तरह भी हो उस व्यक्ति की प्रीति से उसका मन उच्चाटना चाहिये। उच्चाटन का प्रयोग ऐसे समय किया जाता है। किसी वस्तु की तरफ से किसी का हटा देने को क्रिया का नाम ही उच्चाटन होता है।

मारण

कभी कभी जब सारे प्रयोग असफल हो जाते हैं तो मारने ही से शाँति मिलती है। अस्त्र शस्त्रों से भी अधिक महत्वपूर्ण तथा तीक्ष्ण यदि किसी को मारने का तरीका है तो वह मारण द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। इसको पूर्ण करने के लिये तन्त्रों के संचालन ही की आवश्यकता पड़ती है जिसका प्रबन्ध होते ही शत्रु का शीघ्र ही नाश हो जाता है। घात ताँत्रिक अनेक क्रियाओं द्वारा मारण को सफल किया जाता है।

साधक

यदि सब से शुद्ध तथा मानव धर्मों का प्रतिपालक यदि

कोई तन्त्र है तो वह यही है। इस तन्त्र द्वारा साधना की जाती है। जो कोई इष्टदेव हो उसकी साधना करने से तमाम कामों में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। इष्ट की साधना करने से मन चाही मुराद हासिल होती है। मगर ऐसी दशा में एक बात और है कि साधना किया हुआ इष्ट कभी दूसरे को दुःख नहीं देता। अक्सर लोग सुना करते हैं कि उस आदमी के बस में प्रेत रहते हैं और उसने अपने प्रेतों की मदद से अमुक काम कर डाला, या प्रेतों की सहायता से वह तमाम काम आसनी से कर सकता है।

प्रयोग करते समय इन छः स्तम्भों का पूरा ज्ञान रखना अधिक महत्वपूर्ण है। जब तक इनका ज्ञान पूरी तरह न होगा तब तक तांत्रिक विद्या का श्रीगणेश भी कभी समझ में नहीं आ सकता। इसलिये तमाम कारणों को ज्ञात करने से पहले तंत्र का समझना आवश्यकीय हो जाता है।

विभिन्न प्रकार के तंत्रों की पूर्ती के लिये हमें अपना कार्य जानने की आवश्यकता है। किस कार्य द्वारा हमारा इष्ट सफल होसकता है यह जानना आवश्यकीय है। यही तंत्र है।

इस क्रिया में तमाम कार्य की सफलता तथा साधना केवल तीन वस्तुओं पर ही निर्भर है।

१–मानसिक

२–मौखिक

३–व्याख्यायिक

१—मानसिक

सर्वोत्तम तांत्रिक वह कहलाता है जो अपने जाप या मन्त्र का उच्चारण इस प्रकार करे कि उसका शब्द न हो, वह स्वयम् ही सुन सके और दूसरों को तो इस बात का भान भी न हो सके वह जाप कर भी रहा है कि नहीं, जाप की सफलता तो उस समय तक और उसका महत्व भी उसी समय तक रह पाता है जब तक कि उसका भाव अपने ही तक रह सके।

२—मौखिक

मन्त्र का उच्चारण इस तरह किया जाय कि उच्चारण करने वाला अपने कार्य में ऐसा रत रहे कि उसे यह भी न मालूम हो कि वह क्या कर रहा है। उसे यह भी ध्यान न रहे कि उसके पास बैठे लोग भी मन्त्र की आवाज सुन रहे हैं। मगर उसके जाप करने का लय और स्वर ऐसा विहङ्गम होता है कि उसका मर्म दूसरे लोग चाहे कितना भी ध्यान दें समझ नहीं पाते। मुँह से उसके जो शब्द निकलते हैं वह अस्पष्ट और ऐसी दशा में होते हैं जिनका समझना दूसरे के लिये टेढ़ी खीर ही नहीं वरन बिल्कुल असम्भव होता है।

३—व्याख्यायिक

इस तरह से मन्त्रों का जो तांत्रिक प्रयोग करते हैं

उनका कार्य मुश्किल ही से सिद्धी को प्राप्त कर पाता है। पहला कारण तो यह है कि जो कुछ भी मन्त्र उनके मुख से निकलते हैं वह पूर्ण रूप से स्पष्ट होते हैं। उनका उच्चारण इतना साफ होता है कि जो कुछ भी वह कहना चाहते हैं वह केवल वैसा ही निकलता है। वह लाख चाहें कि वह अपनी वास्तविकता को छिपा जाँय, पर वह असम्भव हो जाता है। कारण उनकी व्याख्या होती जाती है। यदि अभाग्यवश कोई दूसरा ताँत्रिक भी वहीं उपस्थित हुआ तो फिर लेने के देने ही पड़ जाते हैं। वह व्याख्या हुए मन्त्रों को काट करता जाता है। इस प्रकार ताँत्रिक के कार्य में रुकावटें ही नहीं बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ पड़ जाती हैं। इस लिये जहाँ तक हो सके इस तरह से मन्त्रों का पाठ कदापि नहीं करना चाहिये अन्यथा बजाय लाभ के हानि अधिक होगी।

१-षट कर्मों के करने का समय।

षट कर्मों की ऋतु न नक्षत्र अट्ठाईस होते हैं।

-(❀)-

षट कर्मों के समय का विचार

❀ चन्द्र निवास ❀

चन्द्र निवास मेष, सिंह, धन राशि वालों के लिये पूर्व

में चन्द्रमा का वास रहता है, मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में वास रहता है मकर, वृष व कन्या के वास्ते दक्षिण में और कर्क, मीन वृश्चक का उत्तर में निवास होता है।

हर किसी मन्त्र की सिद्धी बहुत ही टेढ़ी खीर है। एक बार सिद्धी प्राप्त कर लेने के बाद तो चाहे जब उसका उपयोग किया जा सकता है। मगर एक बार उसकी सिद्धी प्राप्तनकर लेना ही तो बड़ी कठिन समस्या है। मन्त्रकी सिद्धी समय के ऊपर भी निर्भर होती है। समय का निर्णय निम्नाँतिक तालिका से किया जाना चाहिये। बस तालिका का पूर्ण बिवरण देवाधि देव महादेव ने स्वयं ही रावण को पूर्ण रूप से समझाया था। उसी तालिका को नीचे ज्यों का त्यों ही दिया जा रहा है।

क्रिया साधन के समय निर्णय तालिका

समय तालिका में से जिस किसी संख्या पर भी उँगली पड़े उसका समय नीचे लिखे प्रकार जानना चाहिये।

१–रात्रि का प्रथम प्रहर। ठीक साढ़े बारह बजे रातको

२–दिन के दो बजे दोपहरी के समय।

३–प्रातः चार बजे से पाँच बजे तक के बीच।

४–तीसरे पहर शाम को चार और पाँच के बीच।

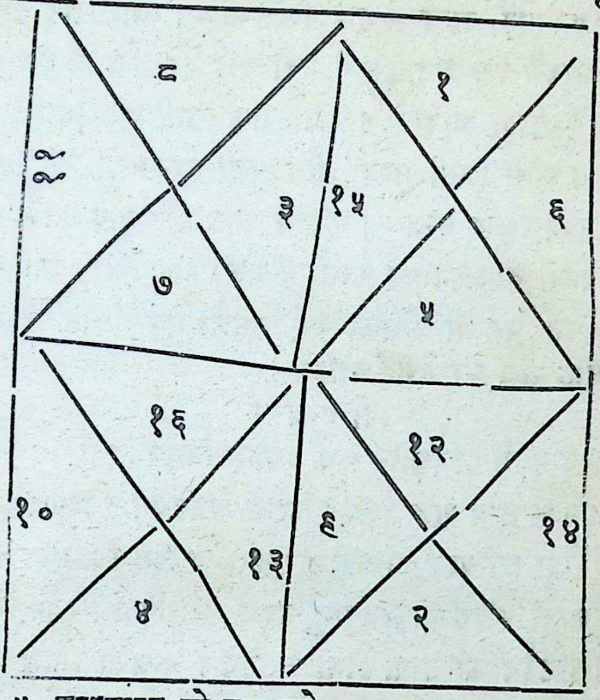

५—मध्यान्ह को एक बजे

६—ठीक बारह बजे दिन के समय।

७—प्रातः सात से नौ बजे के बीच।

८—व ६—रात के ८ बजे से दस बजे तक।

१०—दिन में प्रातः के आठ बजे के लगभग।

११—रात के ७ बजे जब चिराग बत्ती का समय हो।

१२ व १३-संध्या को गौधूलि के समय। पाँच से छः तक

१४—रात के तीन बजे यदि चाँदनी रात हो तो साढ़े तीन बजे।

१५–साढ़े बारह से ढाई तकके बीच। मगर साढे बारह से पहले किसी हालत में नहीं चाहे देर भले ही होजाये।

१६–प्रातः आठ से दस बजे तक किसी भी समय।

जब कभी किसी मन्त्र की सिद्धी करनी हो तो उसी समय नीचे लिखे मन्त्र का एकसौ आठ बार जाप करके इस ऊपर वाली तालिका पर कन्नी उँगली रख देनी चाहिये। जिस स्थान पर भी उँगली पड़े उसका समय निर्णयकरके मन्त्र पाठ शुरू कर देना चाहिये।

॥ मन्त्र ॥

सर्वानि निश्चानि सर्व देवायः निरूपंति ॥

इसका जाप शुद्ध हृदयसे करना चाहिये। तथाजाप करते समय सदा इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि मन बिलकुल विकार रहित हो। ध्यान केवल परमपिता परमेश्वरतथा अपने इष्टदेव की तरफ होना चाहिये। मन्त्रकी सिद्धि बहुत काफी मात्रा में मनुष्य के हृदय पर निर्भर करती है।

इस प्रकार समय का निर्णय कर लेने के बाद मन में संकल्प कर लेना चाहिये कि इस समयमें कार्य प्रारम्भ करना है। जिस स्तम्भ पर भी काम करना हो उसी की साधना का उपाय करना चाहिये। सिद्धी मन्त्रों द्वारा तथा अनेकप्रकारकी तांत्रिक क्रियाओं द्वारा होती है। तांत्रिक क्रियाओं की तो विधी होती है और मन्त्रों का उच्चारण होता है। तन्त्रों की गणना अवश्य करनी चाहिये। गणना केवल मालाओं द्वारा

ही हो सकती है। मालायें भी भिन्न प्रकार की होती हैं। इस विद्या में हर तरह की माला का उपयोग नहीं किया जा सकता विशेष तरह की माला एक विशेष प्रयोग के ही काम में लाई जा सकती है।

--:०:--

❀ मालाओं का निर्णय ❀

मालाओं का निर्णय एक हद तक स्तम्भों पर ही रहता है। जिस प्रकार की सिद्धि की कामना की जाती है उसी से मेल खाने वाली माला का भी प्रयोग करना जरूरी हो जाता है। माला का चयन करने के लिये नीचे लिखी हुई बातों को जानना आवश्यक है।

तुलसी की माला

यह माला बहुत शुद्ध होती है। इस माला पर शुद्ध मंत्रों का ही उच्चारण करना चाहिये। केवल साधक स्तम्भन का प्रयोग ही इस पर करना चाहिये। जो भी मन्त्र बोले जाँय उन का उच्चारण स्पष्ट होना चाहिये। और उनके लिए भावना भी शुद्ध होनी चाहिये।

मूँगे की माला

लाल रङ्ग के दानों को मूँगा कहा जाता है। यह एक प्रकार के स्तर द्रव्य से तैयार की जाती है। इसको शुद्ध नहीं माना गया है। इसका उपयोग मारण की सिद्धि करते समय किया जाना चाहिये। मूँगे की माला को पहले लोहवान की

धूनी दे देनी चाहिये। धूपकी धूनीकभी भूलकर भी न दीजाय। लोहबान की महक से मारण प्रेतआत्मायें प्रसन्न होती हैं और कहा जाता कि मूँगे को माला में छयासी दाने होने चाहिये।

रुद्राक्ष की माला

रुद्राक्ष एक किस्म का जङ्गली फल होता है। जो ऊँचे पहाड़ी स्थानों में पाया जाता है। इसको वैदिक रीति से बहुत पवित्र माना गया और इसके गुणों की व्याख्या कई तरह से की गयी है। कहा जाता है कि असली रुद्राक्ष पर जाप करने से जीवन की तमाम इच्छाओं की पूर्ति बड़ी ही उत्तम रीति से होती है। नैपाल की ओर रुद्राक्ष अधिक मिलता है। वशीकरण और आकर्षण की साधना के लिये रुद्राक्ष की माला होनी चाहिये। रुद्राक्ष की माला में एक सौ आठ दाने होने चाहिये। मन्त्र का जाप करते समय ध्यान रखना चाहिये कि माला का कोई भी अङ्ग पैर से न छू जाये। पैर के पास तक आने से भी सिद्धी में गहरी कमी हो सकती है। और उसका फल बहुत अंश तक उलटा हो जाने की सम्भावना होती है। रुद्राक्ष की माला को पहले शुद्ध जल से धोना चाहिये, फिर कपड़े से पोंछ कर उनके दानों पर सिंदूर का हाथ फेरना चाहिये। और धूप इत्यादि देकर उसकी शुद्धि करना लाभदायक है। इसकी माला का प्रयोग रक्त चाप की बीमारी में भी लाभदायक सिद्ध हुआ है।

——:०:——

भेषज की माला

एक प्रकार का काला फल जिसका आकार गोल बेर की तरह होता है। उसकी भी माला बनाई जाती है। इस माला का प्रयोग अधिकतर विद्वेषण की सिद्धी करते समय करना चाहिये। द्वेष डालने के लिये इष्ट की साधना करनी पड़ती है वह इष्ट काली आकृति वाले पदार्थों से बहुत प्रसन्न होता है। इस माला में गिनकर ३६ दाने डलवाने चाहिये। इसके दानों को काले डोरे में ही पिरोना चाहिये क्योंकि काले दाने यदि किसी और तरह के डोरे या तार से पुराये जाँयगे तो उनका कार्य एक हद तक समाप्त सा हो जायेगा। माला में हर चीज का ध्यान रखना चाहिये। क्योंकि सिद्धी के लिए मालायें विशेष रूप से तैयार करायी जाती हैं। इस काम में आने वाली मालायें बाहर से नहीं मिल पातीं। मालायें बनवाते समय इन तमाम बातोंका ध्यान रखना बहुत जरूरी है। तंत्र मन्त्रों में जरा सी बातें भी बहुत काफी महत्वकी होती हैं। अन्य कई तरक की मालाओं का उपयोग भी किया जा सकता है। जैसे शंख कौड़ी इत्यादि की बनी हुई मालायें जा मिल सकें।

स्थावर माला

कठिन प्रयोग के करने के लिए जैसे मारण सिद्धी के लिए हड्डियों की माला बनाई जाती है। इस माला का बनना बहुत कठिन है और बहुत ही बड़े तान्त्रिक ही इसे

बना पाते हैं। माला बनाने के लिए उस तेली के गुर्दे के पास वाली हड्डियाँ चाहिये जो पंचकों में शनिवार के दिन मरा हो। उसकी हड्डियाँ नीचे लिखे मन्त्र से एक लाख पच्चीस हजार बार फूँकी जाती हैं।

'ॐ बृह्माण कालैयः नमैः दत्ताव्यः'

इस मन्त्र का पाठ करके उन हड्डियों को गङ्गाजल में धोया जाता है और गङ्गाजल न मिले तो किसी नदी का जल भी काम में लाया जा सकता है। नदी के जल से धोने के बाद उन्हें गुगल की इक्कीस बार आहुति देनी होती है। आहुति देने के बाद इन हड्डियों को गोल गोल काट कर दाने बना कर ताँबे के तार में पिरोने चाहिये। इस बात का विशेष ध्यान रक्खा जाय कि माला में केवल तेरह ही दानेहों न तो एक भी ज्यादा होने पाये और न कम ही। ताँत्रिक विद्या में जरा सी बात का भी ध्यान रखना बहुत आवश्यक है।

जप की शिक्षाओं के नियम

जपेत्पूर्व मुखं वश्ये दक्षिणं चाभिचारके।
पश्चिम धनदं विद्यादुत्तरं शान्तिक भवेत ॥
आयुष्यरक्षां शांति व पुष्टि यापि करिष्यात्।

अर्थ—वशीकरण प्रेम योग में पूर्व मुख कर मारण आदि अभिचार काम में दक्षिण मुख बैठ कर, धन के लाभ निमित्त पश्चिम मुख होकर, शांति कर्म में उत्तर मुख बैठ कर

मंत्र जपे। आयु रक्षा शान्ति कर्म व पुष्टि कर्म भी उत्तर मुख होकर मन्त्र आदि का जाप करे।

जप करने में अंगुलियों का प्रयोग

शाँति कर्म और स्तम्भन तथा वशीकरण में अँगूठे और बीच की अँगुली से माला को फेरे। आकर्षण मेंअँगूठे और अनामिका से, विद्वेषण तथा उच्चाटन अँगूठा और तर्जनीसे और मारणमें कनिष्ठाअँगुली औरअँगूठासे मालाकेदाने फेरे।

मन्त्र लक्षण

यं श्रूयन्तेयः सातु वाचिक—

स्यादुपाँशुसंज्ञो निजदेह वंद्य।

निष्कम्प दन्तौष्ठ मथाक्षरामं यच्चिन्तसमरथादिक सान साँख्य ॥ पराभिचारे किल वाचिक स्यादुपांशुरूक्तोऽप्यत शान्ति पुष्टयो। मोक्षगेषु जप किल मान सांख्य त्रिया जपसापनूदेतथोक्त।

अर्थ—जिस मन्त्र को जप करते समय दूसरा सुन लेवे उसको वाचिक मन्त्र कहते हैं। अपने आपको सुन पड़े उसको उपांशु तथा होठ और जीव चलायमान न होवें केवल मनसे ध्यान पूर्वक जप करे उसको मानसिक मन्त्र कहते हैं। मानसिक अक्षर का ध्यान रक्खा जाता है अभिचार (मारक) आदि प्रयोग में वाचिक जप सिद्धप्रद कहा है। और शान्ति व पुष्ट कर्ममें उपांशु जप श्रेष्ठ कहा है तथा मोक्षसाधनकर्म

में मानसिक जप श्रेष्ठ कहा है। यह तीन प्रकार का पाप नाशक जप सर्वत्र वर्णन किया गया है।

होम करने के द्रव्य

अब यहाँ से उस सामिग्री का अलग अलग वर्णन करते हैं जो अपना २ अभीष्ट कार्य साधने के लिये हवन की जाती हैं।

शान्ति कर्म में दूध घी तिल और गूलर पीपल की लकड़ी का हवन करे। अमरबेल और खीर का हवन करे, पुष्टि कर्म में घी और बेलि पत्र का अथवा चमेली के फूलों का हवन करे, कन्या की इच्छा करने वाला खीर का हवन करे, लक्ष्मी की इच्छा करने वाला कमल गट्ठा अथवा घृतमिश्रित अन्न का हवन करे। समृद्धि के लिएबिल्व फल और तिल का हवन करे, आकर्षण करने को चिरोंजी और विश्व फल का हवन करे। वशीकरणमें राई और लवण का हवन करे। उच्चाटन में कौए के पंख का, मोहन में धतूरे का हवन करे।

हवन करने की और भी अनेक विधि हैं। परन्तु वे मन्त्रों के साथ साथ आयेंगी।

होम मुद्रा

मुद्राहीन आहुति को देवता अङ्गीकार नहीं किया करते हैं, इसलिए मुद्रा युक्त ही करना उचित है।

जो दुर्बुद्धि अज्ञान से मुद्राहीन होम करते हैं वह

स्वयं भ्रष्ट हो जाते हैं। होम में मुद्रा तीन प्रकार की होती हैं। यथा १–शूकेरी, २–हँसी, ३–मृगी। जो हाथको सकोड़ कर आहुति डाली जाती है उसे अँगूठा कनिष्ठा और तर्जनी के योग से डाली जाती है उसे मृगी मुद्रा कहते हैं।

मन्त्र सिद्धि से पूर्व कर्म

जो मनुष्य नित्य प्रति इन मंत्रों को लिखा करता है उसके घर में मृत्यु भय चोर भूत प्रेत पिशाचादि कदापिप्रवेश नहीं कर सकते हैं। उन मंत्रों में भी कभी अविश्वास न करे क्योंकि अविश्वास करने से उसका फल विपरीत होता है। प्रथम स्नानादि आरम्भिक कर्मों से निवृत होकर एकान्त स्थान में मन्त्रों को लिखे और एक दिन विधि पुर्वक पूजा करता रहे, तीन रात तक पृथ्वी में शयन कर ब्रह्मचर्य से रहे, तीसरे दिन मन्त्र का अधिष्ठाता देवता स्वप्न में कह जायगा कि मन्त्र सिद्धि साध्य अथवा दुस्साध्य है। यदि स्वप्न न होवे तो समझलो कि असाध्य। इस प्रकार तन्त्र मन्त्रों की रीति सोचकर करने से ये तत्काल यथावत फल देने लगते हैं।

—(०)—

—सिद्धि का स्थान—

तृतीय अध्याय

—०—०—

बृहस्पति जी बोले 'हे राजन ! ताँत्रिक विद्या तो मंत्र के बलबूते पर कार्य करने वाली अभूत शक्ति शालिनी है। इसकी सिद्धीके लिए उपयुक्त स्थान की आवश्यकता अधिक पड़ती है। वैसे तो छः ही स्तम्भ हैं मगर उनकी सिद्धिकरते समय स्तम्भों के व उपस्तम्भों का जान लेना भी आवश्यक होता है। इन स्तम्भों के निम्न प्रकार के उप स्तम्भ हैं—

१—आकर्षण के मुख्य उपस्तम्भ निम्न हैं-

(अ) कैयाद—इसका आशय यह है कि एक वस्तु को देखने के बाद ही मन में यह इच्छा प्रबल हो जाती है किसी न किसी तरह उस वस्तु को अपने वस में कर लेना चाहिये। जब तक वह वस्तु बस में नहीं आ जाती मनुष्य का चैन सुख एक दम वर्बाद हो जाता है इसकीसिद्धि करने के लिये कीकर का पेड़ होना चाहिए। मगर साथ ही यह भी ध्यान रहे कि इस कीकर के पेड़ के चालीस २ गज तक की दूरी पर आम, पीपल और इमली का पेड़ न हो। यदि इनमें से कोई पेड़ पास हुआ तो फल उल्टा हो सक्ता है और कभी २ ताँत्रिक की मृत्यु तक भी हो जाती है।

(ब) विकाशक—किसी वस्तु का विवरण सुनकर मनमें पाने की इच्छा होती है। और जैसे ही एक बार उसे देख लेते हैं तो उसे पाने की इच्छा अधिक प्रबल हो जाती है। जैसे किसी के रूप और गुणों की प्रशंसा सुन कर मन में एक तरह का भाव पैदा हो जाता है और फिर यदि एकबार देख लिया और कहीं नयनों में बस भी गई तो फिर हृदय ही हाथ से खो जाता है। इसकी सिद्धी के लिये गूलर का पेड़ होना चाहिये। ऐसे स्थान में जहाँ गूलर का पेड़ न हो वहाँ पीपल या बरगद के पेड़ से भी काम निकाला जा सक्ता है। पीपल गूलर और बरगद के पेड़ों को बहुत ही पवित्र माना गया है। हिंदू धर्म के अनुसार इन पेड़ों का बहुत महत्व है और महानता भी बहुत है।

(स) निष्कर्षकात्मज—किसी के बारे में सुना भी न जाय और किसीके द्वारा बताया भी न जाये। केवल स्वप्नही में या किस तौर आत्मिकबल द्वारा ही प्राप्त होजाये ऐसा कई बार हो चुका है। ऊषा ने अनिरुद्ध को केवल स्वप्न में ही देखा था। इसी प्रकार कभी यदि किसी वस्तु का भास होता है तो उसकी साधना की जाती है। इस साधना के लिये सर्वोत्तम स्थान गङ्गा तट और गङ्गातटयदिन हो तो किसीभी नदी का किनारा हो सकताहै। नदी का किनारा यदि पास न हो तो कुए के पास तालाब के पास ऐसी भी जगह किया जा

सकता है जिस स्थान का पानी साफ हो वातावरण किसी प्रकार भी दूषित न हो। बरगद के पेड़ के नीचे साधना करनी चाहिये। तांत्रिक विद्या किसी भी दशा में केवल बरगद के वृत्त को छोड़कर किसी अन्य वृत्त के नीचे करने पर ध्यान नहीं देती।

मोहनी–(अर्थात् वशीकरण) इसके नीचे लिखे मुख्य स्तम्भ हैं और उन उप स्तम्भों की साधना के लिये स्थानों का चयन स्तम्भ करते समय इनका ध्यान रखना जरूरी है:—

(अ) निम्बाज–जिस स्त्री का तनिक सा भी मन किसी पुरुष की ओर लालायित हो गया हो। यदि एक बार तनिक सी भी आँख लग जाये तो इसकी साधना आवश्यक है इसकी साधना घर में जहाँ नितान्त एकान्त हो या घर से बाहर किसी भी स्थान पर जहाँ कि हरा भरा जंगल हो या मन्दिर या अन्य कोई पवित्र स्थान हो वहाँ इसकी साधना की जा सकती है।

(ब)संक्रात्मन्:–किसी युवती पर निगाह पड़ी हो या किसी युवक को बस में करना हो। इसकी साधना केवल प्रेमी युगलों के लिये ही लाभ दायक हो सकती है। प्रेमी जोड़े के ही काम में यह साधना आ सकती है। इसके लिये आवश्यकता होती है किसी एकांत स्थान में जहाँ सूरज की किरणें भी न जा सकें वहाँ पानी का एक कोरा घड़ा रखा

जाय उसके ऊपर घी का एक दीपक रखा जाय जो चौबीस घंटे जलता रहे। दीपक को इक्कीस दिन तक जलाना चाहिये फिर उस स्थान पर फूल बिछाकर मृगचर्म के आसन पर बैठ कर पश्चिम दिशा की तरफ मुँह करके पाठ करना चाहिये। इसकी साधना जितनी सरल है उतनी वह कड़ी भी है।

(स) आरोदः—वशीकरण के तीसरे उप-स्तम्भ के विषय में यही बताना अति आवश्यक है कि जिस वस्तु की कामना की जाय उसके लिये तनिक सा सोचने की बात भी खड़ी नहीं कि वह वस्तु स्वतः ! ही आकर मिल जाए। ऐसे कारण भी होते हैं कि जिसका प्रभाव आदमी की मानसिक शक्ति पर ऐसा प्रबल पड़ताहै कि वस्तु स्वःतही आकर मिल जाती है। इसके लिये यह आवश्यक है कि स्थान शुद्ध तथा एकान्त हो गो मूत्र तथा गोबर से लीपा जाय पास ही तुलसी का पेड़ हो जिसके पास घी का चिराग जला कर जाप करना चाहिये।

(क) विषमः—इस स्तम्भ के अन्तर्गत यही विचार करना आवश्यक है कि स्थान की नियुक्ति परिस्थितियों के देखते हुए करनी चाहिए। तीन तरह के मन्त्रों के द्वारा इस की साधना होती है। और इसीलिए तीनों मन्त्रों के लिए उपयुक्त, स्थानों की आवश्यकता होना अनिवार्य है जिस समय जैसी परिस्थिति हो उसी समय वैसी ही साधना का कार्यक्रम तथा स्थान का चुनाव करना चाहिये।

इस स्तम्भ के अन्तंगत तीन देवताओं की साधना होती है। महाकाली महाभैरव तथा महाशिव। महाकाली द्वारा साधना सिद्धि के लिए स्थान अँधेरा तथा एकान्त हो। महा भैरव की पूजा केवल उस स्थान में हो सकती है जिसका दरवाजा दक्षिण की ओर हो। दक्षिण की ओर होने वाली इमारत में महा भैरव की पूजा बहुत ही सफल तथा फलदायक होती है। महाशिव की साधना के लिये स्थान बहुत शुद्ध होना चाहिए। अन्धकार न हो अच्छा है।

(३) विद्वेषण:—इसका केवल एक ही अङ्ग है। इसके उपस्तम्भ नहीं है इसका यही तात्पर्य है कि जब भी किन्हीं दो आदमियों में मतभेद कराने का विचार हो तो सिद्धि कर लेनी चाहिए और इसका प्रयोग कर लेना चाहिए इसके इतने गहरे असर होंगे कि चाहें जैसे भी मीठे से मीठे दोस्त और इष्ट मित्र क्यों न हो उनमें द्वेष की भावना अवश्य पैदा हो जायगी।

इसकी सिद्धि करना और साँप का खिलाना एक बराबर है इसका भाव यह है कि वह दो जीव मात्र के हृदय अलग करदें।

विद्वेषण के लिये कुए की जगह का स्थान सबसे उत्तम माना गया है। यदि अन्धा कुआ मिल सके तो फिर उसके प्रभाव का तो कहना ही कुछ नहीं।

यदि कुआ न प्राप्त हो सके या उसके पास बैठकर सुविधा प्राप्त न हों तो बेरी या बबूल के पेड़ के नीचे पूजा का स्थान

बनाना चाहिये । ऐसी व्यवस्था जब तक नहीं की जायगी तब तक मनोकामना सफल होना मुश्किल है ।

(४) उच्चाटन—किसी वस्तु पर से किसी भी स्त्री या पुरुष का हृदय हटाने की क्रिया का नाम उच्चाटन है। ऐसा अकसर होता है कि कोई पुरुष किसी स्त्री को चाहने लगता है और इस बात की खबर स्त्री तक को नहीं होती और जब हो जाती है तो वह भी अपने प्रेमी के लिए जीवन तक में आग लगा देने की भावना धारण करके उस चाहना को हृदय के विशाल कक्ष में छिपाये रहती है। दोनों एक दूसरे से हद दर्जे का प्रेम करने लगते हैं और फिर उन्हें दुनियाँ की, रिश्तेदारों की तथा अन्य किसी की लोक लाज की कोई चिन्ता नहीं रहती । ऐसे प्रेमियों के हृदयों को विमुख करने की रीति को उच्चाटन कहते हैं यह दो प्रकार के होते हैं ।

(अ) बिदार्क—इस प्रकार के उच्चाटन में केवल वही लोग एक दूसरे से अलग किये जा सकते हैं जिनके हृदयों में कलुषित प्रेम की भावना होती है ।

श्मशान पर पीपल के कुए से रोज रात के बारह बजे पानी भरना चाहिये और दिन के बारह बजे उसको फैंक देना चाहिए सातवें दिन बारह बजे जाकर पानी फेकने के समय घड़ा उठा लाना चाहिये और उसी पानी को कमरे में छिड़कना चाहिए। यह पानी प्रेतादि का पानी होगया। क्योंकि श्मशानमें पीपल के पेड़ पर ही प्रेतोंका निवास स्थान रहताहै।

(ब) विद्वेषः—मुकद्दमा, घर गृहस्थी या अन्य किसी वजह से यदि कोई आदमी दो आदमियोंके दिलोंमें फर्क डाल कर अपना काम निकालना चाहेतो वह इस रीतिका पालनकरे

सिद्धि के मुख्य उपायों का वर्णन करते हुए बृहस्पतिजी ने कहा कि हे राजन्! उच्चाटन की सिद्धि और परम पिता की साधना एक ही श्रेणी की है। साधना करते समय तन मन से एक ही शक्ति की ओर ध्यान लगा रहता है और उसी प्रकार सिद्धि करते समय भी एक ही तरफ ध्यान लगा रहना ही चाहिए। जिसका मन डोलायमान हो जाता है उससे इस तरह की सिद्धि करना मुश्किल हो जाता है सिद्धि के लिये मन को वश में रखना सर्वोत्तम कार्य हैं।

मनको वस में रखने तथा अपने वश में रखने का एक उपाय है। सर्व प्रथम एक अँधेरा कमरा चुनिये और फिर वहाँ एक स्थान काली जी के लिये बनावें उस स्थान को सफाई से धो लें और घी में मिलाकर सिंदूर वगैरह पोत लें काठ की एक चौकी भी रखें और उस काठ की चौकी पर एक कम बत्ती वाला दिया जला कर रखें। नित्य दो घन्टे उस दिये की लौ से अपनी आँख मिलाता रहें और मन को भी तमाम ओर से खींचकर उधर ही लगादें। धीरे धीरे इस प्रयोग से जब आँखों में इतनी शक्ति आजाय कि केवल एक बार ही निगाह भर कर देखने से ही दीपक बुझ जाय तो उस

समय अपने को इस योग्य समझें कि वह अपना कार्य पूरा कर सकेंगे।

५—मारण:—शत्रु नाश के लिए मारण तन्त्र का सहारा लिया जाताहैअस्त्र शस्त्रोंका प्रयोग करके यदि किसीके प्राण लिये जाय तो सामाजिक बंधन तथा राष्ट्रीय कानून के द्वारा सजादी जाती है। इसे सुलभ बनाने का केवल यही उपाय है तंत्र तथा मन्त्रों की सहायता द्वारा वैरी का नाश कर दिया जाय। किसी भी वस्तु का होता हुआ प्रयोग दिखायी नहीं देगा और वैसे संसार से कूच भी कर जायगा। इसके कई तरीके हैं।

मारण के सरंक्षक शिवजी हैं मगर आसमयिक मृत्यु का आदान प्रदान उन्होंने महाकाली या बज्र काली को सौंप दिया है। बज्रकाली की सिद्धि केवल दो स्थानों ही में की जा सकती है। पहला तो श्मशान और दूसरा कबिरस्तान जहाँ मुर्दे गाड़े जा सकते हैं या गाड़े जाते हैं। श्मशान में बैठकर सिद्धि की जाती है उसे घटांकन और दूसरे को महात् कहते हैं।

६—साधक:—अच्छी भावना लेकर अच्छे कार्यों की सिद्धि के लिए इस सिद्धि की आवश्यकता पड़ती है। एक इष्ट देव होता है उसको साधना की जाती है जो साधक के तमाम कार्य पूरे करता है या उस पर किसी तरह की कोई जरूरत आ जाती है तो वश में किया हुआ देवता उसके तमाम काम बनाता है। सारे काम पलक मारते ही हो जाते हैं।

—:❀:—

आकर्षण खण्ड

—(❀)—

चतुर्थ अध्याय

देवताओं के गुरु बृहस्पतिजी ने कहा "हे राजा इन्द्र! अब मैं आकर्षण से सिद्धि होने वाले तंत्रों का वर्णन विस्तार रूप से कहता हूँ। इनको सिद्धि करने से मन चाही मुराद मिलती है।" पहले इसकी विधि का वर्णन किया जाता है।

आकर्षण शक्ति बढ़ाने की रीति

नेत्रों की आकर्षण शक्ति बढ़ाने की रीति (१)

आदित्य वारके दिन किसी सफेद कागज के टुकड़े परएक चवन्नीके बराबर गोल निशान लगा उसको दीवार पर चिपका दो। जिस दीवार पर निशान चिपकाया जाय उसके चारों ओर दस २ कदम के फासले पर किसी मनुष्य को न आने दिया जाय। जिस समय बिलकुल सुनसान हो जाय अर्थात् कानों में किसी ओर से किसी प्रकार की आहट न आवे उस निशान को टकटकी लगाकर देखो आँखों के पलक नीचे न गिरने पावें इस अभ्यास को थोड़ी २ देर ठहर २ कर बढ़ाया जाय अर्थात् जब आँखों में पानी भर आवे तब पलक नीचे

डाल दे और थोड़ी देर बाद जब आँखें विश्राम ले लें तब फिर देखना शुरू करना चाहिए। तात्पर्य यह है कि पहली बार यदि एक पल तलक पलक नहीं मारे हैं तो दूसरी बार सवा पल तलक नहीं मारो। इसी प्रकार थोड़ा २ समय बढ़ा कर अभ्यास बढ़ाते जाओ।

ज्यों २ पलक न मारने का अभ्यास बढ़ता जायेगा त्यों २ काले निशान में विचित्रता आती जायेगी अर्थात् पहले पहल उसके अलग २ टुकड़े दिखाई देंगे और फिर उस पर सफेद रङ्ग की छोटी २ बूँदें दिखाई देंगी, और धीरे २ यही सब बूँदें बढ़कर एक सफेद निशान में बदल जावेंगी। फिर चमक पैदा होगी और चमक धीरे धीरे सूर्य की चमक से सौगुनी बढ़ के चमकदार होगी और तब उसमें काले रङ्ग का एक धब्बा हो जायेगा और उस धब्बे में एक दिव्य मूर्ति दिखाई देगी और धीरे २ यह तस्वीर सफेद और स्पष्ट होती जायेगी। जब यह मूर्ति बिलकुल स्पष्ट हो जाये तो समझना चाहिये कि अभ्यास पूरा हो गया अर्थात् फिर अभ्यास करने की आवश्यकता नहीं है।

इसी प्रकार का अभ्यास सरसों के काले दानों पर भी किया जाता है। जिस प्रकार काले धब्बे पर दृष्टि जमा कर देखने की क्रिया का वर्णन है उसी प्रकार सरसों के दानों पर भी दृष्टि जमा कर अभ्यास किया जाता है।

दर्पण पर अभ्यास करना

किसी एकांत निर्जन कमरे में जहाँ किसी प्रकार का शब्द कानों में सुनाई न दे वहाँ पर इसका अभ्यास किया जाता है। ऐसे कमरे में पहले से ही सुगन्ध बसा देनी चाहिये और उपर की ओर एक दर्पण लटका देना चाहिये। अभ्यासी कमरे के दरवाजों को बन्द करके दर्पण के सामने खड़ा होकर अपने प्रतिबिम्ब की छाया में आँखों की पुतलियों की दृष्टि जमा कर बिना पलक लगाये देखने का अभ्यास करे। कुछ ही दिनों बाद उसको वही विचित्र घटनाएँ दिखाई देंगी जो कि काले निशान पर अभ्यास करने में दिखाई दे रही थी। जब छाया की पुतलियाँ सफेद रङ्ग की चमक दार दीखने लगें तब अभ्यास करना बन्द करदें।

चन्द्रमा पर अभ्यास करना

चन्द्रमा पर अभ्यास चन्द्रमा के निकलने पर किया जाता है। चन्द्र शीतल है और वह घटता बढ़ता भी रहता है इस लिये चन्द्रमा पर नेत्रों द्वारा अभ्यास करनेसे नेत्रों की ज्योति भी बढ़ती है और आकर्षण शक्ति भी प्रयोग द्वारा अति तीव्र होती है। नेत्रों को किसी प्रकार की हानि नहीं होती और दिमाग भी शीतल रहताहै। अन्य प्रकार के प्रयोगोंसे नेत्रों पर असर पड़ता है और दिमाग पर भी असर पड़ता है

चन्द्रमा पर दृष्टि जमा कर देखने का अभ्यास करो जब से चन्द्रमा निकले तबसे प्रारम्भ करो और जबतक चन्द्रमा छिप न जाये तब तक अभ्यास करते रहो। ऐसा करने से जिस प्रकार चन्द्रमा बढ़ता जायगा उसी प्रकार अभ्यास भी बढ़ता जायेगा यहाँ तक कि पूरनमासी को तमाम रात चन्द्रमा की ओर दृष्टि जमा कर रखने का अभ्यास हो जायेगा। इसके बाद फिर चन्द्रमा में स्याही नजर में आवेगी और फिर वही स्याही नजर में आवेगी और फिर वही स्याही चमचमाहट लिए हुए सूर्य की किरणों के सदृश दीख पड़ेगी और उसके अंदर एक अलौकिक प्रतिबिम्ब दिखाई देने लगेगा।

यह छाया भी चमकदार होगी। इस तरह अभ्यास करते रहने पर महीने के बाद उसमें कुछ दिखायी न देगा। अभ्यासी को चाहिये कि उसी दिन अभ्यास पूरा हो गया समझे।

राजा को आकर्षित करना

पीपल के दूध को लेकर कन्नेर की कलम से भोजपत्र पर नीचे लिखा मन्त्र सात हजार सात बार लिखना चाहिये।

"भूपं नयतज राजपि हैर्दब्यम् त्पाजस्ति"

इस मन्त्र को लिखकर शनिवार के दिन गूलर की लक-ड़ियों को इकट्ठी करके एक होली सी जलाये और उसमें इस भोज पत्र को जिस पर मन्त्र लिखा है जला डाले। जो राख

रह जाये उसे बड़े पत्र से हड्डियों में भर कर रखले। जब भी राजा के सामने जाये उसका तिलक माथे पर लगाले ताकि राजा की निगाह वहाँ पड़ सके। एक बार निगाह पड़ते ही आकर्षण अपना काम कर देगा और राजा बिना आकर्षित हुये बिना न रह सकेगा।

२--रानी को आकर्षित करना

अक्सर देखा गया है कि राजा रूप से मोहित होकर कभी कभी किसी युवती से शादी कर लाता है। उस युवती के लिये राजा को तांत्रिककी सहायता लेनी पड़ती है। उस समय राजा रानी को आकर्षित करने के लिए उपाय करता है।

रानी को वश में करने का उपाय है कि एक ताम्रपत्र पर नीचे लिखे मंत्र को लिख लेना चाहिये। और लिखकर एक स्थान पर गाड़ देना चाहिए उस स्थान पर बकरी के सिर को गाड़ देना चाहिए। उसी जगह पर बकरे का बध कर देना चाहिये। बकरे के रक्त को एक ऐसे स्थान पर इकट्ठा कर लेना चाहिये। उस रक्त को किसी भी स्थान पर लेजा कर आग लगा कर फूँक देना चाहिये गर्म हो जाने से रक्त की एक तरह की सूखी टिकिया सी बन जायेगी। उस रक्त की टिकिया को लेकर तेल में डुबो लेना चाहिये और फिर उस तेल को लेकर काजल बना लेना चाहिये। इस काजल को लेकर राजा को चाहिये कि अपनी आँखों में लगाये और फिर

रानी के पास जाये। एक बार यदि राजा की रानी की आँखों से आँखें लड़गईं तो फिर सारा काम सिद्ध होजायेगा

३—प्रेमिका आकर्षण

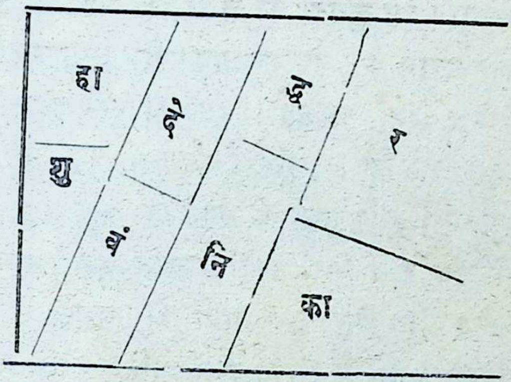

शु =	शुद्धम्	द्ध =	द्रावकम्यानि
हा =	हासात्	नि =	निरधारितकम्
दे =	देवचलयम	र =	रजाऽयानम्
वं =	वंन्देशा नयम्	क =	कर्यान्यज्

प्रेमिका को अपने वश में रखने के लिये सबसे उत्तम साधन यही है कि ऊपर लिखी कुंडली को लिखकर पीपल के पेड़ के नीचे गाड़ देना चाहिये। शनिवार के दिन उसे गाड़ना चाहिये। यह मन्त्र कन्नेर की कलम से सफेद कागज पर लिख लेना चाहिए। स्याही की जगह किसी के खून से लिखना चाहिए।

इस कागज को लेकर संध्या और शाम के समय हरे भरे

खेत में जाना चाहिये। चालीसवें दिन उसे घर लाकर पानी में भिगो देना चाहिए। पानी में भीग कर कागज गल कर लुगदी बन जायेगा। इस लुगदी को लेकर अपने कार्य में लाने का एक अभिन्न उपाय है। तब इस प्रकारकि इस लुगदीको लेकर आटे में माढ़ लेना चाहिए। आटे की पूरी बना लेनी चाहिये और उस आटे की उन पूरियों को लेकर काले कुत्तोंको खिला देनी चाहिए। काले कुत्तों के खाने के बाद वहाँ पर जो भाग कुत्तों के मुँह से गिरें उन्हें उठाकर एक स्थान पर रख लेना चाहिए और फिर उन भागों को मङ्गल के दिन उन्हें लेकर किसी बकरीको खिला देना चाहिए। उस बकरी के दूधको लेकर उसका खोया बनाया जाय और जिससे मुहब्वत हो उसके सामने लेकर डाल देना चाहिए। यदि एकबार भी उसने उस पर निगाह डाल दी तो फिर वह जरूर ही वस में आ जायगी। मन की मुराद पूरी तरह मिल जायेगी।

४—कामनी आकर्षण अंजन

शतावारी के बीज लेकर अलसी के तेल में भिगो लेने चाहिए, जब यह बीज सात दिन तक भीग जावें तब नीचे लिखा मंत्र पढ़ २ कर उन्हें १००१ बार फूँक लेनाचाहिए।

"आदमकम् दिनादस्यानि"

इस तरह फूक लेनेके बाद जो बीज रहें उन्हें एक पोटली में बाँध कर धूप में टाँग दे और नीचे एक मिट्टी का बर्तन

रख देना चाहिए ताकि तमाम तेल चूकर नीचे गिरता रहे। धूप के वेग से तमाम तेल मिट्टी के बर्तन में आजायेगा तब इसमें साफ नई रुई की बत्ती डाल कर काजल बना लेना चाहिये। इस काजल को आँख में लगा कर जब भी किसी कामिनी के सामने कोई पुरुष भी जायगा यह उस पर उसी वश मोहित हो जायेगा। मन चाही मुराद मिल जायेगी। कामनी कटीली आँख के तीर खाकर ऐसी आकर्षित होगीकि जैसे चकवी चकोर पर।

५—मदन मस्त आकर्षण

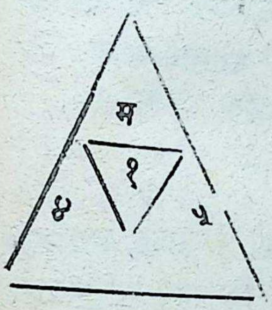

इस जन्त्र को भोज पत्र पर तुलसी की कलम और बिल्ली के आँसुओं से लिख कर सोने की तावीज में मढ़ा कर सीधे हाथ की भुजा पर बाँध लेना चाहिये। सीधे हाथ वाली भुजा पर बाँध लेने से तमाम कार्य सफलता से पूरे हो जायेंगे। और हमारा दावा है कि सात दिन तक हर मुराद पूरी हो जायेगी। एक बार भी जिस वस्तु को इच्छा करोगे वही इच्छा फौरन ही पूरी होगी मदन अर्थात काम देव तक भी इस जन्त्र के स्वामी की आकर्षक शक्ति का दास हुए बिना न रहेगा।

६-रति पल्लव

सुन्दर से सुन्दर स्त्री पर यदि कभी तबीयत आजाय और उसका पाना कठिन समस्या हो तो हिम्मत नहीं हारनी चाहिये वरन् ऐसी कोशिश करनी चाहिए कि उसे प्रभावित कर सके। रति-पल्लव एक मन्त्र है।

"तनुजा जन जयाजयजन किवधाधनक भान्यहते"

इस मन्त्र का एक सौ सत्तर बार पाठ कर लेना चाहिए फिर चिट्ठी की गौर बना कर तुलसी दल की नौका में बिठा कर किसी नदी या कुए में सिरा देना चाहिये। ऐसा करने से यह निश्चय है कि एक सप्ताह भर के अन्दर ही वह स्त्री चरण चूमने लगेगी। एक बार अपनी हो जाने के बाद गैर की तरफ नजर उठा कर भी नहीं देखेगी।

७-स्त्री आकर्षण

कभी कभी ऐसा होता है कि बुढ़ापे में शादी करने का शौक होता है। यह माना जा सकताहै कि काम शक्ति द्वारा उसकी शान्ति की जा सके मगर साथ ही साथ एक बात और यह है कि स्त्री अपनी जवानी के मद में आकर पुरुष की तनिक भी परवाह न करे। ऐसी दशा में स्त्री को अपने बस में लाने का एक ही उपाय है।

इस जंत्र को सोने के रुपये के बराबर सिक्के पर बनवाकर

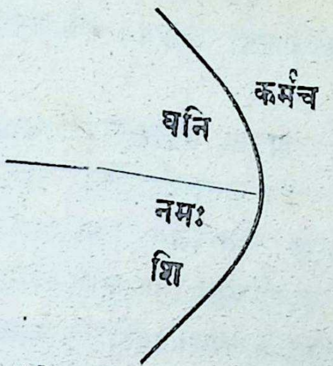

अपने सीधे हाथ में बाँधे। तीन दिन तक स्त्री प्रसङ्ग न करे और घर के किसी एकान्त स्थान में पवित्रता के साथ हवन करे और नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण करता जाय—

"निभूर्म धर्मानि कुरेतः चयनम्"

इस मन्त्रका जाप करता हुआ हवन करे और जब लगभग एक हजार आहुति दे चुके तो हवन समाप्त कर दे और उसकी भस्मी लेकर जल के घड़े में डाल दे। यदि एक भी बूँद पानी स्त्री ने पी लिया तो पालतू कुत्ते की तरह होजायेगी।

८—नरेश आकर्षण

कभी कभी देखा गया है कि राजा महाराजाओं की रानियाँ दरबार के किसी युवक पर मरने लगती हैं। राजा के कारण रानी उससे कुछ कह नहीं पाती। अपने मन की इच्छाओं को दबाने की चेष्टा करती हैं पर सफलता नहीं मिलती। ऐसी दशा में रानी राजा पर आकर्षण करके उसे

अपने बस में यदि करले तो बड़ी सफलता से अपना काम निकाल सकती है।

रानी को चाहिये कि अपना महावारी का कपड़ा लेकर घी में डुबोये और फिर आग लगा कर जला डाले। कपड़े की राख को इकट्ठा करले और जिस दिन भी राजा को आकर्षण में डाल कर अपना काम निकालना हो उसी कपड़े की राख को राजा के जूते में ऐसा रक्खे कि राजा का पैर उससे लग जाये। राजा आकर्षण के बस में ऐसा हो जायेगा कि रानी जो कुछ कहेगी वही करेगा मगर उसे सूझेगा कुछ नहीं।

यह तन्त्र राजाओं के ऊपर ही चलता है। अन्य लोगों पर प्रयोग नहीं करना चाहिये वरना हानि कारक सिद्ध हो सकता है।

६—नाम भेष

गोरोचन तथा अनार की डाली की कलम लेकर नीचे लिखा श्लोक सवा सौ बार भोज पत्र पर साफ २ लिखे।

"तुमन कमन सयदे नजया"

फिर जिस आदमी या औरत को आकर्षण में फँसा कर बुलाना हो उसका नाम एक लाल रङ्ग के कागज़ पर काली स्याही से लिख कर गन्धक की आग में जला दे। यह हमारा दावा है कि अपने आपही आदमी या औरत स्वयं सिद्धी करने

वाले के पास आजावेंगी ।

१०—कामिनी आकर्षण

अकमजीन 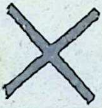 नाजमीन

इस यन्त्र को टूटे हुए मिट्टी के घड़े के टुकड़े पर गेरू से लिख कर उस सड़क पर डाल दो जहाँ से वह स्त्री निकलती हो । यदि वह तीन घन्टे के अन्दर २ वहाँ हो कर निकल भी गयी तो सोने में सुहागा होगा वह स्त्री स्वयं आकर आपके चरण चूमेगी और आप पर जी जान से निछा वर हो जायेगी । यदि आप उसे अलग भी करना चाहेंगे तो वह किसी भी सूरत में आपको छोड़ कर कहीं न जा सकेगी यह बहुत ही सफलता का प्रयोग है ।

११—बाला आकर्षण

"जय काली निमानि देवी अधिष्ठतायमे"

इस मन्त्र को सवा लाख बार जपना चाहिये । जपते २ जब सिद्ध हो जाये तो छोड़ देना चाहिये । जब भी किसी बाला के चित्त को चुराना हो और प्रयोग करना हो तो उसका उपाय बहुत सरल है । प्रयोग के समय एक घी का दिया जलाये और मन्त्र को पढ़ २ कर छींटे दिए की तरफ १०८ बार मारे । अन्त में दीपक के बचे हुए घी में माथे पर तिलक लगाए और अपनी प्रेयसीका नाम लेकर चार बार जाप करें।

जब तक दीपक जलता रहेगा तभी तक बाला दूर रहेगी

और जैसे ही समाप्त हुआ वैसे ही वह मन्त्र के बस में होकर स्वयं आजायेगी ।

१२–(आ) विनोद आकर्षण

जिस शुक्रवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो उसी दिन गोंद को लेकर एक कोरे कुल्हड़ में भिगोदे । शनिवार के दिन तेल कड़ुआ एक छटाँक ले और उसे आग पर रखकर खूब पकाए। पकते २ जब तेल धूआ देने लगे तो उसमें फूल को तोड़ तोड़ कर डाल दें । जब फूल जल जल कर राख हो जाए तो उस तेल का काजल बनाए और उस काजल को माथे के किसी कोने में भी लगा कर जब कभी किसी के सामने जाए तो वही वशीभूत हो जायेगा ।

१३–(ब) सर्वाकर्षण

गाय का गोबर और भैंस के मूत्र को लेकर एक घड़े में बन्द करके रखदे । उस घड़े के मुँहपर सकोरा रख कर कपड़े से बाँध दे । चार दिन बाद घड़े को खोले और गोबर तथा मूत्र से पृथ्वी लीप ले । उस जगह पर बकरी का खून लेकर छिड़के । फिर कड़वे तेलमें गन्धक को डाल कर जलाए । ऐसी दशा में "निमानमत कालम्" का जप निरन्तर करता रहे । जाप करते२जब स्वयं दीपक एकाएक बुझ जाए तो जाप बंद करके तेल और मोम गर्म हो कर जम जायेंगे ।

इस मोम तेल के जमे हुए पदार्थ को लेकर कागज पर मले और फिर उस पर काली स्याही से 'निभानमत जाकम' को लिख कर सीधे हाथ पर जस्ते के तावीज में रख कर बाँध ले। यह ऐसा मन्त्र हो जायेगा कि जब भी किसी के सामने आकर्षित करने के ढङ्ग से पहुँचोगे वह शर्तिया आकर्षित हो जायेगा।

१३–दूसरी रीति

अन बिंधे मोतियों को लेकर रेशमी कपड़े में बाँध लीजिये। इस रेशमी कपड़े को इमली के पेड़ के नीचे चारदिन तक गड़ा रहने दो। पाँचवें दिन इन्हें निकाल कर घी में मिला कर कुत्ते के सामने रखो। कुत्ता उसे खायेगा नहीं बस केवल मुँह डाल देगा। जब वह उसे केवल झूँठा भर करदे तो फौरन उसे उठा कर रख लेना चाहिए।

जिस दिन भी आकर्षण के लिए प्रयोग करना हो उस में एक उँगली डुबोकर बाँये पैर के तलुए पर घी मल डालना चाहिए। इसे मल कर जब भी जिस किसी के आगे जाओगे वह बिना आकर्षित हुये न बच सकेगा।

१४–तीसरी रीति

चने के खेतमें जाकर मेंड़की मिट्टी ले आओ। इसमेंडकी मिट्टीको एक ऐसी जगह डालदो जहाँ इस पर रोज लघुशंका कर सको। तीन दिन तक जितनी बार करो इसी मिट्टी पर करो। मगर ध्यान रहे कि किसी दूसरे का यह लघुमूत्र

इस तक न पहुँचे। फिर इस मिट्टी को उठाकर एक सुनसान कोठरी के एक कोने में पड़िया डालो, एक तरफ पानी का भरा घड़ा रखा होना चाहिए जिस पर घी का एक चिराग जलना चाहिये।

"कुत्तादम कुवलेयनन् कवरायन कि वेदन्दताम"

मिट्टी के ऊपर बैठ कर नीचे लिखे मंत्र को सवा हजार बार जपना चाहिये।

जब मन्त्र पूरे हो जाए तो जो घड़े में पानी हो उससे नहा कर मिट्टी की एक थूमी बनाले उस थूमी को एक ऐसे स्थान पर रखो जहाँ उसे कोई न देख सके। ऐसा करने से जब भी किसी के पास आकर्षित करने के लिए जाना हो तो फौरन उस थूमी की थोड़ी सी मिट्टी लेकर पैर के सीधे पंजे में मल कर चला जाय तो बिना आकर्षित करे न रहेगा। यह एक ऐसा रामबाण आकर्षण है जिसके सन्मुख किसी की कुछ नहीं चल सकती।

१५–चौथी रीति

७५८	
कमन	दमन
११[illegible]	

इस तरह का एक ताम्र पत्र ठीक इसी तरह का बनवा कर बाँए हाथ पर बाँध लेना चाहिये। इस तन्त्र को बांध कर जो भी स्त्री या पुरुष जिस किसी के सामने भी जायगा वह बिना आकर्षित हुए बिना न रह सकेगा।

१६—प्रेमिका आकर्षण

प्रेमियों को आकर्षित करनेके लिए एक रेंडी के तेलका चिराग बनाये जिसमें बहुत मोटी बत्ती हो। उसके उठे हुये धुँये को काजली में डाल ले ताकि उससे जो भी काजलतैयार हो उसे एक स्थान पर इकट्ठा किया जा सके। इस काजलको खूब सम्भालकर रखे। बुधवार के दिन साफ सुथरी पृथ्वीको खूब लीपे और फिर वहाँ उसी काजल से प्रेमिका का नाम लिख ले। अपने बाँये पैर का जूता लेकर—

"फलानि मेघमाद फलानि बंधमाद"

कहकर जूतोंसे नामको जपकरघंटे तक पीटता रहे। इस तरह लगा तार एक ही समय केवल तीन दिन करे। चौथे दिन नहा धोकर उसी जूते को पैर में पहन कर जब भी प्रेमिका के पास जाये तो वह फौरन आकर्षित हो जाये।

१७—माननीय आकर्षण

जो औरत बहुत नाज रखती हो तथा जिसने बहुत से लोगों को प्रेम जाल में फँसा २ कर छोड़ दिया हो उसेयदि वश में करना हो तो उसके मासिक धर्मका कपड़ा प्राप्तकरना चाहिये। जब वह कपड़ा प्राप्त हो जाये तो उस कपड़े को घी में डुबोकर अग्नि देव को दे ताकि जल कर राख हो जाये। उस राखको बड़े यत्न से किसी साफ डिबिया में

भर कर रखे। जब भी उस मानवी स्त्री को बुलाना हो उसी समय एक चुटकी राख लेकर हवा में उड़ाये और सात बार नीचे लिखे मंत्रका जाप करले। वह फौरन आकर वहीं उप- हो जायेगी।

"मघोदम मघोकन तघोपम्"

१८—प्रेताकर्षण

अपनी कार्य सिद्धियों के लिये यदि प्रेत को आकर्षित करके बस में रखना हो तो नीचे लिये मन्त्र का १२७ बार जाप करो।

"अल्लम मुल्लम कुलामुल्लाह"

फिर एक अँधेरी कोठरी में बैठकर बकरी के गोश्तको आग पर डालो। इससे जो धुँआ उठे उसे एक शीशी में भर लेना चाहिये। इस शीशी को गङ्गाजल या किसीदरिया के पानी से कई बार धोना चाहिये। फिर धूप गंधक की धूनी देनी चाहिये इस तरह उससे जो भी कुछ धुआं बोतल में रह जायेगा वही प्रेत है। जब भी किसी काम को प्रेत द्वारा करवाना हो उसी समय शीशी को धूप में रखदो और काम के बारे में हुकम दो। जब तक काम न हो जाये धूप में से शीशी को मत उठाओ। काम फौरन होगा। उसे कोई नहीं रोक सकता।

———

१९—कंकाल आकर्षण

शनिवार की रातको बारह बजे शमशान भूमिमें जाकर जो भी खोपड़ी पहले हाथ लगे उसे उठा लाओ और उसे कई तरह से कई पानी से धोकर खूब साफ करके किसीऐसे स्थान पर रखो। जहाँ सूरज की किरणें न जाती हों और न यहाँ कोई दूसरा व्यक्ति जाताहो। जब भी कुछ आकर्षण करना होफौरन ही लाल रोशनाईसे वही नाम खोपड़ीपर लिखदो और जब तक लिखा रहने दो जब तक वह आ न जाये। कामकीपूर्ती हो जाने के बाद उसे मिटा डालना चाहिये और फिर धूप दीप से उसकी पूजा करके शुद्धता से रख देना चाहिए।

२०—डाकिनी आकर्षण

काले तिल हाथ में लेलें और फिर नीचे लिखेमन्त्र का जाप करते हुए चारों दिशा में फैकें। यदि आस पास कहीं भी डाकनी हुई तो फौरन दौड़ी चली आयेगी।

"आदम की चेटी धामण धामण नाम वाली स्यामके माँस खाने वाली कुतियाकी सी नाक वाली गधेकी नानीउत्तराधन वाली जहाँ भी हो खामक बामक थामक पानी आन मान धान दान कानदे। शान्दान साचांन मान चालान आन।"

२१--आकर्षण यन्त्र

(पहली तरफ) (दूसरी तरफ)

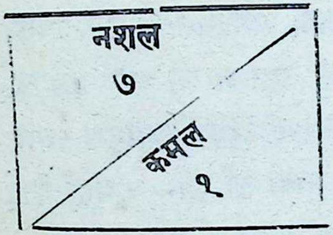

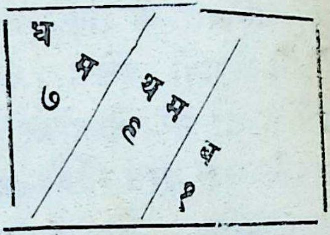

एक चाँदी के पत्र को इस तरहका बनवाये औरउसकी दोनों तरफ यही मंत्र लिखे हों। फिर इस पत्रको किसीरेशमी कपड़े में बाँधे। शुक्रवार के दिन उसे धूप देकर सीधेहाथ पर बाँधले। फिर जब भी किसी के पास आकर्षण के इरादे से जायेगा तो वह काम अवश्य सिद्ध होगा। ऐसा हमारा दावा है यह यंत्र हर प्रकारके आकर्षणों पर ऐसा ही कार्य करेगा।

२२--बुलाने का आकर्षण

यदि किसी आदमी को जो कि बाहर परदेश चलागया हो यदि वापिस बुलाना हो तो असली नीचे वाला मसाला लेना चाहिये।

वायविडङ्ग	–५ तोला
केसर	–१ तोला
कस्तूरी	–६ माशा

इन तीनों को लेकर बारीक पीस ले और फिर गाय के

घी में खूब अच्छी तरह हल कर लेना चाहिये। इसको अच्छी तरह मिला कर दूध में डाल कर उबाले और रबड़ी बनाले। काले कुत्ते को शनिश्चर के दिन बुलाकर उस रबड़ी को खिला दे और सात बार पीछे वाले मन्त्र का जाप करके कुत्ते के कान में उस आदमी का नाम कह दे जिसे बुलाना हो। यह तय है कि वह आदमी अपने आप एक हफ्ते के अन्दर आ जायेगा।

२३-गान विद्याकर्षण

"नमानी काली नमानी भैरव नमानो शुक्रादि देव्य"

गाने वालों को अपनी गान शक्ति को बहुत बढ़ाना चाहिये और अकसर देखा गया है कि वह अपने स्वर में उस अज्ञात शक्ति को भर लेते हैं कि मनुष्य तो क्या बहुत बड़े और डरावने जानवर तक वश में हो जाते हैं यह विद्या गान शक्ति को सिद्धहस्तता और आकर्षण मन्त्रों का ही चमत्कार है। इस विद्या को सिद्ध करके गायक जब भी गाना गाता है उसकी आवाज में लोच स्वभाविक रूप से पैदा हो जाती है और उसकी शक्ति का विकास हो जाता है।

यह शक्ति इस प्रकार से हो सकती और खास तरह से सिद्धि करने को केवल यही ढङ्ग है कि एक लम्बी गर्दन की सुराही ले और उसके पेंदे में छेद करे। उसके बाद एक मोम बत्ती जलाये और सुराही को उसके ऊपर इस तरह रखे कि

मोमबत्ती का धूँआ छेद द्वारा ऊपर मुँह से होकर निकल सके। काले तिलों कोः—

"मलेच्छाऽया नयाऽया मयाऽया सरस्वतैनमः"

कह कर सुराही में डालता जाये। इस तरह जब सारे तिल जो तौल में पाव भर हों सुराही में डाल ले तो मोमबत्ती बुझा कर नीचे वाले छेद से तिलों को किसी वर्तन में निकाल ले। इनको किसी तरह हाथ से मलकर या मशीन की सहायता से बारीक करके तेल निकाल ले। इस तेल को इक्कीस दिन तक गर्दन पर मले और गले में चारों तरफ लगाये।

अपने आप आवाज में वह आकर्षण शक्ति आजायेगी कि जिसे लोग देखते रह जायेंगे। उस गानविद्या के चमत्कार से उसे यश तथा प्रशंसा तो मिलेगी ही पर वह चमत्कार भी देखने को मिलेगा कि लोग तो क्या जानवर भी खिंच आयेंगे।

कभी २ ऐसी मौत भी हो जाती है कि न तो मृत्यु प्राप्त पुरुष या नारी कुछ कह ही पाता है और न वह कुछ अपने बारे में बता ही पाता है। ऐसी हालत में यह आवश्यकता समझी जाती है किसी तरह उनके मन का हाल समझना या जानना चाहिये। ऐसी दशा के लिये इसकी योग सिद्धि बहुत आवश्यक तथा अच्छी प्रतीत होती है।

—:०:—

२४—प्रवासी आकर्षण

सब से पहले उस स्थान को जहाँ कि मृतक की आत्मा बुलानी हो खूब साफ करे। चौका लगाये और यदि हो सके तो गङ्गा जल भी छिड़क दे। इसके बाद एक कोरा मटका मँगाए और चार आदमियों को बुलायें यह चारों आदमी घड़े को बीच में उलटा रख लें। अर्थात् उसका मुँह नीचे की तरफ उसके ऊपर अपने २ हाथ रखलें।

जब कोई बात पूछनी हो तो पहले मृतक का नामले फिर कहें कि यदि इसका उत्तर हाँ में हो तो घड़ा तीन बार खटके और यदि न हो तो केवल दो बार ही खटके।

हमारा दावा है कि घड़ा खटक कर उत्तर देगा। जिन साहब को इत्मीनान न हो वह करके देखलें और यदि असफल रहें तो हमारे पास आकर उसका परिचय लें।

२५—कमान आकर्षण

कभी कभी ऐसा होता है कि जिस बातको हम लोग नहीं भी करना चाहते हैं कभी उसेभी करनेके लिए मजबूर होजाते हैं।

उसका क्या कारण है ? हम नहीं समझ पाते । उसका कारण दिल और दिमाग से सम्बन्ध रखता है । जब किसी वस्तु की हमें इच्छा होती है और हम उसे पाना चाहते हैं तो हम अपनी तमाम दिमागी ताकत को एकत्रित करके उस ओर लगा देते हैं । हमारे दिमाग में एक अद्भुत ताकत है जिसका परिणाम होता है कि हम जो कुछ चाहते हैं वही होता है ।

इसकी सिद्धि का कोई खास मन्त्र या तन्त्र नहीं है । यहाँ हम केवल इतना ही जानते हैं कि यह तो साधन से ही प्राप्त हो सकती है । जब और जैसे भी कोई आदमी इसकी सिद्धी करेगा वैसा ही फल प्राप्त करेगा ।

वशीकरण विद्या

❀ वशीकरण ❀

मन्त्र–ॐ नमः सुरा सुरानां नमस्कृत्य

ब्रह्म दंडी वचा कुष्ठं चूर्णं तांबूलं दापयेत् ।

रवीं वारे कृते योगः सर्व लोक व शंकर ॥

अर्थ–ब्रह्मदण्डी–बच और कूड़ इन सबका चूर्ण रविवार के दिन ताँबूलोंके साथ जिसे देवै वह वश में हो जाये ।

गृहीत्वावट मूलंच जलेन सत धर्मसेत् ।

विभूत्या संयुतं भाले तिलकं लोक वश्यकृत ॥

अर्थ–वट के मूल को जल से पीस उसके साथ विभूति मिलाकर जो कपाल पर तिलक करे वह वशीभूत करता होवै।

देवदानी च सिध्यर्थ गुटिकां कारयेद बुधः ।

मुखे निच्चिष्य सर्वेषां सर्वः लोक वंशकरः ॥

अर्थ–देवदाली और सर्षप को एकत्र करै गोली बांधे, मुख में रख वार्तालाप करै वशीभूत क्रिया है ।

कुंकुमं नगरं काप्ये हरितालं मनः शिलां ।

अना भिकायारक्तेन तिनकं सर्व वशीकृत ॥

अर्थ–कुंकुम–नागर कूड़–ताल–मनशिल और अनामिका का रक्त मिश्रित करै–कपाल में तिलक कर्ता वशीकरण क्रिया को करता है ।

गोरोचनाँ पद्मपत्रं प्रिये गुंरक्त चन्दनं ।
एकीघीकृत्वांजयेने मे सर्वलोक बशंकरं ॥

अर्थ--गोलोचन-पद्मपत्र-प्रियेगु-रक्तचन्दन ये सब एकत्र करै और नेत्राजन कर्ता सर्व जन को वशी करने वाला होवै ।

कुमारी कर्दमादाय त्रियाबीज संयुते ।
तिलकं क्रियते भाले सर्वलोक बशंकरं ॥

अर्थ-घीग्वार का मूल और सिद्धि बीज पीस कर्ता कपाल में तिलक देवै वशीकर्ता है ।

हरिताल अश्वगन्धां सिंदूरे कदली रसं ।
तिलकं क्रियते भाले सर्वलोक बशंकरं ॥

अर्थ--हरताल-असगंध-सिंदूर-कदलीवृक्ष के रस से मर्दन करै--कपाल में तिलक करै तो सर्वजन वशी होवैं ।

धात्री फल रसे भाव्यां अश्वगंधामनः शिला ।
अनेन तिलकं भालं सर्वलोक वशंकरः ॥

अर्थ-अश्वगन्धा मनः शिला और धात्री रस मर्दन करै कपाल में तिलक करै-तिलक कर्ता वशीकरण क्रिया को प्राप्त हो ।

सूचना--उपरोक्त वशीकरण मन्त्रों में निम्न मन्त्र की सिद्धि की आवश्यकता है ।

ॐ नमः सर्व लोक वशं करायं कुरु कुरु स्वाहाः।
अष्टोत्तर शतजपेन सिद्धिः

❀ स्त्री वशीकरण मन्त्र ❀

सिंदूर कदली कहें येष येद गुरु बासरे।
अनेन तिलकं कृत्वास-यो-नारी वशीभवेत्॥

अर्थ--गुरुवार को सिंदूर और कदली कंद मूल पीसै तिलक करै नारी देखे वशीभूत होवै।

॥ स्त्री वशीकरण दूसरा मन्त्र ॥

नीति का वाक्य है कि स्त्री को हर प्रकार से सन्तुष्ट रखना उसे वशीकरण करना है। प्रत्येक पुरुष का धर्म है कि वह स्त्री को जैसी उसकी रुचि हो वैसे ही निभाता रहे स्त्री सदैव चरणों की चेरी रहेगी, वस्त्र आभूषण उसकी इच्छानुसार देना भोजनादि जैसी उसको रुचि हो उसी के अनुसार सन्तुष्ट रखना स्त्री वशीकरण कहलाता है। फिर भी वशीकरण निमित्त शास्त्रकारों ने अनेक मन्त्र ऐसे लिखे हैं कि जिसके जाप मात्र से स्त्री वशीभूत हो जाती है।

❀ जाप मन्त्र ❀

ॐ नमो भैरवायनमः। चल चल रे काली पूत प्यारे जोग जंगम अवधूत सोती होय जगाय जा जगती को बैठार। जगावे न तोय कालका माई की आन। शैया उठ आवे मनोकामना दिखावे शब्दसाँचा पिंडकाँचा फुरो मंत्रईश्वरा वाचा।

आदित्य बार के दिन रात्रि के दो बजे गुड़ और कलावा लेकर एक सौ इक्कीस बार गुड़ को उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके वाकला के तेल के साथ भैरव की पूजा करे गुड़ की गोलियाँ बनाले फिर इनमें से एक गोली ऊपर के मन्त्र से अभिमन्त्रित कर और पान में रख जिस स्त्री को खिला दोगे वही वशीभूत हो जावेगी।

राजा वशीकरण मन्त्र

अनेक मन्त्र ऐसे हैं कि जो नाम से लेकर जपे जाते हैं अथवा किसी व्यक्ति का नाम ले लेकर उसका आवाहन करते हैं। ऐसे मन्त्रों में शास्त्रकारों ने नाम के स्थान पर अमुक शब्द प्रयोग किया है। जाप करते समय जब मन्त्र में 'अमुक' शब्द आता है तब उस व्यक्ति का नाम लेकर जाप करते हैं जिसको अपने वश में करना है। इसमें निम्नलिखित मन्त्र का जाप किया जाता है।

❀ मन्त्र ❀

ओं ह्रीं क्लीं अमुकस्य महीपालं
वश्यते मनाय फट स्वाहाः

विधिवत एक सहस्त्र मन्त्र का जाप नित्य प्रति करने से दिन में मन्त्र अपना प्रभाव दिखलावेगा। इस मन्त्र के जाप में कुंकुम, गोराचन, रोली, गुलाल, लाल रङ्गके पुष्प तथा लाल

वस्त्र धारण किये जाते हैं। किसी २ शास्त्रकार का मत है कि भीमसेनी कपूर, लाल चंदन, कन्नेर कुँकुम तगर जायफल और जावित्री को खरल में बारीक पीसकर कपड़छन करले और आषाढ़ पूर्णमासी अदित्यवार अभिजित नक्षत्र में चन्द्र ग्रहण पड़ते समय इक्कीस बार ऊपर लिखे मन्त्रसे पिसी हुई चीजों को अभिमन्त्रित करे और उसमें लाजवंती का तेल मिलाकर समस्त बदन पर मर्दन करके जिस राज दर्बार में जावेगा वहीं का राजा उसके वशीभूत हो जावेगा।

पति वशीकरण मन्त्र

जिस स्त्री का पुरुष उस से रुष्ट हो गया हो उसकी अनुमति के अनुसार कार्य न करता हो अथवा अन्य किसी स्त्री से प्रेम करता हो उसको चाहिये कि—

प्रथम तो अपने पति की आज्ञाकारी बनी रहे फिर मृदु वचन बोले सेवा सुश्रुशा करती रहे। आज्ञा का कभी उलंघन न करे सदैव हँसमुख रहे और उसके मन के अनुसार कार्य करती रहे तो स्वयं पति उसका दास बन कर रहेगा।

दूसरी बात यहहै इससे भी निठुर हृदया वाला न पसीजे तो निम्नलिखित मन्त्र का आवाहन करे।

❀ मन्त्र ❀

ओं नमो देवायः देवेष्ट सुरासुरे
वश्यपति राजः फुट फट कुरुः

विधिवत स्नानादिकर नित्य प्रति एक सौ आठ मालायें एकाग्र चित्तसे जाप करती रहे तो इकतालीस दिन बादउसका पति वशमें हो जायगा अथवा इकतालीसवें दिन से मंत्र का प्रभाव उस पर पड़ने लगेगा।

शत्रु वशीकरण मन्त्र

जब शत्रु अपने से अधिक बलवान होता है और वह किसी प्रकार काबू में नहीं आता तब मन्त्रों द्वारा उसको अपने वश में किया जाता है।

मन्त्र

ओं नमो भद्रं कपाल कलितं।
अमुक शत्रु वश्यं कुरु कुरु फट॥

इस मन्त्र का एक सौ ग्यारह बार जप नित्य प्रति एकाग्र चित्त से करे और विधिवत भद्रदेव की पूजा करता रहे तेतीस दिन बाद भद्रदेव की कृपा से शत्रु अपने आप मिलने को आवेगा अथवा किसी को मध्यस्थ करके संधि का सन्देश भेजेगा। तब सन्धि उससे ऐसी अचल हो जावेगी कि फिर उससे शत्रुता नहीं होगी।

वशीकरण तिलक

धनियाँ, भीमसेनी, कपूर, कुंकुम, केसर, कस्तूरी प्रत्येक औषधिको एक २ रत्ती लेकर सफेद चन्दन के मूठा से पत्थर

के ऊपर घिस कर तैयार कर लो। फिर अश्वनी नक्षत्र में गुरुवार के दिन उसे निम्नलिखित मन्त्रसे अभिमन्त्रितकरके माथे पर तिलक लगाने से वशीकरण हो जाता है।

मन्त्र

नमस्ते केशवायनमः नमस्ते राधिका पते।
नमस्ते भूत राजस्या नमस्ते महा प्रभो॥

चन्दन के साथ पिसी हुई औषधियों में थोड़ा सा पानी मिला कर तिलक लगाने योग्य करे। फिर उसको सात बार उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तिलक लगावे।

वशीकरण सुरमा

काले सिरस के बीज ७ नग ममीरा १ माशे सुरमापत्थर एक तोला भीमसेनी कपूर १ माशे नीम का रस एक छटाँक नीबू का रस एक तोले सब चीजों को एकत्र करके बारीक खरल करे फिर उसे कपड़े में छान सुरमा बनाले जब बनकर तैयार हो जाय तब अभिजित नक्षत्र में शिव लिंगी बिछाकर निम्नलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करे।

मन्त्र

छत्तीस कलुआ चौसठ जोगिन सङ्ग में आवे।
वश कर गिन गिनमेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो॥
ईश्वरो वाचा फट फट स्वाहाः

इस मन्त्र से सात बार अंजन को अभिमन्त्रित करके

आँखों में लगा के जिस ओर देखोगे उसी ओर से स्त्री पुरुष वशीभूत हो जावेंगे ।

स्त्री वशीकरण

रतिकालमें स्त्रीको केवल स्खलित कर देनेसे वह वशीभूत हो जाती है। परन्तु जो स्त्री दुष्ट हो जाती है तथा पहिले प्रेम कर फिर नहीं चाहती ऐसी स्त्री को निम्नलिखित विधि द्वारा वशीकरण करते हैं।

विशाखा नक्षत्र आदित्य वार में रात्रि के बारह बजे पर कौवों की चोंच लाकर उसमें गूलर भरे और जिस रास्ते रुष्ट हुई स्त्री जा रही हो उसके सामने सात लकीर चोंच से काढ़े और निम्नलिखित मन्त्र पढ़ता जावे ।

मन्त्र

रूठी को मनावे अपने पास बिठावे जारे ।
मनुवा ला तू बोल जो नहिं आवे तो विष ॥
बोल आवे आवे ऐसी आवे मन को भावे ।
मंत्रसाँचा गुरूवाचा कुरु कुरु फट २ स्वाहाः ॥

दूसरी बिधि

किसी किसी का ऐसा भी मत है कि जो स्त्री अप्रसन्न हो गई हो उसके सिरके बाल बिना टोके शुक्र या शनिश्चर के दिन लावे और रात्रि के बारह बजे विशाखा नक्षत्र में आदित्यवार के दिन कृष्ण पक्षकी अष्ठमी को श्मशान में जाकर

एक एक करके बालों का जलाना आरम्भ करे और निम्न-लिखित मन्त्र का पढ़ता जावे।

मन्त्र

ओं नरस्य अमुक स्त्री वशायं।

कुरू कुरू फट फट स्वाहा॥

अमुक के स्थान पर उस स्त्रीका नाम लेता जावे जिसको कि वशमें करना चाहता है ऐसा करने से सात दिन बाद स्त्री स्वयंआकर खुशामद करेगी और ऐसी काबू में हो जावेगी कि हटाये न हटेगी और नित्य प्रति सेवा में लगी रहेगी।

तीसरी विधि

इसी विषय पर किसी का ऐसा भी मत है कि रजस्वला स्त्री के रक्त में भीगे हुए कपड़े का पूतरा बना कर और उसको आदित्यवार के दिन स्वांति नक्षत्र भादों वदी अष्ठमी की रात्रि को निर्जन बन में ले जाकर निम्नलिखित मन्त्र में चौदह बार अभिमन्त्रित करे फिर उससे रुष्ट हुई स्त्रीके मकान में गाड़ दे तो स्त्री प्रसन्न हो जावेगी।

मन्त्र

ओं रुद्रदेवायः सकल विघन हरिणाम्।

अमुक स्त्री वश्यते कुरु कुरु स्वाहा॥

पूरा को मन्त्रसे अभिमन्त्रित करते समय प्रत्येकअन्तिम शब्द पर घी की आहुति देता जावे।

प्रायः ऐसा भी होता है कि यदि पुरुष अपने वीर्य को स्त्री के चरणों में लगा कर रति करे तो जन्म पर्यन्त स्त्री उसके वश में रही आवेगी तथा जिस स्त्री को पुरुष शीघ्र स्खलित कर लेगा वह स्त्री उसकी दासी बन कर रहेगी, स्त्री वशीकरण में मुख्य यही बात है कि जहाँ तक सम्भव हो सके वहाँ तक शीघ्र पतन रोकने का प्रयत्न करो स्त्री से पहिले अपना वीर्य पात न होने दो इसके लिए अनेक औषधियों का वैद्यक शास्त्र में वर्णन है ।

—:※:—

पति वशीकरण

विद्वानों का मत है कि यदि स्त्री अपने बाल बिना टोके शनिवार या शुक्रवार को पान में रख कर खिला दे तो वह उसके वश में हो जावेगा । अथवा निम्नलिखित मन्त्र से अभिमंत्रित की हुई सुपारी पान में रख कर खिला देने से पति उसके वशीभूत हो जाता है ।

❀ मन्त्र ❀

ओं नमो उर्मिला उरमिला देवा ।
हु हु पति वशी फट स्वाहा ॥

इस मन्त्र से सूर्य ग्रहण के दिन इक्कीस बार सुपारियों को पढ़ कर अपने पास रख ले और जब कभी पति रुष्ट हो जावे तब वह सुपारियों को काट कर दोबारा सात उपरोक्त

मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पान में रख कर खिला देने से उसका पति वश में हो जाता है।

कोई ऐसा भी कहते हैं कि रुष्ट पति के जूते के नीचे की मिट्टी लेकर उसका पूतरा बनावे और चन्द्रग्रहण के समय उसको उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पति शैया के नीचे गाड़ दे तो उसका पति प्रसन्न होकर उसके वशीभूत हो जावेगा।

अन्य रीति

तत्ववेत्ता और स्वरोदय वाले कहते हैं कि यदि स्त्री अपनी सुष्मना नाड़ी को पति की सुष्मना नाड़ी में रति समय मिलादे तो सदैव उसका पति दास बनकर रहेगा अथवा जो स्त्री अपने वाम स्वर को पति के अर्पण कर देगी तो उसका पति भी आज्ञाकारी रहेगा।

जिस प्रकार पति वशीकरण के विषय में वेदान्तों और तत्ववेत्ता कहते हैं उसी प्रकार स्त्री वशीकरण का भी वर्णन करते हैं।

—:o:—

वशीकरण यन्त्र

मन्त्रों के अतिरिक्त शास्त्रकारों ने अनेक वशीकरण यन्त्र भी कहे हैं जिनका फारसी भाषा वाले जन्त्र तन्त्र के नाम से पुकारते हैं।

सर्व सिद्धि यन्त्र

श्री साध्य श्री

क्रो (बायें) — क्रो (दायें)

५	४	७
१	२	श्री
७	८	८

श्री श्री — श्री श्री

क्री — क्रो

क्री साध्य क्री

इस यन्त्र को भोजपत्र पर गोरोचन कुंकुम की स्याही बनाकर गुरुवार के दिन चमेली की कलम से विशाखा नक्षत्र सूर्यग्रहण के समय लिखे और इक्कीस बार नीचे लिखे मन्त्र से धूप दीप नैवेद्य इत्यादि देकर अभिमन्त्रित करके लाल वस्त्र में बाँध कर दाहिनी भुजा में बाँध ले। नित्य प्रति नीचे लिखे मन्त्र का एकसौ आठ बार जाप करे तो इक्कीस दिन बाद मन्त्र अपना प्रभाव दिखावेगा अर्थात् सिद्ध हो जावेगा।

❀ मन्त्र ❀

ओं महाकाले भद्र काले सर्व सिद्धि महाबले।
आदि काकर्त्ता महा भरता कुरुकुरु स्वाहाः ॥

बार बार जाप करते रहना चाहिये। इक्कीस दिन तक यह क्रिया बट वृक्ष के नीचे बैठ कर करनी चाहिये। जाप के

अन्तिम दिन बच्चों को श्वेत रङ्ग की मिठाई खिलादे और चौराहे पर मानी का बलिदान दे तो वशीकरण शक्ति उत्पन्न हो।

दूसरी विधि

यदि प्रति इतवार को भैरव के मन्दिर में एकाग्र चित्त से पति के वर्ण के पदार्थों का बलिदान करे तो एक सौ इक्कीस दिन बाद वशीकरण शक्ति उत्पन्न हो जावेगी।

—:❀:—

सिद्धि यन्त्र नौ कोटे में

८	१	६
३	५	७
४	९	२

इस यन्त्र को ताम्र पर खुदवा कर फिर कृष्ण पक्ष में आर्द्रा नक्षत्र आने पर सिद्धि करना प्रारम्भ करे।

इस यंत्र की सिद्धि भैरव के मन्दिर में जाकर करे तथा प्रत्येक रविवार को भैरव का व्रत करे और उसके ऊपर तेल में सिन्दूर मिला कर चढ़ावे। तथा पीले पदार्थों का भोग

भैरव के सामने रख कर निम्नलिखित मन्त्र से स्तुति करे। फिर भोग छोटे २ बच्चों में बाँट दे। इस प्रकार एक सौ इक्कीस दिन तक साधन करने से यन्त्र सिद्धि को प्राप्त होता है।

❀ मन्त्र ❀

ओं भैरवाय नमः कपाल काले नमस्तस्ये भूतनाथ।
महा प्रभो सिद्धि यंत्र सिद्धेश्वर जगन्नाथ महामते॥

॥ राजा वशीकरण ॥

श्री श्री श्री श्री श्री			
हरि	क्लीं क्ली क्लीं		लंव
भेव	वं वं	साध्यव	लं
जैव	वं	नं नं नर	ह्री
श्री श्री श्री श्री श्री			

रुष्ट हुए राजा को वशीभूत करने के निमित्त अष्टधातु का यन्त्र बनवाये और उसके ऊपर राजाकी आकृति खुदवाये और नीचे इस यन्त्र को अंकित करे। फिर अभिजित नक्षत्र में कुकंम की केशर की स्याही बनाकर लक्ष्मी फूल की कलम से अंकित को भर कर सुशोभित

करे और रात्रि को बारह बजे शरद पूनों के दिन निर्जन बन में ले जाकर एक सौ आठ बार नीचे लिखे मन्त्र की सिद्धि करे फिर गले में धारण करे। नित प्रति धूप दीप से उसकी पूजा करता रहे। सवा महीने के अनन्तर मन्त्र अपना प्रभाव दिखावेगा। अर्थात् रुष्ट राजा प्रसन्न होकर आदर से बुलावेगा।

❀ मन्त्र ❀

ओं नमो काल काले देव नाथ महादेते।
महीपालं वश्यन्ते कुरू फट स्वाहा॥

यंत्र सिद्धि होने पर भी इस मन्त्र को एकाग्र चित्त से एक सौ आठ बार नित्य प्रति जाप किया करे इससे राजा सदैव प्रसन्न रहेगा। जाप इसका गुरुवार से करना चाहिए।

—:❀:—

स्त्री वशीकरण

प

	व	रुद्रानी	द	
य	भदे	सरस्वती	नेम	द
	पति	आदित्य	भद्र	

ज

अप्रसन्न हुई स्त्री के पैरों को धूल इकट्ठी करके उसका पूतरा बनाये तथा उस स्त्री के रूपकी आकृति बना कर उसका यथावत् स्त्रियोंकी भाँति श्रृङ्गार करे फिर उसका मुँह दक्षिण ओर करके एक गृह में स्थापित कर दे फिर इस यन्त्र को भोज पत्र पर श्वेत कटहरी के दूध में केशर मिला कर अनार की कली से लिख डाले और उसको सफेद आक के दूध में स्नान करा कर फिर गङ्गाजल से धो डाले और पूतरा की पीठ पर चिपका दे, स्वयं स्नानादि से निवृति होकर उसकी पूजा करे और नीचे लिखे मंत्र से अभिमंत्रित करना आरम्भ करे साठ दिन बाद उस पूतरा को अप्रसन्न स्त्री की देहल के नीचे अभिजित नक्षत्र में गाढ़ दे। जब जब उस स्त्री के पैर उस पूतरा पर पड़ेंगे तब तब ही व्याकुल होकर वह याद करेगी और बिना किसी के बुलाये स्वयं मिलने को चली आयेगी।

———:०:———

❀ मन्त्र ❀

ओं उर्वसी सरस्वतै नमस्ते गिरजा सुता।
अमुक स्त्री वस्यती कुरु कुरु कुरु फट स्वाहा॥

पुरुष वशीकरण मन्त्र

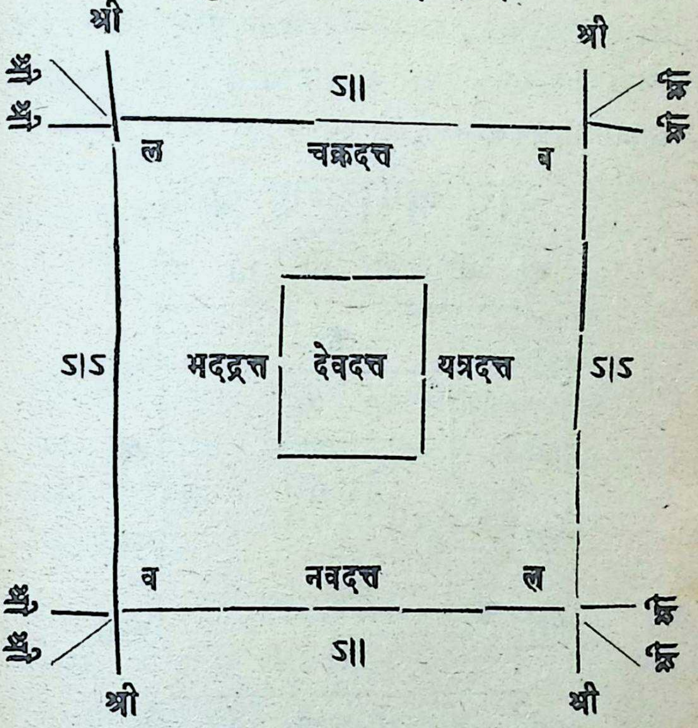

जिस पुरुष को वशीकरण करना हो उसके हेतु उपरोक्त यन्त्र को भोज पत्र पर बनाए और उसके मध्य में उस पुरुष का नाम लिखे जिसको वश में करना है। यन्त्र कुकुंम, गोरोचन, मोती की स्याही बनाकर चमेली की कलम से विशाखा नक्षत्र भृगुवार के दिन प्रातकाल के चार बजे उठकर लिखाजावेगा। फिर उसको अप्रसन्न पुरुषके मकानकीदक्षिण

दिशा में जाकर रख आवे इक्कीस दिन तक इस प्रयोग को नित्य प्रति करता रहे इक्कीसवें दिन वह पुरुष स्वयं आकर मिलेगा और अनेक प्रकार की मिन्नतें करने लगेगा यदिएक बार प्रयोग सफल न हो यो दुबारा फिर करना चाहिए।

शत्रु वशीकरण यन्त्र

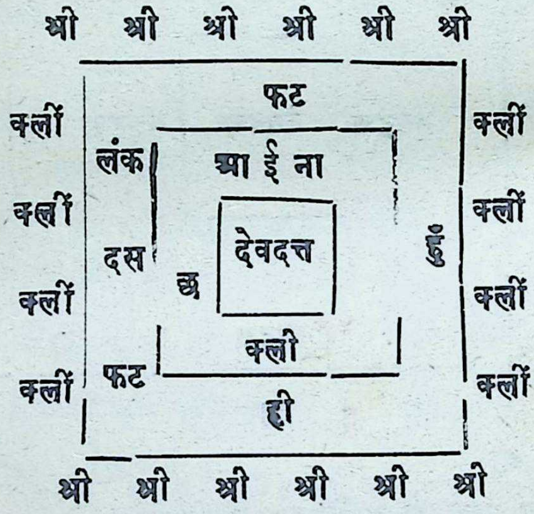

शत्रुओं के वशीकरण यन्त्र लोहे के इस प्रकार बनाये जाते हैं कि लोहे का एक बलिश्त लम्बा और एक बलिश्त चौड़ा पत्ता बनवा कर उस पर उपरोक्त यन्त्र को अंकित करावे और मध्य में शत्रु का नाम अंकित करावे फिरनदीके किनारों की मिट्टी लाकर एक पूतरा बनावे उसकी छाती में इस यन्त्र को लगादे फिर मुर्दे की हड्डी की कील बनवा

कर और मन्त्र को यथावत धूप दीप से पूजा कर श्वेत रङ्ग के पुष्पों में उसको गाड़ दे और निम्नलिखित मंत्र से हड्डी की कील को यन्त्र के मध्य में ठोको जैसे जैसे कील पुतले की छाती में घुसती जावेगी वैसे वैसे ही शत्रु निर्बल होता जावेगा तथा साठ दिन पीछे स्वयं आकर मिलेगा अथवा घबरा कर सन्धि कर लेगा और सदैव को वशीभूत हो जावेगा।

❁ मन्त्र ❁

ओं नमो आदेश गुरू का मन्त्र साँचा कण्ठ कचा शत्रु मारु उदर विदारूँ हनुमान की दुहाई आन लक्ष्मण जती की सीता सती की फुरो ईश्वरो वाचा।

दूसरी विधि

उपरोक्त मंत्र को एकाग्र चित्तसे एकसौ आठ बारनित्य प्रति जपा करे और फिर सात कील लोहे की बना कर इसी मन्त्र से अभिमिन्त्रत करे और ऊपर वाले यन्त्र के मध्य में एक एक करके ठोकना आरम्भ करे प्रति चोट पर मन्त्र बोलता जावे और अंतिम वाक्य पर फूँक मार दे। जिस दिन से यह प्रयोग आरम्भ किया जावेगा उसीदिन से शत्रु निर्बल होता जावेगा और उसका मन मिलने के लिये बिकल हो उठेगा अंत में साठ दिन बाद स्वयं आकर मिल लेगा और

शत्रुता जाती रहेगी।

मन्त्रों के मुख्य भेद

हृदय के भाव के साथ शब्दादिक शक्ति या प्रभाव का विशेष सम्बन्ध है। आपके हृदय में यदि कोई बात किसी सम्बन्ध में स्वतः निकल जाय वह अवश्य ही सत्य होगी। इस बात का अनुभव सहस्रां बार किया जा चुका है। आप भी अनुभव कर चुके होंगे।

जिस काम को आप करना चाहें उसका हृदय में ध्यान रखे और मन ही मन यह कहते रहें कि ऐसा हो तो अवश्य ही वैसे ही साधन उपस्थित होंगे और वह कार्य उसी प्रकार होगा जैसा कि चाहते हो। यदि कोई रोगी मनुष्य मन में यह ध्यान करे कि मैं अब अच्छा हो रहा हूँ और उसका यह ध्यान विश्वास पूर्वक हो तो उसे अवश्य ही आराम होगा। आप यदि किसी भी मुकद्दमे में जीत चाहते हैं तो उसजीतका ध्यान रखें, आप यदि किसी का हित चाहते हैं तो हर समय उसके हित का ध्यान रखें और आप यदि किसी का अहित चाहते हैं तो हर समय उसका अहित विचारते रहैं। आप यदि यह चाहते हैं अमुक मित्र मेरे ऊपर विशेष कृपा रखे। वह मेरा आज्ञाकारी रहे तो आप वैसा ही हर समय ध्यान रखिये आपको अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी।

प्रायः आपने सुना होगा कि यदि किसी मनुष्यसे किसी

की शत्रुता हो और अचानक उसका अनिष्ट हो जावे बहुधा मनुष्य कहा करते हैं कि अमुक मनुष्य ने तेरी बाबत उल्टी माला फेरी होगी। यदि तनिक विचार पूर्वक देखो तो इसका महत्व स्वयं समझ में आजावेगा क्योंकि उसके शत्रु ने उसके अहित का ध्यान सदैव अपनी आत्मा में रक्खा था इसी कारण उसका अहित हो गया।

यही भेद ईश्वर प्रार्थना में है और यही भेद माला जपने में है। इसी हेतु को लेकर देवताओं की आराधना की जाती है। तात्पय यह है कि प्रत्येक कार्य की सफलता में तथा वशीकरण प्राप्त करने में अथवा मन्त्र सिद्धि इत्यादि में हित अहित का ध्यान बनाये रखना ही श्रेष्ठ है।

रामायण वशीकरण मन्त्र

तुलसी मीठे वचन सो सुख उपजत चहुँ ओर।
वशीकरण एक मन्त्र है, तज दे वचन कठोर॥

मृतक आत्मा से बातचीत करना

जब कोई मृतक आत्मा यन्त्र द्वारा बुलाने पर मेजमें आ जाय और सिद्धिकी आज्ञानुसार पाया गिरने लगेतो पात्रऔर सिद्धि सन्मान पूर्वक उसका स्वागत करे तथा राम राम और जयगोपाल इत्यादि शब्दों से शिष्टाचार करे।

मृतक आत्मा की जाति पूछना

आई हुई आत्मा से शुद्ध सम्मान पूर्वक मधुर वचन में

प्रार्थना करे कि यदि आप हिन्दू हैं तो एक बार पाया उठे और गिर जाये और यदि मुसलमान हैं तो दो बार पाया उठ कर गिरे। यदि ईसाई हैं तो तीन बार पाया उठकर गिरे परन्तु यही क्रिया विस्तृत है इसलिये ऐसा न कर केवल यह प्रश्न करना चाहिये यदि आप हिन्दू हैं तो पाया उठ जाय ऐसा कहने पर पाया न उठे तो दूसरा प्रश्न करो ऐसा करने से आत्मा प्रसन्न रहती है। अधिक लम्बे चौड़े प्रश्न करने से जब आत्मा उत्तर देते देते थक जाती है तो दुखित हो कर लौट जाती है।

जिस जाति की आत्मा मेज में आई हो उसका सतकार शिष्टाचार उसी जाति के अनुसार करना चाहिये जैसे यदि हिन्दू हो तो राम २ मुसलमान हो तो बन्दगी और ईसाई है तो गुडनाइट इत्यादि।

आत्मा की अवस्था पूछना

साधक प्रश्न करे आपकी जितनी उम्र हो उतनी ही बार पाया उठे और गिरे, आत्मा की जितनी उम्र होगी उतनी बार पाया उठ कर गिरेगा। साधक उसकी गणना सावधानी से करता जाये जितनी बार पाया गिरे उतनी ही मृतक आत्मा की उम्र है।

आत्मा पढ़ी है या नहीं

इस बात के जानने के लिये कि आत्मा कुछ पढ़ी लिखी

है या कोरी मूर्ख है यह प्रश्न करो कि आप पढ़े हैं या नहीं यदि आप पढ़े हैं तो पाया तीन बार उठे और नहीं पढ़े हैं तो दो बार उठे जितनी बार पाया उठे उसके अनुसार पढ़ी या बे पढ़ी समझ लो।

आत्मा की भाषा पूछना

आत्मा से पूछा जाय कि आप कै भाषा जानते हैं जितनी बार पाया गिरे समझलो आत्मा उतनी ही भाषा जानती है।

अगर हिन्दी जानती है तो केवल एक बार पाया गिरे और उर्दू जानती है तो दो बार पाया गिरे तथा अंग्रेजी जानती है तीन बार पाया गिरे आदि और भाषायें भी इसी प्रकार समझलो।

आत्मा का नाम पूछना

आत्मा से प्रश्न करे आपका क्या नाम है इस बात के जानने के लिये अव्वल से लेकर आखिर तक अक्षर बोलना शुरू करो जिस अक्षर के बोलने पर पाया गिरे उसी अक्षरको क्रम से लिखते जाओ और सबको जोड़ कर नाम जान लो।

आत्मा की कुशलता पूछना

आई हुई आत्मा से सविनय प्रार्थना करो कि यदि आप प्रसन्न हैं तो एक बार पाया उठकर गिरे ऐसा कहने से पाया गिरने लगे तो समझलो आत्मा प्रसन्न है।

मृतक आत्मा का पात्र पर प्रभाव डालना

मेज में आई आत्मा से सविनय प्रार्थना करो कि वह मेज पर बैठे हुए जिस मनुष्य पर चाहे अपना प्रभाव डाले थोड़ी देर के बाद मेज में एक प्रकार की सनसनी पैदा होगी वही मृतकात्मा का प्रभाव है। वह जिस पात्र को उचित समझेगी उसी पर अँगुलियों द्वारा प्रवेश करेगी। जिस पात्र के शरीर में आत्मा प्रवेश कर रही है उसको अपना शरीर भारी मालूम पड़ने लगेगा उसकी मानसिक शक्ति निर्बल होकर आत्म शक्ति बलवान हो जायेगी उस समय पात्र से जो कुछ भी प्रश्न करोगे सबका सही उत्तर देगा।

—:❀:—

सावधानी की बात

जिस समय आत्मा सनसनाती हुई पात्र के शरीर में
प्रवेश करे उस समय किसी को भयभीत न होना चाहिये।
वह दृढ़ चित्त होकर मेज पर हाथ जमाये रहे यदि भय मान
गया तो रोगी होने की सम्भावना है और यह भी याद रहे
कि हाथों से चक्र बनाया हुआ न बिगड़े और चित्त विचलित
न हो। यदि चित्त विचलित हो गया और चक्र बिगड़ गया
तो ओझा और पात्र दोनों को हानिकारक है।

कोई २ निकृष्ठ आत्मा अनेक प्रकार के उपद्रव भी
उठाया करती है।

आत्मा का प्रभाव उतरना

जब आत्मा का प्रभाव उतारना हो तो उसको सविनय प्रार्थना कर पधारने की सन्मान पूर्वक आज्ञा दो आत्मा का प्रभाव उतर जायेगा परन्तु यह क्रिया कठिन है। मैस्मरेजम के प्रधान ज्ञाता पात्र पर आत्मा का प्रभाव अधिकांश में नहीं डालते हैं क्योंकि कोई २ आत्मा बड़ी कठिनाई से उतरती है जो सिद्ध चतुर हैं वह पहिले आत्मा से वचन भरवा लेते हैं कि जितनी देर तक हम चाहेंगे रक्खेंगे तत-पश्चात् आपको प्रस्थान करना पड़ेगा। दो चार बार पधारने की आज्ञा देने पर आत्मा न उतरे तो भयभीत न होना चाहिये उस समय सबको मिल कर ईश्वर सम्बन्धी भजन गाने चाहिये। आत्मा उतर जायेगी।

निकृष्ट आत्मा का उतारना

यदि निकृष्ट आत्मा ईश्वर सम्बन्धी भजन करने से भी न उतरे तो उसको निम्नलिखित मन्त्र से मार्जन देना चाहिए।

❀ मन्त्र ❀

ओं नमो भगवते बासदेवाय नमः

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धी महि धियो योनः प्रचोदयात् ॥

ऐसा करने से आत्मा सनसनाती हुई उँगलियों द्वारा मेज में प्रवेश कर जायेगी और पात्र का शरीर हल्का हो जायेगा मेज में से जिस स्थान से आत्मा आई है उसी स्थान को चली जायेगी और पात्र पहिले की भाँति सचेत हो जायेगा। यदि सचेत न हो तो उसको लिटा कर पाँच सीधे पास दे दो।

—:*:—

आत्मा को बुलाने की दूसरी विधि

करामती मेज के नीचे गिलास शुद्ध पानी का भर कर रखो अगर मेज नीची हो और उसके नीचे पानी भरा गिलास न जा सके तो उसको मेज के समीप इधर उधर किसी स्थान पर रखदो जिस मकान में तुम प्रयोग कर रहे हो उसमें मोमबत्ती की रोशनी करो मेज के समीप एक मोमबत्ती और दियासलाई का बक्स रहे अधिक प्रकाशकी आवश्यकता नहीं है।

—:*:—

मृतक आत्मा का आवाहन

पात्र और प्रयोक्ता करामाती मेज पर दोनों हाथों को मिस्मरेजम की क्रिया अनुसार रक्खे नेत्र एक दूसरे से मिले रहें जिस आत्मा को बुलाना चाहते हैं उसका विश्वास पूर्वक दृढ़ चित्त होकर ध्यान करे मन इधर उधर विचलित न हो

थोड़ी देर बाद गिलास का पानी हिलने लगेगा उस समय आई हुई आत्मा से प्रार्थना करो वह मेज में प्रवेश करे फिर जो चाहो आज्ञानुसार कार्य कराओ। कभी कभी ऐसा भी होता है कि आई हुई आत्मा असत्य भाषण कर जाती है इसका कारण वर्ण व्यवस्था है यदि उच्च वर्ण की आत्मा है तो सही उत्तर देगी और नीच वर्ण की है तो गलत उत्तर देगी जाति भेद के कारण कोई कोई आत्मा आते ही रोशनी को बुझा देती है जिससे एक दम अँधेरा हो जाता है उस समय डरना नहीं चाहिये। सावधानी से मोमबत्ती जला लेनी चाहिये जो पहले ही से मेज के पास रख लिया हो।

—०—०—

❀ स्तम्भन ❀

छटवाँ अध्याय

"हे राजन्! इन तमाम मन्त्रों में सर्व श्रेष्ठ वशीकरण है उसके बाद स्तम्भन की बारी है। इस क्रिया को यदि सिद्ध कर लिया जाय तो अन्य बातों की कौन कहे एक बार तो बहता हुआ पानी भी रोका जा सकता है। स्तम्भन मन्त्र के प्रयोग ही से महाभारत में दुर्योधन भीमसेन के डर से भाग कर जब तालाब में जाकर छिपा था तो उसने पानी को रोक कर अपनी साँस इत्यादि लेने की व्यवस्था करली थी। इस मन्त्र की सिद्धि जितनी कठिन है उतने ही इसके गुण प्रखर तथा शोभायमान हैं" गुरुदेव बृहस्पिति ने कहा।

राजा इन्द्र और उसकी सभा को इस पर बहुत ताज्जुब था और तब अपनी बलवती इच्छाओं की शान्ति के लिये उसने पूछा-गुरुदेव स्तम्भन ने तो मेरी उत्कण्ठा बहुत बढ़ादी है इसलिए आप इसका वर्णन सविस्तार करें।

राजा इन्द्र की यह बात सुनकर बृहस्पति जी ने कहा 'हे राजन्! स्तम्भन क्रिया के तीन भेद हैं और उनके गुण भी अलग अलग होते हैं।

१-राजस स्तम्भन

२—ग्राह्य स्तम्भन

३—पादय स्तम्भन

पहली स्तम्भन क्रिया से तो राक्षसी तमाम कण्टक दूर किए जा सकते हैं और दूसरी क्रिया से जितने भी चर अचर हैं उन्हें मोह कर वश में कर लेना आसान होता है, और तीसरी क्रिया से मृतकों को भी वशीभूत किया जाना सरल है।

—:०:—

अग्नि स्तम्भन मन्त्र

ॐनमो अग्नि रूपायै मम शरीरम् स्तम्भनम् कुपुकुरुम स्वाहा।

विधि—यह अग्नि स्तम्भन करने का मन्त्र है इस मन्त्र को दस हजार दफा जपने से यह सिद्ध होता है और इसका प्रयोग करने के पूर्व इसे ३२० दफा और जप लेना चाहिये।

—:॰:—

शत्रु की बुद्धि मारी जाय

ॐ नमो भगवते शत्रुणाँ बुद्धि स्तम्भय स्वाहाः।

इस मन्त्र को एक लाख दफै जप करके बड़ के नीचे बैठ कर सिद्धि करले सिद्धि करने के बाद प्रयोग करने के पूर्व १०७ बार जप करने से यह अपना प्रभाव करने लगता है। और शत्रुओं के स्थान पर शत्रुओं का नाम लेने से वह फिर शत्रु की बुद्धि को भङ्ग करके अपना स्थान जमा लेता है।

———०——

मूत्र स्तम्भन

भीम वारे गृहीत्वातु मृत्तिकां रिपु मूत्रतः ।
कृकलास मुखे क्षिप्तकंट वृक्षै च बंधयेत् ॥
मूत्रबंधो भवेतस्य उद्धृते च पुनः सुखी ।
विना मंत्रेण सिद्धिस्यात् सिद्धियोग उदाहृतः॥

अर्थ–शत्रु के मूत्र त्याग स्थान की मिट्टी मंगलवार को लेकर कृकलास (गिरगेट) के मुँह में भरे और काँटे वाले वृक्ष में बाँध देवे। इस प्रकार जब तक बँधा रहे तब तक शत्रु का मूत्र स्तम्भन हो ।

कृकलास को बंधन मुक्त करै तो मूत्र प्रवाहित हो ।

—❀❀—

नपुन्सक करण

बुध वारे शनिवारे वा कृकलासं संग्रहायत्नतः ।
शत्रु मूत्रयते यत्र कृकलासं तत्र निक्षिपेत् ॥
निखनेद्भूमि मध्ये च उद्धृते च पुनः सुखी ।
नपुंसकं भवेत् सत्यनान्यथा शंकरोदितं ॥

अर्थ–बुधवार किंवा शनिवार को कृकलास लेकर शत्रु मूत्र स्थान पर गाड़ देवै तो शत्रु नपुंसक हो उखाड़ने पर पूर्वत होवै ।

———०———

❀ षन्डीकरण ❀

नरोमूत्रय ते यत्र कृष्ण वृश्चिक कंटकं।
मिथुने जायते षंड उद्धृते च पुनः सुखी ॥

अर्थ——मनुष्य के पेशाब स्थान भूमि में श्याम बिच्छू के काँटे को दबाये तो मनुष्य षंड़ होवे।

अजा मूत्रेण संभाव्या निशा षड़ बिंदु चूर्ण कं।
पानासन प्रयोगेने षंड़ावं जायते नृणां ॥

अर्थ-हरिद्रा और षड़ के बिंदु के चूर्ण को छाग मूत्र की भावना देवे। इस चूर्ण को जिस मनुष्य को खिलावै तो मानव षंड़ होवै।

जलौका दग्ध चूर्णंतु नवनीतेन भक्षते।
युवाजीयं देहो युवो षड़ात्वं कारकं ॥

अर्थ-जलौका को जला कर नवनीत के साथ खिलाने से युवा व्यक्ति षंडत्व को प्राप्त होता है।

धुस्तूर पुष्पमक्षेण पुनः संयपते सुखं ॥

अर्थ-धतूरे के फूल या बीज के खिलाने से उक्त दोष की शांति होवै।

क्षेत्र (खेत) का उपद्रव दूर करना

गंधकं चूर्णंतं क्षेपं जल कुर्यान्व् तेनवै।
नाशयेत् सर्व शाकानि सेकाद्रुपवनानानिय ॥

अर्थ-गन्धक चूर्ण को जलमें मिला कर खेत में सींचने से शोक इत्यादि शीघ्र नष्ट हो जावे।

कामदेव स्तम्भन मन्त्र

—–०—–

यह मन्त्र सफेद कागज पर काली स्याही से नारियल के सीक की कलम बनाकर लिखे और विषय करते समय देखा करे तो स्तम्भन हो अर्थात् शीघ्रपात न हो ।

	काँ	काँ	काँ	काँ	
ताटें	३	१४	४५	५८	काँ
ताटें	५	५६	८२	३८	काँ
ताटें	६१	७१	७८	१३	काँ
ताटें	११	५३	१०	१०	काँ
	ताटें	ताँटें	ताँटें	ताँटें	

संतान (पुत्र) प्राप्ति उपाय

—❀❀—

सबसे पहिले वह अपने चरित्र को सुन्दर तथा साफ

रखने के लिये इक्कीस दिन तक स्त्री गमन न करे झूठ न बोले नशा न पान करे, चारपाई पर सोना पराये अन्न का खाना चोरी, धोखा, और बहुत से बुरे कर्म न करे। पाँव में जूता और सिर पर टोपी न पहिने। खीर बना कर उसमें घी डाल कर खावै और फिर स्नान करके रामायण में से जहाँः—

"प्रेम मगन कौशिल्या, निश दिन जात न जान।
सुत सनेह वश माता, बाल चरित कर गान॥"

यह दो पाठ शुरू करदे "लै उछङ्ग कबहुँ कहुलरावै" तक नित्य पाठ किया करे और इस मन्त्र को ४० दिन तक धूनी देकर नौ गज डोरे में बाँध कर स्त्री के दाँये हाथ में बाँध दे तो ४० रोज तथा १ माह के भीतर गर्भ रह जायगा।

चन्द्र	केतू	सूर्य
राहू	नाम	राहू
सूर्य	केतू	चन्द्र

जुवा स्तम्भन और जीतने का यन्त्र

१	१ १५	१ १५	७
१३	१ ७४	१ ३६	२ ७३
१ ६३	० ३२	१ ५६	० ३०
१ ४१	२ ५३	१ ५३	१ ६६

इस यन्त्र को सोमवार के दिन पुष्प नक्षत्र में मोर के पंख से सफेद कागज पर काली स्याही से लिख कर कोयलके पंखमें लपेट कर ३१ दिन तक बड़ के पेड़ के नीचे बैठकर धूनी दे और छोटे २ लड़कों को भोग बाँटे तो यह मन्त्र सिद्ध हो जायगा। तब फिर जहाँ मनुष्य इसको अपने रुपयों में डालकर जुआ खेलेगा तो जरूर जीत कर आवेगा और उससे उसका धन नहीं घटेगा।

सर्व कार्य सिद्ध यन्त्र

इस यन्त्र को सफेद कागज पर रोली से लिखे। यन्त्र के

नीचे मनोरथ लिखकर फिर पलीता बनाकर रविवार को दीपक से जलावे।

इस प्रकार इसको ७ रवि· वार को करता रहे तोफिर यह अपना कार्य करेगा और तुमने जो मनोरथ लिखा है वह सर्व सफल होगा। परन्तु इस बात पर अधिक ध्यान रहे कि इस ओर बड़ीध्यान पूर्वक तथा शुद्धता से कार्य करना पड़ता है। अब इसको हल्दी से माला बना कर ७ बार ११ दानों की फेरले। सर्व प्रकार के काम सफल हो जाँयगे।

१	६	७	३
१५	३	४	५
२	७	१३	२
१	४	३	१

—:※:—

मेघ स्तम्भन तन्त्र

दो हाँड़ी लेकर उसमें श्मशान के अँगार भरदे और दोनों हाँड़ियों के मुँह मिलाकर उसको वन में गाड़ देने से मेघ का स्तम्भन होजाता है और वर्षा बन्द हो जाती है।

नौका न चले

भीरणी नचत्र में सारकाग्ड (गूलर) कीकी पाँच अँगुल

कील बनाकर नौका के मध्य में अर्थात् उसके नीचे गाढ़ दे तो अवश्य ही नौका नहीं चलेगी।

दृष्टि स्तम्भन मन्त्र

क	क	नें	नम्
भे	भूं	नम्	नें
भें	भूं	कें	भू

इस यन्त्र को दीप मालिका के दिन अर्ध रात्रि को अगस्तत्य वृक्ष के नीचे बैठकर धूप कुंकुम और कचनारकी लेखनीसे ताम्र पत्र पर लिख कर दीप और नैवेद्यादि से पूजन कर फिर सिद्ध किया हुआ यन्त्र जब चाहे जिसे लिखकर दिखादे तो उसकी दृष्टि बँध जायगी।

—❀❀—

देह बन्धन मन्त्र

अगारी जो गुरु पागें जोगिन जुरा डयड बतिया गों कारिया बिलाई यागे जोगिन मुख अनरिया गो। ऐति रही रतिया जो जोगिन चलाई अगोलिया जो भौंरा में तलियागो। जोगियो चलाई अगोलिया गो मारों। बाँधुऊ नजरिया जो। दोहाई मुइया बनिता के दोहाई सलिमा पैगम्बर को दोहाई सलाइ हूँ।

इस मन्त्र को रात्रि के दस बजे पीपल के वृक्ष के नीचे १० रविवार तक जाप करना चाहिये।

मेघ स्तम्भन मन्त्र

ओम नमो नारायण मेघ स्तम्भन कुरुकुरु, स्वाहा।

इस मन्त्र को दस हजार बार जप कर सिद्धि कर लेवे। पश्चात् दो ईंटों को लेकर उन पर श्मशान के कोयलों से मेघ लिख कर समपट बनाने से भूमि में गाड़ देवे तो मेघों का स्तम्भन हो जाता है।

निद्रा स्तम्भन तन्त्र

सोंठ काली मिर्च, जीरा इन तीनों को एक में पीसकर सात रोज तक आँख में लगावे तो नींद नहीं आवेगी।

शत्रु विद्वेषण

एक हाथ में काक और दूसरे हाथ में उल्लू का पंख लेकर विद्वेषण मन्त्र से उनको अभिमन्त्रितकरे। फिर दोनों को एकत्रित करके धागों से दोनों पंखों को बाँधकर जिसके घर में इसको खोद कर गाड़दे उसके घर में विद्वेषण हो।

तथा च

जिसके ऊपर विद्वेषण करना हो तो उसके चरणों के नीचे की मिट्टी को लाकर पुतली बनावे फिर हाथी और सिंह के बाल के सहित पृथ्वी खोदकर उसमें पुतली को गाड़दे। पश्चात् उन गाड़ी हुई वस्तुओं के ऊपर आग रख कर मालती के फूल से हवन करे उस मनुष्य के जितने मनुष्य हों उन सभी में उसका विद्वेषण हो जाता है।

पति पत्नी विद्वेषण

जिनमें विद्वेषण करना हो तो उसके चरण के तले की मिट्टी तथा बिल्ली और मूँसे की बिष्टा मिलाकर और सौ बार विद्वेषण के मंत्र से अभिमंत्रित करके इन तीनों वस्तुओं सी पुतली बना लेनी चाहिए। फिर उस पुतली को नीले रङ्ग के वस्त्र में लपेट कर उसके (जिस पर प्रयोग करना चाहे) घर में खोद कर उस पुतली को गाड़ दे तो पिता, पुत्र, पति, पत्नी आदि में बराबर विद्वेषण हो जायगा।

तथा च

चिता की भस्म में नेवले और सर्प के दाँत का चूर्ण मिला कर पुतलो बनावे फिर उसमें विद्वेषण करना हो तो उसके नाम से विद्वेषण मन्त्र द्वारा एकसौ बार उसको अभिमन्त्रित करे और बगीचा में खोदकर गाड़ देने से उनमें अवश्य विद्वेषण हो जाता है।

मक्खन में हाथी और सिंह के दाँतों का चूर्ण मिला कर फिर उसके नाम से मन्त्र पढ़ कर अग्नि में हवन करने से उसमें आपस में विद्वेषण हो।

सभा में झगड़ा होवे

भैंसा और घोड़े का बाल एकत्रित करके सभा में उसकी धूप दे तो चण मात्र में सब सभा में विद्वेषण हो जायगा।

——:०:——

तथा च

जिस सभा में कुत्ता के लोम (बाल) तथा बिल्ली के नख की धूप दे तो उस सभा में आपस में झगड़ा हो जायगा।

——❀❀——

घर में झगडा कराना

जिसके द्वार की भूमि खोद कर सेह का काँटा गाड़ दे तो घर में रोज अवश्य झगड़ा होता रहता है।

——❀❀——

विद्वेषण मन्त्र

ॐ नमो नारकाये अनुकस्य अमुकेंन सहू विद्वेषण कुरु-कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को एक लाख दफे जपने से सिद्ध होता है। जप करते समय 'अमुक' शब्द के स्थान पर जिस पर प्रयोग करना हो तो उस मनुष्य का नाम ले लेना चाहिये।

——❀❀——

शुभ कार्य चक्र

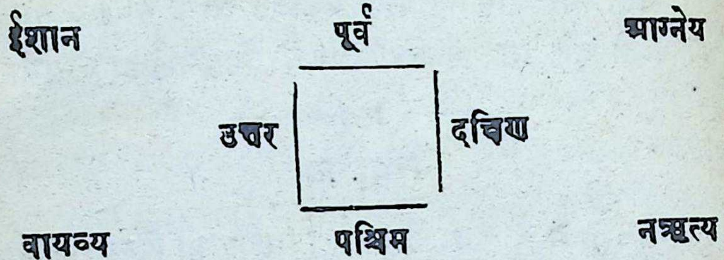

रविवार के दिन बैठने की विधि

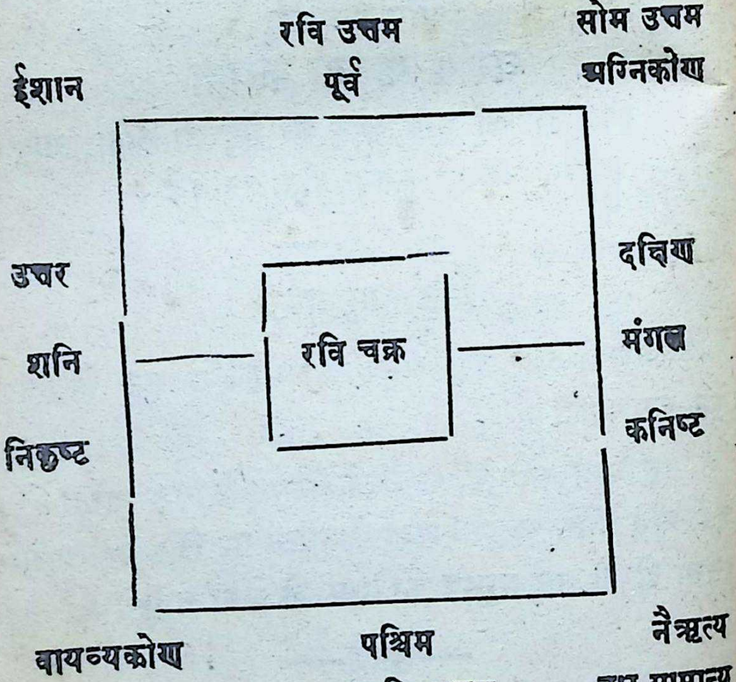

जिस समय जैसे कार्य के लिए बैठना चाहे। इस चक्र के अनुसार उसी ओर मुख करके बैठे तो कार्य की शीघ्र सिद्धि होती है।

मन्त्र की प्रकृति

मन्त्र की सिद्धि चार प्रकार की होती है और जैसी प्रकृति होती है वैसा ही फल होता है।

यदि कार्य को जल्दी सिद्ध करना चाहो तो शनिवारसे मन्त्र को जपना प्रारम्भ करे और पश्चिम की तरफ मुख करके बैठे जैसा कि नीचे चक्र में दिया है।

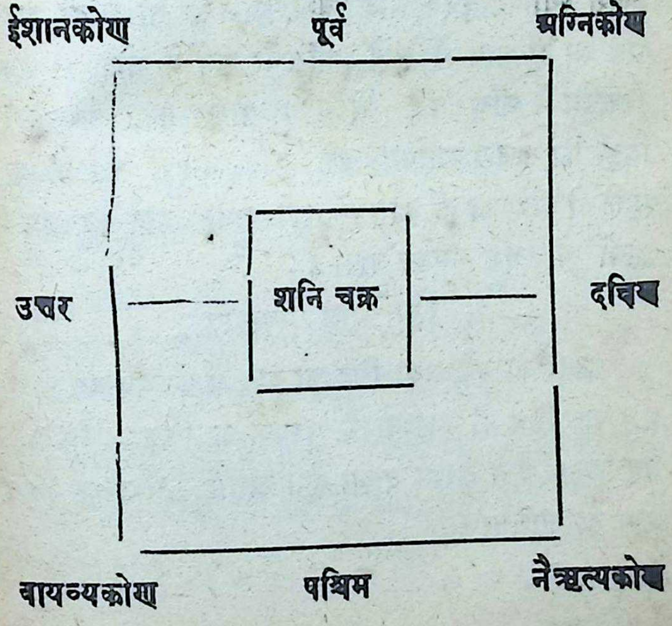

तिथि वर्णन

कृष्ण पक्ष की नौ तिथियों में सूर्य का और शुक्ल पक्ष की नौ तिथियों में चन्द्रमा का अधिकार रहता है, इस तरह कृष्ण और शुक्ल पक्ष की छः छः तिथियों में चन्द्रमा और सूर्य का अधिकार रहता है। इसलिए सूर्य के अधिकार में चल और चन्द्रमाके अधिकारमें स्थिर कार्य करना उत्तम है। चर उसे कहते हैं, जो काम कुछ समय तक रहता है। स्थिर उसे कहते हैं, जो बहुत काल उसी दशा में स्थिर रहे।

कुम्भ स्थापना विधि

शान्ति कर्म में नौ रत्नों से अलंकृत करके स्वर्ण का कलश स्थापित करके यदि स्वर्ण का न हो तो चाँदी अथवा ताँबे का ही काम में लावे, अभिचर कर्म में लोहे का कलश उत्पादन में काँच का, मोहन में पीतल का, उच्चाटन में मिट्टी का कलश स्थापन करे। यदि इनमें से कोई कलश न मिले तो ताँबे का ही काम में लावे क्योंकि तांबे का पात्र सब कार्यों में उत्तम समझा जाता है।

विद्वेषण तिलक

हाथी का दाँत तथा सिंह का दाँत लेकर मक्खन के साथ मल कर जिन दो मनुष्यों के मस्तक पर तिलक किया तो यह तिलक द्वेष कराने वाला है। अर्थात् उन दोनों का द्वेष भाव हो जायेगा।

शत्रु विद्वेषण विनाशक यन्त्र

६६	१८	१२	७
६५	८६	२	३
३६	१३	७६	१
६७	४४	११	६६

इस यन्त्र को उल्लू के पंख पर लिख कर शत्रु के सिर पर छोड़े तो शत्रु की बुद्धि नष्ट होगी।

—❀❀—

परस्पर विरोध करने का मन्त्र

ॐ ग्नं ग्नं गिंत्रु गिंलु गिंलु क्षपति ठः ठः !

यह यंत्र पढ़ कुलीश का पंख जिस २ के द्वार पर गाड़ दो तो आपस में वैर भाव पैदा हो जाएगें।

शत्रु विद्वेषण मंत्र

ओ जो जो गुहसाति भञ्जो नल द्राँ द्राँ द्राँ ग्वां ग्वां ग्वां आहि आहि ओं क्षीं क्षीं क्षीं,

साहीके चर्म पर बैठ कर इतवार या मङ्गल की रात्रीमें इस यन्त्र को पढ़कर उर्द और साही के रोम मिलाकर अग्नि में आहुति दे। तत्पश्चात् सेह के काटों से अभिमंत्रित करके शत्रु की देहली के नीचे गाढ़ देने से परस्पर विग्रह होता है।

कलाय (कलह) यंत्र

७६	६६	२३	२३
७	८६	४७	५६
३	३६	५४	१
२	३१	३०	५७

यह यन्त्र लाल चन्दन से कुम्हार के अवे की ठीकरीपर लिख कर शत्रुके घरमें डाले तो उस के घर में कलह होवैगी।

मारण

आज कल के युग में अधिक लोगों का कुछ विश्वासहै कि मन्त्रों तथा तन्त्रोंमें एक ऐसी शक्ति है जिसके प्रयोग से जीव को मार डालना कठिन नहीं है उन लोगों को उन में कहाँ

तक सफलता मिलती है यह भी जान लेना अच्छा है।

गुरुदेव वृहस्पिति ने कहा—राजन जब देवताओं पर कभी कोई मुसीबत आतीथी तो वह लोग अधिक उद्विग्न हो जाते और उनकी उद्विग्नता का यही फल होता है कि वह अपने तमाम कामों को भी भूल कर अपने एक ऐसे काम में लग जाते हैं कि उसकी सिद्धी के बाद उसके शत्रु का नाश हो जाता है। मारण का जाप और परिणाम दोनों ही बहुत भयानक हैं।'

मारण मन्त्र

ॐ नमो काल रूपाये शत्रु भस्मी कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को एक लाख एक वार जपने से सिद्ध किया जाता है और प्रयोग करने से पहिले १०३ वार जाप और कर लेना चाहिये। तब फिर यह अपना प्रभाव दिखाता है।

शत्रु क्षय मन्त्र

५३	७६	३१	७२
६६	४३	२५	८६
५६	३२	७३	१२
१३	७८	१६	६३

इस यन्त्र को मोर के पंखका निब लगाकर सफेद कागज पर काली स्याही से लिखे तो और उनका नाम लेता जाय। इस तरह हर मङ्गलवार को करे नौ दफे तो करे यह मन्त्र अपना प्रभाव करना शुरू कर देगा और शत्रु का अवश्य ही क्षय होगा।

शत्रु मरण यन्त्र

ॐ नमो सर्वकालम् सहोरायम् अमुक हन हन की फट भस्मी कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र के आमुक के स्थान पर अपने शत्रु का नाम लेता जायगा तो यह यन्त्र अपना प्रभाव दिखा कर उस को मारेगा।

विधि—मारण प्रयोग करने वाला पुरुष अपने शत्रुके पैर के नीचे की मिट्टी को ले आवे और फिर उसकी एक पुतली बनाले और उसमें किसी भी मनुष्य की चिता की भस्म को मिला दे और बीच की उँगली के भीतर किसी भी मनुष्य अथवा आदमी का खून भर दे। तब पुतली को नरियल की झाड़ू के साथ काले कपड़े तथा काले सूत से बाँध लेवे। और फिर उसको आसन पर बैठा कर दीपक जला दे। तब फिर ऊपर लिखे मन्त्र को दस हजार बार काजल पर लिख कर आप मन्त्र को अपने मुँह से बोलता जावे और तब फिर ६६ उरद लेकर पुतली के मुँह में भरदे तो आधी रात को

उसको प्रयोग में लावे तो वह बड़े से बड़े शक्ति शाली मनुष्य को भी मार देगी। प्रातः काल होते ही उसको श्मशान में रख आवे इस प्रकार एक माह तक इसका प्रयोग करने से शत्रु की मृत्यु अवश्य हो जायगी।

शत्रु भ्रमण मन्त्र

१३	१ १००	५६	९३
२	५	९६	३१
७	७६	८	१४
३	१७	६	४

इस यन्त्र का पीले कागज पर लिखकर शत्रु के घर में अमावश के दिन इतवार को डाले तो उसका दुश्मन घर घर मारा मारा फिरेगा।

शत्रु मारण मन्त्र

नीम के वृक्ष की कील चार अंगुल प्रमाण लावे और उसमें शत्रु के सिर के बाल लपेट शत्रु का नाम लिखे।

फिर तीन या पाँच या सात रात्रि पर्यन्त शत्रु का नाम पूर्वोक्त प्रकार से चिता के कोयले से लिख कर सावधानता पूर्वक धूप देवे।

कृष्ण पक्ष की अष्टमी से कृष्ण चतुर्दशी पर्यन्त यह प्रयोग प्रति दिन १०८ मन्त्र जपे तो मन्त्रके प्रभावसे शत्रुको प्रेत शीघ्र ग्रहण कर लेता है यह मंत्र ज्ञाताओं को जानना चाहिये।

ॐ नमो भागवेताँ कना कुरु कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्र को एक लाख बार बड़ के वृक्ष के नीचे बैठ कर जाप करना चाहिए तो फिर अपना प्रभाव करके दुश्मन के प्राण हरण करेगा परन्तु इस मन्त्र को लगा तार एकमाह तक नहा धोकर शुद्धता के साथ जपना चाहिये और एकदिन के लिये भी इस यन्त्र को न भूल कर पाठ छोड़ देनाचाहिये और शैया पर न सोना चाहिये नहीं तो यह मंत्र अपना उलटा प्रभाव करेगा और जाप करने वाले मनुष्य के ही ऊपर उलटा हो कर उसके प्राण हर लेगा।

शत्रु शूल यन्त्र

३२	३६	७१	१०
१६	३२	१४	३३
१५	१४	६३	१६
११	४१	६१	५१

इस यन्त्र को थूहर के दूध से कारी ठीकरी पर लिख कर शत्रु के घर पर गाड़े तो शत्रुको शूल होवेंगा।

---o---

शत्रु कुल क्षय मन्त्र

जिस दिन पुष्य नक्षत्र होवे, तब मनुष्य की हड्डी की चार अंगुल प्रमाण की कील लेकर उसके घर में गाड़ दी जावे, जब तक वह गड़ी रहेगी तब तक उसके वैरी के कुल का क्षय जानना।

ऊँ ह्रीं फट् स्वाहा स्वाहा।

ऊपर लिखा हुआ मन्त्र है। दश हजार बार मन्त्र जपने से सिद्ध प्राप्ति होती है। अन्य युगों में उक्त संख्या के अनुसार

जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है परन्तु 'कलौचैन चतुर्गुणम्' इस वाक्य के अनुसार कलयुग में उक्त संख्या से चौगुना जप करे तो और जप संख्या से दशांस हवन तद्शाँश तपर्शी, तदद्शांश मार्जन। तद्दशांश ब्राह्मण भोजन भी करा कर किसी गरीब को खिलावे तो यह परमोत्तम क्रम सर्वत्र जानना चाहिये।

तथा च

'ऊँ सुरेश्वराय स्वाहा' इस मन्त्र को जपता हुआ मनुष्य साँपकी हड्डी की चार अंगुल कील लेकर अश्लेशा नचत्र में इतवार के दिन एक सौ आठ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिस शत्रु के घर में एकांतमें रख देवे तो शत्रु की सन्तति का विनाश हो।

तथा च

घोड़े के हाड़ को अंगुल प्रमान कील अश्विनी नचत्र में सोमवार के दिन लेकर वैरी के घर में दाव कर रख देवे तो शीघ्र वैरियों का कुटुम्ब व कुल नाश को प्राप्त होवै। 'हुँ फट् स्वाहा' यह मन्त्र सत्रहवार पढ़कर कील को अभिमन्त्रित कर के दाव कर रखदे ?

शत्रु मृत्यु तुल्य होवे

आद्रा नचत्र के दिन निम्न वृच्छ के वादों को लाकर शत्रु के शयन मन्दिर में गाड़ देवे तो शत्रु मृत्यु समान हो जावे।

उसे फिर से उखाड़ लेवे तो फिर सुख पूर्वक चैतन्य हो जावे।

तथा सिरस वृक्ष का बाँदापूर्ववत् (आद्रा) नक्षत्र में लाकर शत्रु के घर में गाड़ देवे तो अवश्य ही शत्रु का नाश होगा।

ॐ फट् स्वाहा स्वाहा! इस मन्त्र से कील को ३१ बार अभिमन्त्रित करके दुश्मन के घर में गाड़े।

शत्रु नाशक मन्त्र

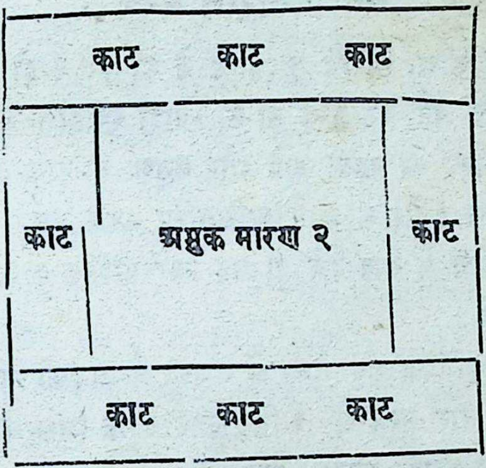

लोहे के कमल अथवा चिता की कारली स्याही से ११००० नित्य प्रति अर्क पत्र पर लिख कर अग्नि में जलावे तो शत्रु नाश हो। अमुक के स्थान पर शत्रु का नाम लिखना चाहिए।

तथा मन्त्र

ॐ है ही महा बिकराल भैरव ज्वाला वाय मम

शत्रु दह दह हनि हनि पच पच यन्मूलय ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ फट् स्वाहा स्वाहा।

श्मशान में भैंसा के चर्म पर बैठ कर ऊन की माला ले कर इस मन्त्र को जपे पश्चात् १। सेर सरसों को हवन करे सात रात्रि ऐसा करने से निश्चय शत्रु का नाश होता है।

—०—

सर्व विनाशन मन्त्र

ओम डं डा डि डि डूँ डूँ डें डे डों डों न हो अमुकम ग्रहण ग्रहण चट चट हूँ हूँ ठा ठा स्वाहा स्वाहा।

इस मन्त्र को पढ़ता जावे और मनुष्य के हाड़ की कील को एक एक हजार मन्त्र से अभिमन्त्रि करके उसके नाम से चिता के बीच में गाढ़ देवे तो वह ज्वर पीड़ित होकर नाश हो जाता है।

तथा पूर्व कहे हुए मन्त्र से मनुष्य के हाड़की कील को एक हजार वार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिस के घर में गाढ़ देवे तो उसका विनाश होता है।

—❀❀—

❀ मन्त्र ❀

वैरी की विष्टा और बीछी को लाकर एकत्रित करे फिर उसको एक ढके पात्र में रखकर पृथ्वी में गड्ढा खोदकर

उसमें रख देवे ऊपर मिट्टी डाल कर उसको रक्खे बैरी को पीड़ा होना शुरू हो जायगी और मरने लगेगा और यदि फिर उखाड़ लेवे तो फिर आराम हो जावेगा।

——०——

तथा च

दुश्मन के पाँव की मिट्टी को मङ्गलवार के दिन लाकर उसको गो मूत्र से सींच कर दुश्मन के नाम की एक पुतली बनावे फिर जहाँ कोई मनुष्य न हो ऐसे एकान्त स्थानमें नदी के तट पर वेदी निर्माण करके उस मूर्ति को स्थापित करे। फिर उस मूर्ति की छाती पर अति पनी धार वाला त्रिशूल गाड़ देवे। और उसकी बाईं ओर वेदी में काल भैरव की स्थापना करे नित्य प्रति यथोक्त विधि से बलिदान और पूजा करे फिर वहाँ ग्यारह ब्रह्मचारियों अर्थात् बालक तथा और जाति के बालकों को उत्तम अन्न पदार्थ के भोजन करावे, और खीर आदि मधुर मिष्ठान खिलावे। उस काल भैरव के बैरी की प्रतिमा के दाँये भाग में विघ्रय का चर्म बिछाय उस सन्मुख कड़वे तेल का एक अखण्ड दीपक जलावे। और उस पर दक्षिण मुख करके बैठ जावे और रात्रि के समय इस प्रयोग को करे और आलस्य छोड़ कर मन्त्र का बहुत ही सावधानी से जाप करे।

❀ मन्त्र ❀

ओ नमो भगवते महाकाल भैरवाये कालग्नि तेज से मेरत माराय माराय पोथय हुँ फट् स्वाहा ।

इस मन्त्र का दस हजार बार जाप करे परन्तु रात्रि में बहुत सावधानी से काम करके जपे । उन्तीस दिन में यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है और वैरी के प्राण लिये जाते हैं ।

साधक प्रयोग

गुरु देव बृहस्पति बोले—"राजन् ! साधक मन्त्रों का निर्णय मनुष्यको कुछ समय सोचकर करना पड़ता है । साधना हर तरह से की जाती है और जैसी भावना होती है वैसा ही काम करना पड़ता हैं । साधना बिना संसार के प्राणियों को सिद्धि नहीं मिलती है । इस सिद्धि के लिए कितनी ही बार कितने ही प्रयत्न किये जा चुके हैं और उन सबमें जो अधिक अमोघ सिद्ध हुए उनको ही साधक कहा जाता है । इसलिए हे राजन् ! जरा ध्यान से मेरे विचारों को सुनोगे और उन पर अमल करोगे तो निश्चय सफलता प्राप्त होगी ।

विश्व साधक तन्त्र

रविवार या बृहस्पति वार के दिन सहदेवी के रस में तुलसी के बीज का चूर्ण मिलाकर जो तिलक लगाता है उससे समस्त संसार मोहित हो जाता है।

विश्व साधक अञ्जन

बुद्धिमान मनुष्य को चाहिये कि वह ओाइस्वर के फूल की बत्ती बनाकर उसको मक्खन में जला कर रात्रि में काजल पारे। इस प्रकार का काजल नेत्रों में लगाने से समस्त संसार का मोहन होता है।

यह प्रयोग सबको बताना नहीं चाहिये क्योंकि यह देवताओं के उपयोग का है।

साधक तिलक

बेल का पत्र लाकर पहिले छाया में सुखा ले। फिर कपिला गौ के दूध में उस पत्र को मिलाकर उसकी गोली बना लेना चाहिये इस तिलक को लगाने वाले के ऊपर चरणमात्र में धन और प्राण से सारा संसार मोहित हो जाता है। इस को न्याय शाला में लगा कर जाने से न्यायाधीश उसकी तरफ हो जाता है।

विश्व साधक तिलक

—०—०—

अनार का फल, फूल, पत्ता, छाल तथा जड़ और सफेद घुंघची को एक में पीसकर उसका तिलक करने वाला समस्त संसार को अपनी ओर आकर्षित करके मोहित कर लेता है।

—:❀:—

साधक तन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्रायै सर्व जगन्मोहन कुरु कुरु स्वाहा

—❀❀—

❀ अथवा ❀

ॐ नमो भगवते कामदेवायै यस्य यस्य दृश्यो भवानि यश्च यश्च यम मुखम् पश्यति तम् मोहयुत स्वाहा स्वाहा।

यह मन्त्र दस हजार बार जप करने से सिद्ध होता है। सिद्ध हो जाने के पश्चात् प्रयोग करने के पूर्व एक सौ आठ बार इसका जप करके प्रयोग करे तो सिद्ध होता है।

—❀❀—

शत्रु साधक मन्त्र

ॐ वानरुतिद्रामुखो श्वेत दामी पहिला लाँचनी कोत्मम वीनी द्रव द्रव ओ३म् बम बम ओ३म् ठा ठा स्वाहा स्वाहा।

इतवार, मङ्गल को शत्रु के बाँए पैर के नीचे की मृतिका

लाकर उसकी पुतली बनावे उस पुतली को काले वस्त्र से वेष्टित कर उस वैरी का नाम लेकर आवाहन करे फिर व्याघ्र चर्म पर बैठ कर स्फटिक की माला से इस मन्त्र का जप करे तो वैरी मोहित हो जायगा।

महा साधक यन्त्र

राज दरबार में अधिकारों को तथा उच्च स्थान और अपनी बड़ाई चाहने के लिये उपाय।

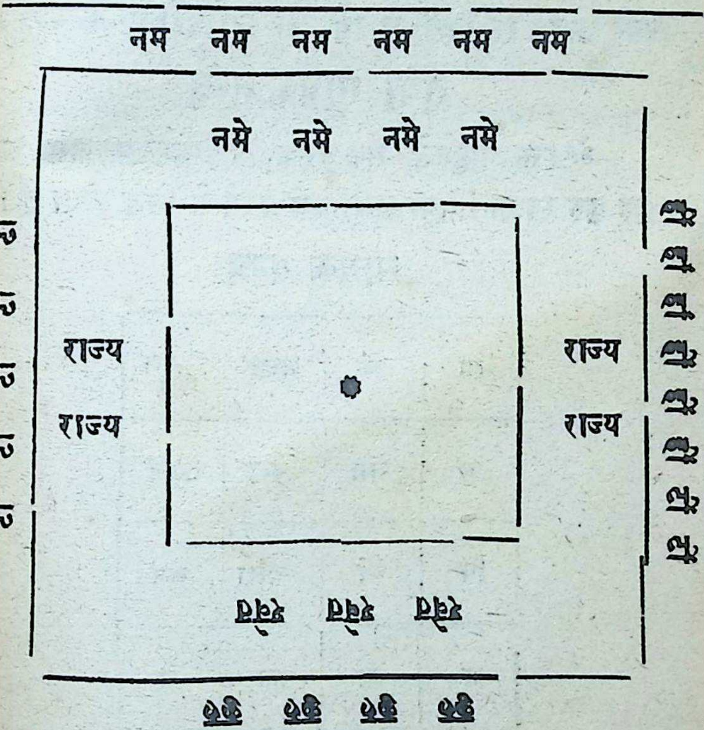

इस यन्त्र को दिवाली की रात्रि या ग्रहण में भोजपत्र पर लिखकर अनामिका का रुधिर हाथी का मद महावार का रस थूहर का फूल, गौरोचन मिलावे अष्टगन्धसे चमेली की कलम से लिखे फिर विधिपूर्वक यन्त्र को पूजन कर एक गरीब को खीर भोजन करावे। यन्त्र को चाँदी अथवा सोना ताँबा तीनों धातु के तावीज में भरकर दाँई भुजा पर बाँधे और नित्य धूप करे तो राज दरबार में अच्छा अधिकार पावे और सबसे ऊँचा रहे किसी से दबे नहीं यही महासाधक यन्त्र है।

तथा साधक तन्त्र

ॐ रक्त चामुण्डे सब जनक न मोहयम मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा। सवा लाख जप करने से सिद्ध होता है।

साधक यन्त्र

ला	चं	नक्षत्र	युग
भ	भन	चन्द्र	कमल
वि	चां	चौरा	नम
भ	ला	मट	ॐ

इस मन्त्र को कपूर और कस्तूरी से लिखे भोज पत्र पर लिखकर कण्ठ में बाँधे तो जो देखे उस पर वह मोहित हो जाय सभा में बाँधकर जाने से बड़ाई पावे। और जहाँ कहीं पर भी जावे तो सम्मान होवे।

सभा साधक तिलक

ॐ धवर्ण मार्तण्डा कुहुर मानाशियत धधयति तज्ज तज्ज तज्ज तमाहर हाँ हाँ हाँ। काँचनी वृत्त के नीचे की मुद्रा को उस स्थान की लावे जहाँ किसी की भी छाँह न पड़ी हो ले आवे और स्थान अपने पर मन्त्र पढ़कर तिलक कर जिस सभा में जावे और जो देखे देखते ही मोहित हो जावे।

❁ कामरू देश का जादू ❁

—:❁:—

सिद्धि क्या पदार्थ है

मनुष्य जिस वस्तु का अभिलाषी होता है उसको यदि वही पदार्थ मिल जावे तो उसको सिद्ध हो जाना अथवा प्राप्त हो जाना कहते हैं। किसी देश या देवता की उपासना कर उससे मन चाहा फल प्राप्त करना भी सिद्धि प्राप्त करना है। साधारण बोल चाल में ईश्वर भक्ति को भी सिद्धि या भक्ति के नाम पुकारते हैं। हमारी इस पुस्तक का सम्बन्ध उन सिद्धियों से है जो प्राचीन काल से शास्त्रोक्त कहावत में चली आती हैं। वह सिद्धियाँ आठ हैं जिनको क्रमशः १–अणिमा, २–महिमा, ३–लघिमा, ४–गरिमा, ५–प्राप्ति, ६–प्रकाम्य, ७–ईश्वास्त, ८–वशिश्वस्त कहते हैं। इन सिद्धियों के निम्नलिखित फल हैं जिनके प्राप्त होने से मनुष्य सिद्ध बन जाता है।

सिद्धियों के फल

(१) अणिया सिद्धि–०इस सिद्धि के सिद्ध हो जाने से

मनुष्य विचार करने पर अपने शरीर को चाहे जितना छोटा कर लेता है जिस प्रकार कि श्री हनुमान जी को लङ्का जाते समय सुरसा राक्षसी से भेंट हुई थी और उससे युद्ध होने पर उन्होंने अपना शरीर इतना छोटा कर लिया था कि सरलता पूर्वक उसके मुँह में आकर पेट में पहुँच गये थे।

(२) महिमा—इस सिद्धि के प्राप्त हो जाने से मनुष्य अणिमा सिद्धि के विपरीत अपने शरीर को चाहे जितना बढ़ा और मोटा कर सकता है। जैसा कि श्री तुलसीकृत रामायण में कई स्थान पर वर्णन हुआ है कि लङ्का में पहुँच कर श्री हनुमान जी का पूँछ बढ़ा लेना सुरसा के वदन में बैठ कर अपने शरीर को इतना बढ़ाना कि जिससे सुरसा की सारी हड्डियाँ टूट गयीं।

(३) लघिमा-इस सिद्धि के प्राप्त हो जाने पर मनुष्य भारी से भारी पदार्थ को अत्यन्त हल्का बना सकता है तथा अपने स्थूल शरीर को भी रुई के सदृश हल्का कर लेता है। जिस प्रकार श्री हनुमानजी पाताल लोक में अहिरावण के यहाँ मालिन के टोकरे में फूलों के ऊपर बैठ कर देवी के मन्दिर में पहुँच गये थे और मालिन को उनका बोझ ज्ञात नहीं हुआ था।

(४) गरिमा—इस सिद्धि को प्राप्त किया हुआ मनुष्य

छोटे से छोटे पदार्थ को चाहे जितना भारी कर सकता है। जैसे कि युवराज अङ्गद ने रावण की सभा में पैर अड़ा कर उसकी समस्त सैना को चिनौती दे दी थी कि जो कोई असुर उसके पैर को तिल भर भी हटा देगा तो मैं सीता को हार जाऊँगा और रामचन्द्रजी लौट जायेंगे।

इसी पर बड़े २ योधा उस पैर पर जूझ गये परन्तु पैर को तिल भर भी वहाँ से न हटा सके। इसी प्रकार सीता स्वयम्बर से महादेव के धनुष पर दस हजार राजाओं ने एक साथ जोर लगाया पर तिल भर भी नहीं हटा सके यह सब प्रभाव महिमा सिद्धि का है।

(५) प्राप्ति—प्राप्ति सिद्धि से मनुष्य को संसार की समस्त वस्तुयें अपने समीप दीखती हैं अथवा समस्त पदार्थों के पास प्राप्ति सिद्धि वाला मनुष्य स्वयं पहुँच जाता है। जैसे कुरुक्षेत्र के मैदान में कौरव और पाँडवों के बीच महाभारत हो रहा था और वहाँका समस्त वृताँत संजय हस्तिनापुर में अनुमानतः ३०० मील दूर पर बैठा हुआ जन्मान्ध धृतराष्ट्र को इस प्रकार सुना रहा था मानों साक्षात उस को देख रहा है।

(६) अकाम्य—इस सिद्धि के प्राप्त हो जाने से मनुष्य में अन्तर्ध्यान होने अर्थात् जमीन में घुस जाने और फिर बाहर निकल जाने की शक्ति उत्पन्न हो जाती है जैसा कि

रावण ने राम रावण युद्ध में कई बार सबको दिखलाया था अर्थात् लड़ते लड़ते वह कई बार पृथ्वी में समावेश होगया, और फिर आकर लड़ने लगा।

(७) ईशत्त्वत—इस सिद्धि के प्राप्त से स्वयं मनुष्य ईश्वर रूप हो जाता है और उसमें उत्पत्ति, पालन और संहार करने की शक्ति उत्पन्न हो जाती है।

(८) वशित्त्वत—इस सिद्धि के प्राप्त होने से पंच महाभूत अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोहादि को मनुष्य जीत लेता है अर्थात् उस पर पंचभूतों का प्रभाव नहीं रहता।

सिद्धियाँ प्राप्त करने की क्रिया

ऊपर लिखी हुई सिद्धियों का सम्बन्ध प्रायः योग विद्या से है। जब तक मनुष्य की योग क्रिया ठीक न होगी तब तक सिद्धियाँ प्राप्त नहीं हो सकती। सिद्धियों के प्राप्त करने के हेतु ऋषियों ने (१) आसन, (२) कुम्भ, (३) मुद्रा, (४) नाद, ये चार क्रियायें निकाली थीं।

आसनों से लाभ

आसनों से मनुष्य आरोग्य रहता है शारीरिक कोई रोग उसको नहीं सताता रक्त की वृद्धि होती है चचंल मन स्थिर हो जाता है। इसलिए योगासन द्वारा योगेश्वरों ने योग विद्या में आसनों को सर्व श्रेष्ठ माना है।

वैसे तो योगाचार्यों ने योग के चौरासी लाख आसनों का वर्णन किया है परन्तु उनमें से अब केवल दो ही आसनों को श्रेष्ठ माना गया है। जिनको सिद्धासन और पद्मासन कहते हैं यही दोनों आसन अष्ट सिद्धियों के सिद्ध करने में काम आते हैं।

—o—

सिद्धासन बाँधने की क्रिया

गुदा और लिंग के मध्य भाग में जहाँ कि योनि स्थान है बाँये पैर की एड़ी लगाकर बैठे और दाहिने पैर को लिंगेन्द्रिय के ऊपर रख कर और हृदय के पास ठोड़ी को मिलाकर भ्रु वा (भृकुटियों के मध्य भाग) को देखे। यह आसन बहत्तर नाड़ियों के बल का शोधक है। यदि मिताहार कर दस वर्ष तक इसी आसन को करता रहे तो मनुष्य बिना योगाभ्यास के पूरा सिद्ध बन सकता है।

———

पद्मासन क्रिया

बाँई जाँघ पर सीधे पैर को और सीधी जाँघ पर बाँये पैर को रख कर दोनों हाथों को पीठ के पीछे ले जावे फिर दाहिने हाथ से दाहिने पैर का अँगूठा और बाँये हाथ से बाँये पैर का अँगूठा पकड़ कर हृदय से चार अंगुल के

अन्तर पर चित्त को स्थिर कर नासिका की नोंक को देखे यही पद्मासन की क्रिया है।

पद्मासन के लाभ

इस आसन से शरीर के समस्त रोग दूर होते हैं। यदि आसन को बाँध कर मनुष्य अपने इष्टदेव का ध्यान धरे और अपान वायु को ऊपर चढ़ावे तथा प्राण वायु को नीचे की ओर ले जावे इस के प्रभाव से मनुष्य को आत्मज्ञान प्राप्त होता है। कारण कि अपान वायु और प्राण वायु के मिल जाने से मनुष्य को कुण्डलियों का यथेष्ट ज्ञान हो जाता है। इसके वाद एक प्रकार का प्रकाश आत्मा में ज्ञात होने लगता है वही प्रकाश सुष्मुणा नाड़ी द्वारा ब्रह्मरंध्र में पहुँचता है। जिससे चित्त में स्थिरता आ जाती है और मनुष्य समस्त सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है।

—:❀:—

कुम्भक क्रिया

इस क्रिया को प्राणायाम भी कहते हैं। योग विद्या में मन की चंचलता का रोकना मुख्य माना है इसलिये मन को स्थिर करने के लिये सब से प्रथम प्राण वायु को स्थिर करे।

—:०:—

उन्मनी भाव का अर्थ

सुष्मना नाड़ी में जब प्राण वायु का संचार होता है तब

उसको उन्मनी भाव कहते हैं। अर्थात् उसकी उन्मनी संज्ञा हो जाती है।

मनुष्य के शरीर में दस वायु हर समय चलते रहते हैं। उनको प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान, नाग, कूर्म, कृकिल, देवदत्त और धनंजय कहते हैं।

———०———

वायुओं का क्रम

(१) प्राणवायु—यह वायु हृदय में रहता है और वह स्वाँस के साथ बाहर आता है।

(२) अपान वायु—यह मूलाधार में रहता है तथा इसी के द्वारा मल मूत्र त्याग होता है।

(३) समान वायु—यह नाभि में रहता है यह शरीर को बलवान तथा यत्न साध्य बनाये रखता है।

(४) उदान वायु—यह कंठ में रहता है और शरीर की वृद्धि करता है।

(५) व्यान वायु—सर्व शरीर में रहता है तथा इन्द्रियों को अपने अपने काम के लगाता है।

पीछे वर्णन की हुई यह पाँच नाड़िया प्रधान हैं इसके अतिरिक्त पाँच और हैं।

(६) नाग वायु–इसके द्वारा मनुष्य डकार लेता है।

(७) कूर्म वायु–इस वायु से नेत्रों के पलक खुलते तथा बन्द होते हैं।

(८) कृकिल वायु–इसके द्वारा मनुष्य छींक लेता है।

(६) देवदत्त वायु–इस वायु से मनुष्य जभाई लेता है तथा निन्द्रा, आलस्य का बोध होता है।

(१०) धनंजन वायु–यह वायु सबसे अधिक बढ़ी चढ़ी है यह मनुष्य के मर जाने पर भी चार घड़ी तक उसके शरीर में ठहरती रहती है।

—o—

वायुओं के स्थान

प्राणवायु–मुँह, नासिका, हृदय, नाभि, और कुण्डलिनो के चारों ओर पादोगुष्ट में रहती है।

अपान वायु–गुह्य, लिंग, उरू, जंघ, उदर, पेड़ू, कटि व नाभि में रहता है।

व्यान वायु–कर्ण, नेत्र, कंठ, नाक, मुँह, कपोल और मणि बंध में रहता है।

उदान वायु–सर्व संधियों तथा हाथ पैरों में रहता है।

सामान वायु—सर्वाङ्ग शरीर में रहता है।

प्राणायाम का समय

योगेश्वरों ने प्राणायाम करने के चार समय रक्खे हैं। सूर्योदय काल, मध्यान्ह काल, सूर्यास्त काल और अर्धरात्रि।

प्राणायाम के भेद

प्राणायाम के तीन भेद हैं, जिनको उत्तम, मध्यम और कनिष्ट कहते हैं।

कनिष्ट प्राणायाम

जिस प्राणायाम के करने में ब्यालीस विपल लगते हैं वह कनिष्ट प्राणायाम है।

मध्यम—जिसके करने में चौरासी विपल लगते हैं और कम्पन आ जाती है उसको मध्यम प्राणायाम कहते हैं।

उत्तम—जिस प्राणायाम के करने में एक सौ पच्चीस विपल लगते हैं तथा प्राण वायु ब्रह्मरंध्र में पहुँच जाता है वह उत्तम प्राणायाम है।

प्राणायाम करने की विधि

जिस समय प्राणवायु ऊपर को चढ़ाते हैं उस समय

अपान वायु में एक प्रकार का धक्का लगता है। उसको सहन कर प्राण वायु को बराबर जब तक चढ़ाता रहे तबतक कि वह ब्रह्मरन्ध्र में न पहुँच जावे। फिर उसको धीरे धीरे उतारे प्राणायामके करने में शीघ्रता न करे। जो मनुष्यप्राणायाम को विधवत करता है वह सदैव निरोग रहता है। प्राणायाम के करने में जितनी देर लगती है उतनी देर के प्रमाण से धारणा ध्यान और समाधि तीन रूप बनजाते हैं इन तीनों को एक जगह पर इकट्ठा कर देने का नाम संयम है।

प्राणायाम विभाग और उनसे लाभ

सूर्य---योगासन से बैठ कर पिंगला नाड़ी (सूर्य) द्वारा बाहर के पवन को खींच कर भीतर रोके और (इड़ा) चन्द्र नाड़ी द्वारा धीरे २ बाहर निकाले इससे अस्सी प्रकार के वातादि रोगों का नाश हो जाता है।

प्राणायाम विभाग के अनेक भेद हैं परन्तु स्थानाभाव के कारण सबका वर्णन नहीं हो सकता केवल सूर्याङ्ग का ही ऊपर वर्णन किया है। इसके आगे सूर्य विभाग के उपभेदों का वर्णन करेंगे तथा उनकी क्रिया और लाभ का भी साथ साथ वर्णन होगा।

सूर्याङ्ग उपभेद क्रिया, और लाभ

सूर्याङ्ग के सात भेद हैं जिनको [१] उज्जायी [२]शीतकारी [३] शीतली [४] मस्तिका [५] भ्रामरी [६] मूर्छा [७] प्लावनी कहते हैं।

उज्जायी–मुँह को बन्द करके दोनों नाड़ियों (इड़ा पिंगला) द्वारा बाहर से पवन को खींच कर शरीर में एक प्राणायाम की अवधि तक रोके रहे और इड़ा नाड़ी द्वारा धीरे २ बाहर निकाले इससे सब प्रकार के कफज्य रोगों का नाश हो जाता है।

शीतकारी–मुख द्वारा बाहर से पवन को खींचे और शरीर के अन्दर रोके फिर दोनों नासिका छिद्रों द्वारा बाहर निकाले इससे कांति और बल बढ़ता है।

शीतली–जीभ को बाहर निकाल कर धीरे २ हवा को भीतर खींचे और शरीर के अन्दर रोक कर धीरे २ बाहर निकाले इससे जिगर, तिल्ली, जुकाम, पित्त ज्वर दूर हो जाते हैं।

मस्तिका–पद्मासन बाँध कर मुख का संयम करे अर्थात् मुख द्वारा वायु को खींच कर शरीर के अन्दर ठहरावे नासिका के एक छिद्र द्वारा शीघ्रता से बाहर निकाल दे। इससे कपाल सिद्ध होता है।

भ्रामरी—भृङ्ग के शब्द के समान वायु को भीतर खींचो और शरीर में रोको और भ्रमरी के शब्द सहित बाहर निकालो इससे श्रवण शक्ति बढ़ती है।

मूर्छा—पूरक प्राणायाम के अन्त में जलन्धर बन्ध बाँध कर धीरे धीरे वायु को बाहर निकाले। इस प्राणायामसे सर्व प्रकार का सुख मिलता है। तथा मनुष्य निरोग रहता है।

प्लावनी—मुँह और नासिका द्वारा शरीर में वायु को भरो और उसे प्राणायाम की अवधि तक शरीर में ठहराओ ऐसा करनेसे जल में तैरने की शक्ति पैदा हो जाती है।

----:※:----

पूर्व जन्म का हाल जानना

साक्षात्कारणम् पूर्वजाति ज्ञानम [यो० सू० १८]

संस्कारों के साक्षात् करने से पूर्व जन्म का ज्ञानहोजाता है। जैसे यदि कोई मनुष्य कसरत करे तो सब मनुष्यों को उसका शरीर पहलवानों के सदृश दीखेगा। वैसाही शुभाशुभ कर्म जो पूर्व जन्म में किए हैं उनके कारणसे अन्तः करण में वैसे ही संस्कार हो जाते हैं। संयम द्वारा साक्षात् करने में इस बात का पता चल जाता है कि पूर्व जनम में अमुकयोनि में अमुक कर्म किए थे। इसके कारण यह फल मिला।

दूसरे के मन की बात पहिचानना

प्रेत्यचश्च परिचित ज्ञानम् [यो० वि० सूत्र]

इस सूत्र द्वारा मनुष्य दूसरे के मनका गुप्त भेद क्षण भर में जान लेता है कारण कि पराये मुख की आकृति आदि देख कर जब योगी उस की बुद्धि वृत्ति में धारणा ध्यान समाधि तीनों का संयम साक्षात् करता है तब योगी को पराये चित्त का ज्ञान हो जाता है। अर्थात् फल मालूम हो जाता है कि इसका चित्त राग युक्त है या विराग युक्त, परन्तु उसके विषय का ज्ञान नहीं होता क्योंकि उसने विषय में संयमनही किया। यदि विषय में भी संयम किया होता तो उसके विषय का भी ज्ञान हो जाता।

—:❁:—

अन्तर्ध्यान होना

कामरू संयना त्तदग्राह्य शक्ति स्तम्भे (यो० वि० सूत्र २५)

चक्षु प्रकाशा ऽसंप्रयोगे ऽन्तर्ध्यानम्।

देह के रूप में संयम करनेसे योगी की ग्राह्य शक्ति थम जाती है तथा आँखों के प्रकाश से संयोग नहीं रहता उस समय उसको अन्तर्ध्यान होने की शक्ति उत्पन्न हो जाती है।

जब योगी अपने देह के रूप चक्षु ग्राह विषय में संयम कर सन्देह ग्राही शक्ति रोक देताहै तब दूसरे मनुष्य कीआँखें

योगी के शरीर पर काम नहीं करती अर्थात् योगी को कोई देख नहीं सकता चाहे वह सब के सामने ही खड़ा क्यों न रहे। जिस प्रकार आँखो में देखने की शक्ति है उसी प्रकार दीखने वाले पदार्थ में भी देखने की शक्ति है। जब यह दोनों शक्तियें एक होती हैं। तब किसीको कुछ दीखता है। यदि इन दोनों शक्तियोंमेंसे एक शक्ति भी कम होजाय तो कुछ भी दिखाई नहीं देगा। जैसे अन्धे की आँखें बनी हुई हैं परन्तु उसमें देखने वाली शक्ति नहीं है इस लिए उसकोकुछ भी दिखाई नहीं देता। इस पर भगवान व्यास का मतहै कि यदि योगी अपने शब्द में संयम करके शब्द की ग्राह्य शक्ति को रोक दे तो उसका शब्द किसीको सुनाई नहीं देगा सर्व शक्तिको देने से उसको कोई छू नहीं सकता तथा रस शक्ति को रोक देने से शरीर का स्वाद मालूम नहीं होता। गंध शक्तिको रोक देने से योगी की गन्ध किसी को मालूम नहीं होती है कहने का तात्पर्य यह है कि रूप संयम करने से योगी अपना रूप छिपा सकता है।

योगी की अन्तर्ध्यान विभूति पर मनुष्य आश्चर्य करते हैं सो ठीक है क्योंकि योग विद्या में यही गुण है यथार्त में आश्चर्य योग्य है। देखिए यूरोप के विद्वानों ने शब्दों को पकड़कर फोनोग्राफ में भर दिया बिना तारों के वायु से समाचार भेजने की रीति निकाली, डाक्टरों ने क्लोरोफार्म द्वारा सर्व ज्ञान की इन्द्रियों को ज्ञान शून्य कर दिया। ऐसे

ही योगी धारणा ध्यान समाधि रूप संयम करने से अन्तर्ध्यान होने की शक्ति उत्पन्न कर लेता है।

—:※:—

हाथी के समान बलवान होना

बलेषु हस्ति बलदीनि यो० वि० सूत्र २३

हाथी के बल में संयम करने से हाथी का बल प्राप्त होता है। किसी प्रकार सिंह या अश्व के बल में धारणा, ध्यान समाधि रूप का संयम साक्षात्कार परयन्त करने से जिस बल का संयम किया है वही बल संयम करने वालेको प्राप्त होगा अथवा उसका बल खिचकर संयम करने वाले में आजायेगा। इन्हीं बलों में संयम करने से पम्पापुर के राजा बालि बानर में दूसरे मनुष्य का आधा बल खीचने की शक्ति थी इसीलिए रामचन्द्र ने उसे छिप कर मारा था।

——:o:——

देह का हलका करना

काया काशयोः सम्बन्ध संयमाल्लुघुतूल।

समापत्तेश्चाकाश गमनम् [यो० वि० सूत्र ४१]

अपने शरीर और आकाश तत्व में संयम करने से रुई के फोए के समान मनुष्य में हल्का हो जानेकी शक्ति उत्पन्न हो जाती है। रुई के फोये में समापित संयम द्वारा आकाश में गमन सिद्ध होती है। क्योंकि देह का सम्बन्ध आकाशसे

है। और आकाश एक शून्य पदार्थ है इसलिए जो योगी इस सम्बन्ध में संयम करता है अथवा रुई के फोए आदि में संयम करके चित्त को तदाकार कर देता है वह मकड़ी के जाले के सहारे चल सकता है तथा सूर्य की किरणों पर चल कर आकाश में विचर सकता है।

हवा में उड़ जाना

अड़मा सिद्धि के प्रताप से मनुष्य आकाश में गवन कर सकता है हवा में उड़ सकता है। गगन भेदीय समस्त हालात ज्ञात कर सकता है।

योग दर्शन का मत है कि पक्षियों की उड़ान में संयम करने अथवा पक्षियोंकी उड़ान में चित्त की प्रकृतियों के जोड़ देने से मनुष्य इतना पराक्रमी हो जाता है कि जहाँ चाहे वहाँ हवा में उड़ कर पहुँच जावेगा अथवा उसके चलने की रफ्तार हवा के अनुसार तेज हो जावेगी यह अणिमा सिद्धि है।

यह क्रिया मन के विचारों पर अपना नैतृत्व रखती है मनुष्य का विचार जितना तेज चलने वाला होगा उतना ही शीघ्र चलने का बल उसको प्राप्त होगा।

प्रायः देखने में आया है कि रेल का इन्जन, वायुयान, मोटर कार सबसे तेज दौड़ने वाले हैं परन्तु इनसे भी तेज

रफ्तार बिजली की है कि जो एक सैकिण्ड में सैकड़ों मील दूर पहुंच जाती है। उदाहरणार्थ अलीगढ़ के टेलीग्राफ आफिस को लीजिये कि टेलीग्राफ मास्टर ने जहाँ टेलीग्रामफ की डेमी पर पहुँच कर हाथ से जरा उसको खटखटाया कि खटखटाते ही कलकत्ते का टेलीग्राफ मास्टर सचेत हो गया और उसने फौरन ही उत्तर दे दिया। इससे भी तेज चलने वाले टेलीफोन हैं कि जो बात की बात में सैकड़ों कोस तक बैठे हुए मनुष्य से बातें करा देता है। इन सबके होते हुए हवा इन सबसे अधिक तेज है देखते २ सैकड़ों कोस पहुँच जाती है। इन सबसे अधिक तेज चलने वाली एक शक्ति मनुष्य के शरीर में इतनी बलवान है कि रेल हवा इत्यादि उसकी रफ्तार को देख कर मात खाती हैं। उस शक्ति को विचार शक्ति कहते हैं। इस विचार शक्ति द्वारा अलीगढ़ में बैठा हुआ मनुष्य क्षण मात्र में विचार उत्पन्न होते ही कलकत्ते पहुँच जाता है और वहाँ की निःसंकोच सैर करने लगता है। जिस स्थान पर हवा भी अपना प्रभाव नहीं जमा सकती उस पर विचार शक्ति क्षण मात्र में अपना आधिपत्य जमा लेती है।

इस विचार शक्ति का संयम करना ही हवा में उड़ जाने का बल रखता है तथा हवा में चित्तवृत्तियों का निरोध करना भी हवा में उड़ जाने का प्रभाव रखता है।

———:*:———

भारी होजाना

स्थावर जंगमादि जितने भी पदार्थ हैं उन सब में से भारी पदार्थ को ले लीजिये अथवा पर्वत, पत्थर, शिला या वृक्षों में से किसी एक वस्तु को लीजिए इनमें से जिस वस्तु का संयम किया जावेगा उसी का बल प्राप्त हो जावेगा।

इन पदार्थों में वृक्षों को हवा उखाड़ कर फेंक देती है छोटे २ वृक्षों को मनुष्य जड़ से उखाड़ कर फेंक देता है। पत्थर की शिला अथवा पत्थर को चार छः मनुष्य मिल कर उठा सकते हैं परन्तु पर्वत एक ऐसी चीज है कि यदि इसको सहस्रों मनुष्य मिल कर एक साथ जोर लगावे तो भी टस से मस नहीं होगा इसलिए पर्वत में संयम करने से मनुष्य पर्वत के समान भारी हो सकता है।

रामायण में गोस्वामी तुलसीदास ने अङ्गद रावण संवाद पर लिखा है कि अङ्गद के पैर को पृथ्वी ने पकड़ लिया था इसलिए रावण के योधा तिल भर भी न हटा सके। यह सम्भव है कि पृथ्वी की आकर्षण शक्ति से वीर अङ्गद ने अपने पैरों की आकर्षण शक्ति से मिला दिया होगा।

इसलिए पैरों की आकर्षण शक्ति बढ़ा लेने से वह इतना भारी होजाताहै कि जहाँ उसको बिठा दिया जाय फिर वहाँ से हजारों मनुष्यों के बल लगाने पर भी तिल भर नहीं हटा सकता।

तारों का ज्ञान करना

—:※:—

चन्द्रतारा व्यूह ज्ञानम्

आकाश में जितने तारे हैं वह सब पृथ्वी रूप में माने गये हैं। युरोपियन साइन्स वेत्ताओं ने यहाँ तक कहा है कि चन्द्र सूर्य इत्यादि तारा गणों के भीतर जल, वायु, पहाड़, नदी इत्यादि सब विद्यमान हैं परन्तु वह अधिक दूर होने के कारण दृष्टि से दिखाई नहीं देते। आजकल प्रायः यह सुनने में आता है कि मंगल नक्षत्र पृथ्वी के पास आ लिया है और कुछ वर्षों बाद पृथ्वी पर उतर आवेगा। वहाँ की बाबत साइन्स वाले कहते हैं कि वहाँ की नदियों में पानी नहीं है। केवल रेता दिखाई देता है। इन बातों का अनुमान सही सही उसी समय हो सकता है जब मनुष्य आकाश में संयम करे।

योगी जन कहते हैं कि ध्रु व में संयम करने से आकाश और तारागणों का ज्ञान हो जाता है अर्थात् भृकुटियों के मध्य भाग में चक्षु ज्योति मिला कर उसी में धारणा, ध्यान और समाधि लगादे।

इन दोनों सिद्धान्तों से सिद्ध होता है कि आकाश और तारों का संयम भी गगन भेदीय समस्त बातों को बताने वाला है।

—:०—

आत्मा और उसकी शक्ति

मनुष्य देह में आत्मा ही वह दीपक है जिसकी अलौकिक शक्ति हमेशा जलती ही रहती है और आत्मा को प्रकाशवान बनाए रखती है। सुकार्य करने वाले प्राणी संसार में सज्जन रूप जन्म धारण करते हैं और मरते हैं। मगर कुछ आत्मायें जो अच्छे संस्कार वाली नहीं होती वह भूत तथा जिन्न जैसी कष्टदायक आत्माओं में रहती हैं।

दूषित आत्मायें मनुष्य देहधारी से अधिक शक्ति शाली होती हैं। उनका एक मात्र कारण यह है कि उनके शरीर तो होता ही नहीं और केवल आकार ही होता है। उनके हल्के फुल्के मन के कारण वह वायु की तरह वेगवान् और प्रकाश की भाँति द्रुतगामी होते हैं। जो काम मनुष्य नहीं कर पाता वह यह भूत प्रेत मिनटों में ही कर डालते हैं।

—❀❀—

भूत प्रेतादिक

भूत प्रेत कलुषित आत्मायें होती हैं अतः उनके क्रोध और कष्ट मनुष्यों पर हमेशा भार स्वरूप चढ़े रहते हैं। वह अधिकतर स्त्रियों को अपना शिकार बनाते हैं और उन पर हावी हो जाते हैं। अशिक्षित वर्ग में अक्सर देखा गया है कि भूत और प्रेत का प्रकोप सहज ही किसी न किसी मनुष्य पर बता देते हैं। लोग फौरन ही कह देते हैं पीपल के पेड़

के नीचे पेशाब करने से भूत सवार होगया इत्यादि ।

—❀❀—

आत्मा का कोप उतारना

कोई कोई क्रोधी आत्मा कठिन कोप कर जाती है अथवा उतर २ कर फिर फिर के पात्र पर प्रभाव डालती हैं और कभी कभी अनेक व्याधायें डाल देती है इससे भयभीत न होना चाहिये दृढ़ता और साहस के साथ ईश्वर भजन में लीन हो जाओ आत्मशक्ति ढीली पड़ जायगी तथा सब व्याधायें हट जायेंगी । फिर उससे इच्छानुसार कार्य करा सकते हो ।

—❀❀—

प्रयोग की तीसरी विधि

नियत समय पर करामाती मेज का धूप दीप देकर अपने दो चुने हुए पात्रों को बुलाओ। चाहे वह स्त्री हो या पुरुष इन दोनों की उम्र अठारह वर्ष से कम न हो । दोनों पात्रों के आजाने पर प्रयोग आरम्भ करो । प्रयोग करते समय सिद्ध का मुँह उत्तर की तरफ रहे फिर क्रमानुसार मेज पर बैठ जाओ । थोड़े काल में आत्मा का आना प्रारम्भ होगा परन्तु सिद्ध और पात्र दोनों निम्न लिखित आकर्षण मन्त्र का जाप करते जाय—

मन्त्र—ओं मल मृत्यु जप मेये

आकर्षण मन्त्र का प्रभाव

आकर्षण मन्त्र प्रत्येक पदार्थ के खींचने का बल रखता है इसके प्रमाण में विश्वामित्र मुनीश्वर ने राजा त्रिशंकु को आकाश मार्ग से जीवित स्वर्ग भेजने का उपाय किया था इसका इतिहास में इस प्रकार वर्णन है कि उक्त राजा को विश्वामित्र मुनि ने बाण पर रख कर आकाश में फेंका था परंतु पृथ्वी की आकर्षण शक्तिने उसको ऊपर नहीं जाने दिया उधर आकाश शक्ति बलवती हो गई जिसके कारण राजा बीच ही में लटका रहा पुराणों में लिखा है कि देव गण उसको ऊपर नहीं आने देते थे हम इसका सही अनुमान नहीं कर सकते केवल इतना कहना यथेष्ट हैकि पृथ्वी की आकर्षण शक्ति उसको ऊपर नहीं जाने देती थी और मध्य में लटके हुये राजा के मुँह से लार टपकती थी उसकी नदी बह निकली जो कि बङ्गाल में कर्मनाशा नदी के नाम से प्रसिद्ध है इसमें स्नान करने से सब सुकृति नाश को प्राप्त होते हैं।

रामायण के देखने से पता चलता हैं कि मन्त्र द्वारा अहिरावण को रावण ने पाताल से लंका में बुला लिया था करामाती मेजमें भौतिक आकर्षण पदार्थ भरे रहने के कारण आत्मा खिंच कर उसमें प्रवेश कर जाती है।

तन्त्रिक के नेत्रोंकी आकर्षण शक्ति बलवती होनेके कारण आई हुई आत्मा को नेत्र शक्ति अपनी ओर खींच लेती है।

यह बात माननीय है कि निर्बल सदैव बलवान में मिला करते हैं। किसी बलवान आत्मा का प्रभाव आकर्षण शक्ति रहित पात्रों पर नहीं पड़ता है इसी लिये आकर्षण शक्ति का बढ़ाना आवश्यकीय है।

—:०:—

प्रयोग का वर्जित समय

जिस समय अधिक वर्षा हो गई हो, शीत अधिक पड़ रहा हो, अधिक गर्मी पड़ रही हो, बादलों की गड़गड़ाहट तथा बिजली की कड़क व चमक के समय प्रयोग न करे अधिक शोर गुल मचाना हानिकारक है।

—०—०—

प्रकृति के अनुसार आत्मा का आना

सिद्ध का जैसा विचार होगा वैसी ही आत्मा मेज में प्रवेश करेगी अथवा जैसी प्रकृति की सिद्धि होगा वैसी ही आत्मा उससे बात चीत करेगी क्यों कि आकर्षण शक्ति और प्रकृति दोनों का नियम ऐसा ही है कि वह जैसे को तैसा बना देते हैं। जैसे जुआरी में जुआरी और शराबी में शराबी मनुष्य आकर मिल जाते हैं वैसा ही सम्बन्ध सिद्ध और आत्मा का है।

इन सब बातों का ध्यान रखते हुए मेस्मरेजम के नियमों

का पालन करे, इसके बाद मन्त्र सिद्ध करने का प्रयत्न करे मन्त्र सिद्ध हो जाने पर मृतक आत्मा को मेज में बुलाकर उससे वार्तालाप करे कार्य समाप्त होने के पश्चात् सच्चिदानन्द ईश्वर का ध्यान कर यंत्र को उठा कर रख दो।

मैस्मरेजम द्वारा चिकित्सा

दुःख या कष्ट को रोग कहते हैं यह तीन प्रकार के होते हैं आध्यात्मिक, दैविक, दैहिक इन तीनों प्रकारके रोगोंकी निवृत्त योग विद्या द्वारा हो सकती है जिसका सविस्तार वर्णन ऊपर हो चुका है। महात्मा 'कँपिलदे' का कथन है कि यह तीनों प्रकार के कष्ट पुरुषार्थ से ही सदैव निवृत्ति हो जाते हैं।

त्रिविध दुःखात्यन्त निवृत्त अत्यन्त पुरुषार्थः—

योग विद्या ही मनुष्य का पूर्ण पुरुषार्थ है योग विद्या ही द्वारा भविष्य के रोगों का भी त्याग हो सकता है अत्यन्त पुरुषार्थ ही मोक्ष है महर्षि 'पातंजलि' का कहना है कि--

"हेमन्द्र' मनागतम्"

अर्थात् जो दुख आने वाला है उसको पहले से ही त्याग दिया जाय अथवा जिन दुक्खों को अभी नहीं देखा है यह त्यागने योग्य है। योगभ्यास में तीनों प्रकार के रोगों का भय लेश मात्र नहीं रहता आध्यात्मिक रोगों का घनिष्ट सम्बन्ध अपनी आत्मा से है अर्थात् दुःख सुख का आना तथा

भूख प्यास का लगना, शोक, भय, इत्यादि इनका मूल कारण है इन्हीं कारणों से ज्वर, कफ, खाँसी, तथा फोड़ा फुन्सी इत्यादि निकलते हैं इन्ही रोगों का नाम आध्यात्मिक रोग है जो योग के षट कर्म द्वारा निवृत्त हो जाते हैं। 'भौतिक' रोग दूसरे प्राणियों द्वारा हुआ करते हैं जैसे भूत प्रेतों का डर दिखाना सर्प, बिच्छू, आदि हिंसक जानवरों द्वारा कष्ट होना चोर, वैरियों का भय इत्यादि रोगों की निवृत्ति शक्तियों को बलवती बनाने से हो जाती है। दैविक वह रोग हैं जो अकस-मात होते हैं जैसे बिजली का गिरना दीवार में दबकर मर जाना,पेड़ आदिसे गिर पड़ना इत्यादि रोग। य योगसिद्धियों द्वारा अथवा समाधि द्वारा निवृत्त हो जाते हैं। इस तीनप्रकार के रोगों में से आध्यात्मिक रोगों की चिकित्सा मेस्मरेजम द्वारा की जा सकती है।

---o---

दर्द रोग को दूर करना

जिसके नेत्र तथा हाथों की आकर्षण शक्ति बलवती हो वही साधक दर्दों के इलाजमें सफलता पावेगा कारण कि इस उपचार में प्रथम निन्द्रा का बुलाना आवश्यकीय है क्यों कि निन्द्रा आ जाने से रोगी को शान्ती मिल जाती है और उसमें वह अपने रोग को भूलजाता है।

यक्षिणी साधन

यच्छिणी सिद्धि साधन से लाभ

यच्छिणी सिद्धि हो जाने से कार्य बड़ी सरलता पूर्वक हो जाता है बुद्धि तीव्र हो जाती है मनुष्य कठिन से कठिन समस्याओं को च्चण मात्र में पूर्ति कर सकता है। दूसरे के मन का गुप्त हाल पहिचान जाता है जो कुछ मुँह से कहता है वह सत्य २ होता है। अनेक प्रकार के चमत्कार यच्छिणी द्वारा दिखाकर मनुष्यों को अपने वश में कर लेता है। संसार में कोई उसका दुश्मन नहीं रहता सब उसको मान और प्रतिष्ठा से बुलाते हैं।

यच्तिणियों के नाम

यच्छिणी चौदह प्रकार की हैं यथा-

१-महा यच्छिणी २-सुन्दरी ३-पद्मिनी मनोहारी ४--कनकयच्णी ५--कामेश्वरी ६--रतिप्रिय ७-- ८--नटी ९--अनु-

रागिनी १०–विशाला ११–चन्द्रिका १२–लक्ष्मी १३–शोभना १४–मर्दना ।

—❀❀—

यक्षिणी सिद्ध करने का समय

महर्षि दत्तात्रेया का मत है कि आषाढ़ सुदी पूर्णमासी शुक्रवार के दिन अथवा गुरुवार के उदय में क्षौर कर्म (हजामत) बनवा कर और पवित्र हो कर यक्षिणी साधन क्रिया करे । अथवा श्रावण कृष्ण पड़वा के दिन चन्द्र बलि होने पर साधन क्रिया प्रारम्भ करे ।

—❀❀—

यक्षिणी साधन क्रिया

शंकर आराधना

निर्जन बन में विल्व पत्र अथवा केले के वृक्ष के नीचे बैठ कर प्रथम श्रीशंकर महादेव की आराधना निम्नलिखित मन्त्र से करे ।

ॐ रुद्राय नमः स्वाहः ॐ त्रयम्बु स्वाहः ।
ॐ यक्षराजः स्वाहः ॐ त्रयलोचनाय स्वाहः ॥

क्रिया–एकाग्र चित्त होकर इस मन्त्र का पाँच सहस्र बार जाप निर्जन बन में करे तत्पश्चात् घर पर आकर खीर के भोजन करे और क्वारी कन्याओं को खीर के भोजन करावे ।

दूसरी क्रिया—वट वृक्ष या पीपल की जड़ में शिवजी की स्थापना करके जल चढ़ावे और एकाग्र चित्त से पाँच सहस्र मालायें उक्त मन्त्र को जपे।

———०———

कुबेर आराधना मन्त्र

ॐ कुबेराय नमः

ॐ यक्षराज नमस्तस्मैः शंकरो प्रिय बान्धवः।
काला कालै महा काले यक्षिणी वशगाँ कुरु॥

क्रिया—इस प्रकार श्री कुबेरजी की आराधना एक सौ आठ बार उक्त मन्त्र से करे तत्पश्चात् यक्षिणी साधन क्रिया करे।

साधन नियम

सदैव हल्की खीर का भोजन करे, सत्यवादी और ब्रह्म-चर्य से रहे दिन में कदापि न सोवे तथा एक बार भोजन करे मौन व्रत धारण करे रात्रि को कुछ भी न खावे, भूमि पर सोवे। रक्त चन्दन विशेष रूप से लगावे और श्वेत रङ्ग के पदार्थ का सेवन करता रहे।

——❀❀——

(१) महा यक्षिणी सिद्धि

सिद्धि करने का समय

यह यक्षिणी रात्रि के तीसरे पहर में सिद्धि की जाती है रात्रि को नियमित समय पर श्मशान भूमि में जाने और सुष्मणानाड़ी के चलते समय वट वृक्ष के ऊपर चहूँ ओर एकाग्र चित्त करके नीचे लिखे मन्त्र का पाँच हजार बार जाप नित्य प्रति करे।

साधन मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं महा यक्षिणी प्रदात्रीनमः।

महायक्षिणी का आगमन

यह यक्षिणी अनेक रूप धारण कर साधक को भय दिखाती है आते समय भैंसे का रूप धारण कर लेती है। जिस समय यह आती है प्रथम अंधकार और आँधी लाती है हवा बड़े वेग से चलती है। बादल की घटा इतनी जोर की चारों ओर उठती हुई दिखाई देती है कि हाथों हाथ कुछ नहीं दिखाई देता। फिर एक दम उजाला हो जाता है। फिर काले रङ्ग के बाल बखेरे हुए एक स्त्री नाचती हुई आती है जिसके दाँत आगे को निकलते हुए शिर पर लाल रङ्ग का कपड़ा लिपटा हुआ मस्तक पर सिन्दूर का टीका लगा हुआ जिसकी सूरत देखते ही यह अनुमान हो जाता है कि हूबहू काल की यही निशानी है।

ऐसे अनेकों उपद्रव एक सप्ताह तक बराबर होते रहते हैं। यदि साधक भयभीत न हुआ तो फिर महा यक्षिणी अपना दर्शन देती है।

महायक्षिणी का स्वरूप

पीत वर्ण वाली, तीस वर्ष की आयु वाली, श्वेत रङ्ग की साड़ी पहिने हुए, जिस पर मोतियों की झालर लगी होती है मस्तक पर कस्तूरी और केशर का बिन्दा लगा होता है। एक हाथ में कमल का पुष्प दूसरे में तीर कमान धारण किए हुए साधक के सामने दिखाई देती है उस समय साधक जो जबरन माँगता है वही देती है।

प्रभाव—भयभीत हो जाने पर पागल बना देती है इससे भय न करना चाहिए सिद्ध किया हुआ धन सुकर्म में लगाया जाय। कुकर्म में लगाने से सिद्धि निस्फल हो जाती है।

—०—

(२) सुन्दरि यक्षिणी

सिद्धि करने का समय

यह यक्षिणी रात्रि के दूसरे पहर में सिद्धि की जाती है। इसको श्मशान भूमि में अस्थियों पर बैठ कर सिद्ध करे और मुर्दे की चिता पर पके चावल इसके बलिदान में दे। जब यह प्रसन्न होती है तब अपने बलिदान को स्वयं उठा कर ले जाती है और उसको भक्षण कर लेती है।

सिद्धि करने का मन्त्र

ऊ ह्रीं क्लीं यक्षिणि सुन्दरियनमः ।

क्रिया–इस मन्त्र को पाँच हजार बार जाप करे और प्रत्येक मन्त्र के साथ घृत और कपूर की आहुति दे ।

—❀❀—

आहुत हवन कुण्ड बनाना

बिसाषा नक्षत्र में रविवार के दिन कपिला गाय के गोबर में सिंदूर मिला कर त्रिभुजाकार चौका दे उसके मध्य में त्रिभुजाकार एक बलिश्त नीचा गड्ढा खोदे उसकी सतह पर सिंदूर के पाँच बिन्दु इस प्रकार लगावे कि चारों ओर चार बिन्दु रहें और मध्य में एक आवे उसके ऊपर क्वारे मुर्दे की हड्डियों को चुन कर अग्नि दीपक करे उसमें कपूर की आहुति उपरोक्त मन्त्र के साथ दो इसके पश्चात् यक्षिणी प्रगट होगी ।

—❀❀—

सुन्दरि का आगमन

जिस समय यह आती है चारों ओर धुवें का अन्धकार हो जाता है साधक को कुछ दिखाई नहीं देता कभी ऐसा भी होता है कि अग्नकुण्ड में से आग की लपटें उठकर साधक की ओर आती हैं उस समय साधक को भयभीत नहीं होना चाहिए ।

सुन्दर यक्षिणी का स्वरूप

गोरे बदन वाली षोडस वर्षीय बालिका के रूप में, बसंती साड़ी पहिने हुये गले में सफेद पुष्पों की माला धारण किए हुये भुजाओं मे लाल रङ्ग की चुस्त चोली पहिने नाक में झलकदार नथ पहिने हुए साधक को दर्शन देती है।

—:❀:—

(३) मनोहर यक्षिणी

सिद्ध करने का समय

ठीक रात्रि के बारह बजे पर स्वाँति नक्षत्र में शनिवार के दिन से सिद्धि की जाती है। साधक प्रारम्भ करने के दिन प्रातःकाल चौर कर्म करा कर छोटे २ बच्चों को मिष्ठान दही का भोजन करावे और यथा शक्ति उनको दान देकर वरदान माँगे जिससे साधन निर्विघ्न समाप्त होवे। फिर निर्जन वन में जाकर वट वृक्ष की जड़ में काल भैरव की मूर्ति स्थापित कर उसको स्नान करावे फिर धूप दीप से पूजन कर नित्य प्रति एक हजार नीचे लिखे मन्त्र का जाप करे।

साधन मन्त्र

ॐ ह्रीं हूँ हूँ फट स्वाहाः ओ३म् फट स्वाहा

ॐ ह्रीं फट स्वाहाः मनोहरी यक्षै नमः।

मुर्दे की आँतों की डोरी और उसमें मुर्दे की अस्थियों के दाने डाल कर माला बनावे फिर एकाग्र चित्त होकर जाप करे प्रत्येक हजार पर एक आटे का पुतला बना कर रखता जाए और जैसे साधन समाप्त करे सबको इकट्ठा कर अपने मकान के पीछे गाड़ दे।

—:❀:—

मनोहारी का आगमन

जिस समय यह यक्षिणी आती है फूलों की सुगन्धि साथ लाती है। इसके आगे आगे अनेक प्रकार के पशु शेर चीते इत्यादि अपना अपना स्वरूप बदले हुये दिखाई देते हैं। किसी किसी पशु पर दैत्य सवार होता है पीछे मंद्रमुखी शंखनी हाथों में पुष्पों की माला लिए हुए आतीहै।

मनोहारी का स्वरूप

श्वेत वर्णकी अनुमानतः षोडष वर्षीय कन्याके अनुसार चार शंखिनियों के कंधे पर सिंहासन पै बैठी हुई दर्शन देती है। गले में फूलों का हार पड़ा होता है दोनों हाथों में कमल के फूल धारण किए हुए होती है माथे पर सिंदूर का टीका लगा होता है। सिर के बाल खुले हुए पीछे लटके रहते हैं। यदि यह प्रसन्न हो जाय तो अपना परिचय तीन प्रकार से देती है अर्थात् (१) धन (२) जन (३) मानस। विमुख हो जाने से सकुटुम्ब नाश कर देती है इससे प्राप्त किया हुआ धन अच्छे कामों में लगाया जाय। पुण्य भी अधिक किया

जाय। यदि ऐसा धन व्यभिचार मदिरा पान में खर्च करे तो पुत्रादि सहित नष्ट कर डालती है।

प्रभाव—शान्ति चित्त करती है किसी बात की इच्छा प्रगट नहीं होने देती है जिस कार्य की आवश्यकता हो तत्क्षण कर लाती है। साधक को किसी प्रकार भय कलेश नहीं होने देती इसकी साधना से भय नहीं करना चाहिये।

(४) कनक यक्षिणी

साधना का समय

यह रात्रि के एक बजे पर एकान्त निर्जन बन में सिद्धि की जाती है।

—:❀○❀:—

साधन मन्त्र

ऊँ ह्रीं कनक क्लीं यक्षिणी नमः।
ऊँ हूँ कुरु ठः ठः स्वाहा श्रीं क्लीं फट स्वाहा॥

क्रिया—इस मन्त्र को सवा लक्ष्य नित्य प्रति जाप करे इस प्रकार साधन करने से तीस दिन बाद दर्शन देगी।

कनक यक्षिणी आगमन

यह यक्षिणी आते ही चारों ओर से मल मूत्र की वर्षा करती आती है। हाड़ मास की मालायें धारण किए रहती है एकान्त वास इसको पसन्द है। यदि अधिक इसको तंग

किया जाय या इसकी इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य किया जाय तो साधक की मति भ्रष्ट कर देती है।

—❀❀—

कनक यक्षिणी का स्वरूप

स्वरूप इसका साठ बर्ष की बुढ़िया के समान है। शिर पर समस्त बाल सफेद होते हैं। हाथ पैरों में केवल हड्डियों का ढाँचा दिखाई देता है, मुँह में एक दाँत नहीं दीखता है समस्त बदन व कपोलों पर झुरिंया पड़ी दीखती हैं बदन की लम्बाई अधिक होती है।

प्रभाव—जब तक यह साधक के पास रहती है तब तक किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने देती और जब जाती है उसको अनेक प्रकार के दुःखों में फँसा जाती है।

यह यक्षिणी ज्योतिषियों के बड़े काम में आती है इसके सिद्ध हो जाने से ज्योतिषी प्रत्येक का उत्तर सही देता है। इस यक्षिणी की सिद्धि को 'कर्ण पिशाचनी' सिद्धि कहते हैं। क्यों कि यह जो कुछ कहती है सिद्ध के कानों में कहती है साधक का कान सदैव ऊपर की ओर रहा आता है।

यह यक्षिणी संसार में अपने साधक का प्रभाव बढ़ा देती है परन्तु भ्रष्ट अधिकरखतीहै यहाँतककि कोई२ कर्णपिशाचनी कान में विष्टा तक लगाये रहती है और अन्त में मरने पर साधक के शरीर में दुर्गन्धि पैदा कर देती है जिससे उठाने

वाले भी घृणा करते हैं।

कामेश्वरी यक्षिणी

साधन का समय

यह यक्षिणी रात्रि के प्रारम्भ काल में सिद्धि की जाती है और जब तक रात्रि समाप्त नहीं होती बराबर जप करना पड़ता है। इसकी साधना गूलर के वृक्ष की छाया के नीचे की जाती है और घृत का चौमुख दीपक जला कर साधक अपने सामने रख लेता है उसकी "लौ" बिना पलक मूँदे एक टकबराबर तमाम रात देखता रहता है। जिस समय साधक में एक रात बिना पलक लगाये दीपक ज्योति देखने की शक्ति उत्पन्न हो जावेगी उसी दिन से यक्षिणी अनेक रूपों से दर्शन देने लगेगी।

—o—

कामेश्वरी सिद्धि मन्त्र

ऊँ कामेश्वरी काम सिद्धेश्वरी स्वाहा।
ओं फट् स्वाहा ऊँ ह्रीं कुरु स्वाहा॥

उपरोक्त मन्त्र को एकाग्र चित्त से रुद्राक्ष की माला लेकर सवा लक्ष नित्य प्रति जाप करे तीस दिन बाद स्वप्न में यक्षिणी अनेक रूपों से दर्शन देगी।

कामेश्वरी आगमन

जिस समयपर यह यक्षिणी आतीहै उस समय चारोंतरफ सफेद फूलों का मार्ग बन जाता है, चारों तरफ से शीतल मन्द सुगन्ध वायु बहने लगती है एक हाथ में इन्द्रदान लिए होती है। रास्ते में फूलों की वर्षा होती आती है।

—❀❀—

कामेश्वरी का स्वरूप

चन्द्रमाके समान उज्वल वर्ण वाली हंस की सवारी पर धीरे २ आती है। गले में मोतियों की माला धारण किये होती है। इसके पीछे चार स्त्रियाँ हवा ढोरती आती हैं और दो आगे चवर ढोरती दिखाई देती हैं। साथ की सब स्त्रियाँ पीताम्बर साड़ी पहिने होती हैं और स्वयं यक्षिणी गुलाबी रङ्ग की पोशाक में होती है।

प्रभाव–शीतलता लिये हुये साधक के चित्त को प्रसन्न करने वाली किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाने वाली सब की सहायक होती है।

(६) रति प्रिया यक्षिणी

साधन का समय

इस यक्षिणी की सिद्धि रात्रि के दस बजे पर चाँदनी रात्रि में की जाती है। इसका जाप उत्तरा भद्रपद नक्षत्र में

शुक्रवार के दिनसे प्रारम्भ होताहै । इसके अग्र भाग में सुगन्धित पदार्थ तथा अनेक प्रकारके खिले हुये पुष्प रक्खे जाते हैं । जिस समय यह प्रसन्न होती है फूलों को मालाओं को अपने आप गले में धारण कर लेती है ।

इसके जाप की माला तुलसी के दानों की रेशम में पिरोई जाती है और निम्नलिखित मन्त्र का जाप किया जाता है ।

---o---

साधन मन्त्र

ॐ रति वल्लभे रति प्रिये का मन्तु वल्लभौः ।
महा देवा महा माया काया कंचनम् ॥

यह यक्षिणी पेंतालीस दिन में अपना प्रभाव स्वप्न में देती है । सिद्धि हो जाने पर मन इच्छित फल की दाता है अधिकांश में इसका प्रभाव स्त्रियों पर अधिक पड़ता है । कारण इसका सम्बन्ध कामदेव से अधिक है ।

—:※:—

यक्षिणी आगमन

कामेश्वरी यक्षिणी की भाँति इसका भी आगमन होताहै इसको गुलाबी रङ्ग के पुष्प अधिक प्रिय हैं । फूलों की सड़क मखमल के समान पृथ्वी पर बिछ जाती है, उसी पर अचक पचक पैर रखती हुई आती है । दास दासियाँ भिन्न प्रकार की सुगन्धित लिये सामने खड़ी रहती है ।

रति प्रिया का स्वरूप

सुन्दर गौरांग नवल नवेली चन्द्रवदनी जिसके हाथों की नाजुक कलाई हवा के झोंके से हिलती हुई दीखती है। अपने उपासक को सदैव मुस्काती हुई दर्शन देती है।

प्रभाव—इसके सिद्ध हो जाने से मनुष्य कड़ुवे से कड़ुवे मिजाज वाली स्त्री को वशीभूत कर लेता है।

—:❀:—

(६) पद्मिनी यक्षिणी

साधन समय

इसका साधन अषाढ़ पूर्णिमा गुरुवार के दिन स्वांति नक्षत्र में रात्रि के चौथे पहर में निर्जन स्थान में प्रारम्भ होता है।

—:❀:—

साधन मन्त्र

अनंग वल्लभो देवि, कामारिप्रिय सेविका।
नमस्ते पद्मिनी माया, महा माया नमस्कृते॥

पीपल के वृक्ष के नीचे बटुकनाथ की मूर्ति स्थापना कर काँस के आसन पर बैठ कर दक्षिण की ओर मुँह करके सवा लक्ष बार उपरोक्त मन्त्र का जाप करे।

पद्मिनी का आगमन

जिस समय यह आती है आने के पहिले एक बार अपनी

झलक दिखलाकर अन्तर्ध्यान हो जाती है फिर अनेक प्रकार के बाजे बजने शुरू हो जाते हैं। परन्तु बाजे बजाने वाला कोई किसी तरफ दिखाई नहीं देता उसी बाजे की ताल पर एक बड़ी बरात सी आती हुई दिखाई देती है इसी को मनुष्य "साहवाँ" आसेब की आमद कहते हैं सबको पद्मिनी अपना रूप दिखाती है।

—❀—

पद्मिनी का स्वरूप

गोरे अङ्ग पर सिर के बाल एड़ी तक लम्बे लटके हुए दिखाई देते हैं। बाँह चम्पे की डाल के समान छोटी छोटी और मुलायम होती है। पैर कदम कंदली के समान सुडौल और सीधे होते हैं। हाथों में कमल के फूल और गले में फूलों के हार पड़े होते हैं। इस प्रकार के भेष से साधक को दर्शन देती है।

प्रभाव—जब यह सिद्धि हो जाती है तब साधक के यहाँ धन की कमी नहीं रहती।

—:०:—

(८) नटी यक्षिणी

साधन का समय

इसके साधन करने का समय प्रातःकाल सूर्योदय से सूर्यास्त तक का है।

साधन मन्त्र

ॐ नमः ह्रीं फट स्वाहा ॐ क्लीं फट स्वाहाः ।

ॐ नटो यक्षणी स्वाहा ॐ कुरु कुरु फट् फट् स्वाहा ॥

सुनसान जङ्गल में जहाँ चौरस भूमि हो और सूर्य किरण पूरी पड़ती हों वहाँ पर सूर्य की ओर मुँह करके खड़ा होवे और प्रति घंटा एक सहस्र मन्त्र जाप करता जावे । जब तक सूर्य अस्त न होवे तब तक बराबर जाप करता रहे । सूर्य अस्त होने के पश्चात् घर आकर केवल दूध पीकर सो रहे और रात्रि को कुछ भोजन न करे ।

नटी यक्षिणी का आगमन

जिस समय यह आती है भैंसे के समान हुंकार भरती हुई आती है, और साधक को अनेक विकाल रूप दिखलाकर डराती है । यदि इस पर साधक डटा रहा तो सैंतालीस दिन में सिद्धि होवेगी ।

नटी का स्वरूप

सुन्दरी गौरांग स्त्री सिर पर सुर्ख रङ्ग की चून्दरी ओढ़ गले में मुण्डों की माला धारण किये नव पल्लव बदन पर लपेटे हुये हँसती खेलती, साधक के सामने खड़ी हो जाती है ।

प्रभाव——इसके सिद्धि हो जाने पर साधक प्रत्येक कार्य अपनी इच्छानुसार कर सकता है ।

(६) अनुरागिनी

साधन का समय

शाम के पाँच बजे निर्जन स्थान में जहाँ की भूमि सम-तल हो वहाँ पर साधन करे । सत्ताईसवें दिन जाकर यक्षिणी अपना प्रभाव दिखावेगी ।

——०——

साधन मन्त्र

ॐ नमः अनुरागि यक्षिणी नमः हनि हनि
पचि पच फट स्वाहा

ऊँट के बालों की माला बना कर तीस हजार जाप नित प्रति करे सत्ताईस दिन पीछे यक्षिणी स्वप्न में दिखाई देगी ।

अनुरागिनी का आगमन

इन्द्र की अप्सरा आने से प्रथम लाल रङ्ग का फर्श बिछा हुआ दिखाई देता है । बैलों के झुण्ड के झुण्ड आते हुये दीखते हैं जिन पर अनेक रूप धारण किये विकट खोपड़ी वाले भूत दिखाई देते हैं । सबके पीछे अनुरागिनी

यक्षिणी की सवारी आती है। यह ऊँट पर बैठी हुई पीछे की ओर मुँह किये हुये होती है।

अनुरागिनी यक्षिणी का स्वरूप

लाल रङ्ग की पोशाक धारण किये मुँह में पान चबाये नाक में नथ भलकाली पड़ी हुई लम्बी भुजायें हाथों की अँगुली एक एक बालिस्त लम्बे नाखून चार इंच चोड़े पैर नाटे बिना पंजे वाली एक हाथ में कृपाण और दूसरे में मुंड माल लिए हुए होती है।

प्रभाव—यह आते ही साधक की ओर सीधी चढ़ी हुई चली आती है। यदि साधक भयभीत हो गया तो पागल बना देती है वरना इच्छानुसार काम करती है।

(१०) विशाला यक्षिणी

साधन का समय

रात्रि के तीसरे पहर में काले धतूरे के वृक्ष के नीचे छाया में गधे के चाम का आसन बिछा कर उस पर बैठे। और आहुति होने के हेतु अष्ट धातु का हवन कुण्ड त्रिभुजाकार बनवाये और उसके मध्य से आदित्य देव की मूर्ति स्थापित करके उस पर तेल मर्दन करे निम्नलिखित मन्त्र का एक सौ आठ बार प्रति दिन जाप करता रहे।

साधन मन्त्र

ॐ अनंग वल्लभो देवि, विशालास्य नमितः ।
स्वम प्रिया मह्य वश्यम् कुरु फट फट स्वाहा।।

अषाढ़ वदी १५ आदित्य वार के दिन विसाखा नक्षत्र में रात्रि के तीन बजे पर श्मशान भूमि में जावे और उपरोक्त रात्रि मंत्र का जाप करे प्रत्येक मंत्र के अन्तिम अक्षर पर तेल और चावलों की आहुति दे। अन्तिम आहुति मदिरा और माँस की देकर सीधा घर चला आवे पीछे को न देखे।

विशाला यक्षिणी आगमन

इसके आने से पूर्व अनेकों हिंसक जानवर शोर करते हुये दिखाई देते हैं। फिर वह अन्ध्यान हो जाते हैं केवल दक्षिण दिशा में मनुष्यों के बात चीत करने का शब्द सुनाई देता रहता है साधक को उस समय अपना ध्यान नहीं हटाना चाहिये यदि उसका ध्यान उस ओर से हट गया अथवा भय भीत हो गया तो घर आते ही बीमार हो जायगा। अथवा जिधर जावेगा उधर ही उसको वह शब्द सुनाई देगा इसलिए साधक को चाहिये कि हृदय को कड़ा करके इस की साधना करे।

विशाला यक्षिणी का स्वरूप

इस की लम्बाई एक पीपल के पूरे और ऊँचे पेड़ के बराबर होती है पैरों को पृथ्वी पर बड़े जोरों से मारती है

और अनेक प्रकार के उपद्रव उठाती हुई आती है। सिर के बाल आगे की ओर लटके हुए होते हैं। लम्बाई के कारण इसकी उमर की तादात नहीं हो सकती जितनी यह लम्बी होती है उसी के अनुसार हाथ पैर लम्बे व चौड़े होते हैं। सिर इसका बड़ा और दाँत आगे को निकले और बड़े होते हैं।

प्रभाव—साधक इसको यदि प्रसन्न रखे तो मालामाल कर देती है और अप्रसन्न होने पर सकुटुम्ब उसका नाश कर देती है।

—o—

(११) चन्द्रिका यक्षिणी

साधना का समय

इसका साधन समय रात्रि के ११ बजे चाँदनी रात्रि में किया जाता है। साधक श्मशान भूमि में जाकर मुर्दे की चिता वाली भूमि अर्ध चन्द्रकार मुर्दे की हड्डियों का बनावे और आर्द्रा नक्षत्र में चन्द्रवार के दिन से मन्त्र की आराधना करे और तीस दिन तक बराबर जाप करता रहे। जब स्वाँति नक्षत्र में सुषुम्णा नाड़ी चलने लगे उस समय जाप की समाप्ति करे।

साधन मन्त्र

ॐ ह्री क्लीं चामुण्ड ये विचेस स्वाहा:।

ॐ चंडिका यक्षिणी नमः स्वाहाः ॥

इस मन्त्र को पचास हजार दफा जाप करे और इसके जाप के लिये मुर्दे की हड्डियों के दाने की माला उनमें पिरोवे और प्रत्येक दाने पर ऊँ श्रीं ऊँ ह्री, ऊँ ह्री बीच में अंकित करे। और प्रति एक जाप पर घी गुड़की आहुतियाँ देता जाय। और भोग के लिये चावल काले उर्द का बलिदान तैयार रखे। हवन अन्तिम आहुति दही दूध घृत और शहद की देवे और घर जाकर ब्राह्मणों को खीर के भोजन करावे। यथा शक्ति उनको पूजा करे और दान दे।

यक्षिणी का आगमन

पैंतालीस वर्ष की उम्र की स्त्री काले वर्ण की हाथों पर मेंहदी रची हुई मुँह में पान चबाये दाँतों को आगे निकाले हुए एक हाथ में लड्डू दूसरे से अग्नि जलती हुई साधक के पास सीधी चली आती है। और रखे हुए बलिदान को ले जाती है।

प्रभाव—अगर साधक उस समय भयभीत नहीं हुआ तो भूत और भविष्य का ज्ञान हो जाता है मान और प्रतिष्ठा अधिक बढ़ती है।

लक्ष्मी यक्षिणी

साधन का समय

इसकी साधना प्रातःकाल चार बजे की जाती है। इसकी

साधना को पवित्र मकान की आवश्यकता पड़ती है। जिस जगह पर इसकी आराधना की जावे उस मकान में कोई अपवित्र मनुष्य न जाने पावे और न कोई स्त्री उस मकान का स्पर्श करे। साधना करने से प्रथम मकान की सफाई लिपाई पुताई कराकर उसको धूप चन्दनादि की धूनी देकर पुष्पों की मालाऐं लटका दे और सुगन्धित इत्र की खुशबू उसमें बसा कर जाप आरम्भ करे।

साधना मन्त्र

लक्ष्मी कान्तम् कमल नयन सिंदूर शोभावरंम्।
भालेन्द्र तिलक ललाट मुकटम् वाणी वरम् वर दायकम्।

उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में लक्ष्मी की मूर्ति अष्टधातु की बनवा कर स्थापना करे और प्रातःकाल उसका गङ्गाजल से स्नान कराकर उसके मस्तक पर केशर और कस्तूरी का तिलक लगावे और स्वयं कुशासन पर बैठकर पीताम्बर वस्त्र धारण करे फिर स्नान किये हुए जल का भक्ति भाव से पान करे और हृदय में मूर्ति का चित्र धारण कर तुलसी की मालाहाथ में लेकर एक सौ आठ बार जाप करे और भाँग के लड्डू बनवा कर सामने रखे इस प्रकार इक्कीस दिन तक जाप करता रहे इक्कीसवें दिन यक्षिणी दर्शन देगी।

लक्ष्मी का आगमन

जिस समय यह आती है उससे पूर्व राजा महाराजाओं की भाँति आगवन की तैयारियाँ देवगण कर जाते हैं चारों ओर शांति स्थापित हो जाती है। भय का कुछ काम नहीं रहता इसका आना साक्षात आँखों से दिखाई नहीं देता तीसवें दिन स्वप्न में आकर साधक को दर्शन देती है।

--०--

लक्ष्मी का स्वरूप

सुन्दर गोरे वर्ण की अठारह उन्नीस वर्ष के अनुमान वाली स्त्री चन्द्रवदनी मृगलोचनी बाँहें चम्पे की डाल अनुसार नाक में स्वर्ण की नथ मढी हुई साक्षात देवी अवतार दोनों हाथों में कमल का फूल धारण किए हुए आती है।

प्रभाव—जब यह प्रसन्न होती है तब साधक को माला माल कर देती है और जब इसकी पूजा ठीक नहीं होती तो दरिद्री बना कर चली जाती है।

(१२) शोभना यक्षिणी

साधन का समय

इसके सिद्ध करने का समय रात्रि के एक बजे का है। आषाढ़ वदी १५ गुरुवार के दिन स्वांति नक्षत्र में इसको सिद्धि करना प्रारम्भ करके और बलिदान के हेतु तेल और

गुड़ में आटा गूँथ कर लड्डू बनावे। प्रति दिन जाप समाप्त कर काले कुत्ते को एक सौ आठ लड्डू नित्य प्रति खिला दिया करे इस प्रकार तीस दिन रोज तक तेल और गुड़ के १०८ लड्डू बनावे। अन्तिम दिन तेल और वेसन के लड्डू गुड़ में बनाकर कुत्तों को खिला दे।

—❀❀—

साधन मन्त्र

ॐ शोभनायः शोभनायः शोभनाय नमः।
निराकारो निराभासो वस्यं कुरु कुरु स्वाहा॥

कैत वृक्ष की छाया में बैठ कर तीस दिन तक जाप करता रहे। जाप करने की माला चिकनी मिट्टी के दानों की बनावे और उस में क्वारी कन्या के हाथ का काता हुआ सूत डाले यह सूत विशाखा नक्षत्र से काता जाता है। इसकी कपास प्राकृतिक रूप से पैदा होती है इसको कोई जोतता बोता नहीं स्वयं बरसात में अपने आप इसके पेड़ उग आते हैं। और पंचक त्याग कर इसकी कपास लाई जाती है, फिर उसको क्वारी कन्या के हाथ से कतवाते हैं। इस जाप की माला सवा लक्ष एकाग्र चित्त से जपी जाती है। समाप्ति होने पर कन्या लाँगुराओं को भोजन हलुआ और चनों का कराया जाताहै फिर उनको लाल रङ्गके वस्त्र पहिना कर यथा शक्ति दान दिया जाता है।

शोभना यक्षिणी का आगमन

जब यह आती है अनेक प्रकार के रूप बदलती हुई आती है। किसी किसी समय तो भयंकर शब्द तक सुनाने लगती है। कभी इसके साथ में अनेक स्त्रियाँ आती हुई दिखाई देती हैं कभी स्वयं अनेक नाचती हुई दीखती हैं। कभी रोती हुई आती है। इसका प्रचंड कोप बड़ा भयानक होता है। साधक को चाहिये कि सावधानी के साथ बैठा रहे और चित्त को विचलित न करे वरना पागल हो जावेगा।

---:०:---

शोभना यक्षिणी का स्वरूप

कुरूपिड़ी एक आँख ऊपर को चढ़ी हुई माथा टेढ़ा मस्तक पर चेचक और फोड़ा फुन्सियों के दाग महा मलीन देखते ही घृणा उत्पन्न होती है। मदिरा मांस में अधिक रुचि रखती है। गले में अनेक प्रकार की खोपड़ी लाल रङ्ग से रङ्गी हुई पड़ी हुई होती है।

प्रभाव—यह आते ही साधक को पटक देती है। अनेक प्रकार के दुर्व्यवहार करती है यदि इसको साधक सह गया तो मालामाल कर देती है।

(१४) मदना यक्षिणी

साधन का समय

इसका साधन रात्रि के पिछले पहर पर दिन के प्रारम्भ

काल में किया जाता है। निर्जन वन में जहाँ किसी मनुष्य की आवाज सुनाई न दे वहाँ पर छोंकर की कोंपल लावे और उसमें बरगद की टहनी लगा कर हवन सामिग्री तैयार करे, और पृथ्वी पर षट चक्र काढ़ कर कुण्ड बनावे प्रत्येक चक्र पर (ॐ ह्रीं) बीज अंकित करे बीच में मदना यक्षिणी का नाम लिख दे फिर उसके ऊपर बरगद और छोंकर की कोंपल वाली सामिग्री रख कर अग्नि प्रवेश करे और निम्न लिखित मन्त्र का जाप करे।

साधन मन्त्र

ओं श्रीं मदनाक्षरी यक्षिणी स्वाहा।
ओं काल भैरवायनमः फट फट स्वाहा॥

इस प्रकार मन्त्र का पाँच हजार जाप बेल वृक्ष के नीचे बैठ कर करे। जिस स्थान पर जाप करना प्रारम्भ करे उसी जगह पर हवन कुण्ड स्थापित करे। जाप की माला के दाने मोर पंख के बनावे प्रत्येक दाने के बीच में एक एक गाँठ काली ऊन की लगावे। जब माला तैयार कर चुके तब नियमित समय पर स्यार की खाल के आसन पर बैठ कर दक्षिण की ओर मुँह करके जाप करना आरम्भ करे। इक्कीस दिन तक बराबर जाप करता रहे। इक्कीसवें दिन यक्षिणी स्वप्न में आकर दिखाई देगी।

मदना यक्षिणी का आगमन

यह यक्षिणी सत्ताईसवें दिन से सिद्ध होने की सूचना देती है। साधक से स्वप्न में अनेक प्रकार की मनोहर बातें करती है। अपने हाव भाव कटाक्ष से साधक को मोहित करती है। हर प्रकार से उसकी सेवा करती रहती है। स्वप्नावस्था में जो कुछ साधक करता है उसी काम को तत्काल कर लाती है। जब जाती है तब हर प्रकार से साधक को प्रसन्न कर तसल्ली देकर जाती है।

मदना यक्षिणी का स्वरूप

रूपवती सुन्दर स्त्री मीठे वचन कहने वाली मन्द मन्द मुस्काने वाली कभी हँसती कभी नाचती गाती है। पोशाक सदैव काशनी रङ्ग की पहिरे रहती है। जवानी के मद में चूर रहती है नूर उसके चेहरे से चुचाता रहता है। काम कला में अति निपुण होती है। सदा साधक की इच्छानुसार काम करती है। कभी उस से अप्रसन्न नहीं होती।

प्रभाव—इसके सिद्धि हो जाने से साधक का मन एक जगह पर रुक जाता है। फिर उसको किसी बात की आकांक्षा नहीं रहती है।

—o—

सातवाँ अध्याय

स्त्री व पुरुष की

॥ राशिमाला ॥

—❀❀——

दोहा—सान्दीपन गुरु बन्दि के, जगदम्बा धरि ध्यान।
भाषा में रचि राशि फल, जानहु सकल सुजान॥

नीचे लिखी तालिका से आप सर्व प्रथम स्त्री व पुरुष की राशि का ज्ञान कीजिये

चू चे चो ला ली लू ले लो अ। मेष राशि
ई उ ए ओ वा वी वू वे वो। वृष राशि
का की कु घ ङ छ के को हा। मिथुन राशि
ही हू हे हो डा डी डू डे डो। कर्क राशि
मा मी मू मे मो टा टी टू टे। सिंह राशि
टो पा पी पू ष ण ठ पे पो। कन्या राशि
रा री रू रे रो ता ती तू ते। तुला राशि
तो ना नी नू ने नो या यी यू। वृश्चिक राशि
ये यो भा भी भू धा फा ढा भे। धन राशि

भा जा जी खी खू खे खो गा गी। मकर राशि

गू गे गो सा सी सू से सो दा। कुम्भ राशि

दी दू थ झ ञ दे दो चा-ची। मीन राशि

१-चू चे चो ला अश्वनी ली लू ले लो अभरणी, मेष राशि

२-इ उ ए कृत्तिका, ओ वी वो बू रोहिणी, वे बो वृष राशि

३-का की मृगशिर कु घ ङ छ आर्द्रा,
के को हा मिथुन राशि

४-ही पुनर्वसु हू हे हो डा पुष्य, डी डू डे डो अश्लेषाकर्कराशि

५-मा मी मू म मघा, मो टा टी टू टे पूर्वा फा०, सिंह राशि

६-टो पा पी उत्तरा फाग पू ष ण ठ हस्त, पे पो कन्या राशि

७-रा री चित्रा रू रे रो ता स्वांति, ती तू ते तुला राशि

८-तो विशाखा, ना नी नू ने अनुराधा, नो या यी यू ज्येष्ठा,
वृश्चिक राशि।

९-ये यो भा भी मूल, भू धा फा ढा पूर्वाषाढ़, भे धन राशि

१०-भो जा जी उत्तराषढ़, खी खू खे खो श्रवण, गा गी
मकर राशि।

११-गू गे धनिष्टा, गो सा सी सु शतभिषा, से सो दा
कुम्भ राशि।

१२-दी पूर्वाभाद्र, पद द थ झ ञ उत्तरा भाद्रपद, दे दो चा
ची रेवती, मीन राशि।

---:※:---

अथ लग्नः वाराही

विवाह का विचार

माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ विवाह के ये महीना हैं। रोहिणी, उत्तराषाढ़ व उत्तराफाल्गुणी व उत्तरा भाद्रपद रेवती, मूल स्वाँति मृगशिरा, अनुराधा हस्त ये विवाह के नक्षत्र हैं।

मकान बनाने का विचार

महीना माघ, फाल्गुण–वैसाख–ज्येष्ठ–श्रवण–अगहन नक्षत्र मृगसिर चित्रा अनुराधा तीनों उत्तरा रोहिणी हस्त अश्वनी पुष्य पुनर्वसु श्रवण–धनिष्टा–शतभिषा, दिन सोमवार बुध, बृहस्पति शुक्र। सूर्य नक्षत्र से मकान बनाने के नक्षत्र हैं सात अशुभ, एकदश शुभ, दस अशुभ हुआ बनाने के वास्ते बीच आँगन में बनवाये तो धन नाश ईशान कोण में पुष्टि पूर्व में धन लाभ अग्नि कोण में शाँति दक्षिण में पुत्र स्त्री का नाश नैऋत्य कोण में मृत्यु होगी। पश्चिम में धन की हानि वायव्यकोण में शत्रु नाश उत्तर में वृद्धि होगी।

प्रस्थान विचार

जो यात्रा को देर हो तो प्रस्थान करें। ब्राह्मण जनेऊ प्रस्थान में धरें क्षत्रिय हथियार धरें, वैश्य मिठाई धरें शूद्र शुभ फल प्रस्थान में धरें, जो वस्तु प्रिय होय सो सब वर्ण प्रस्थान में धरें।

किस दिशा में कितने दिन प्रस्थान रहता है।

पूर्व दिशा का प्रस्थान सात दिन तक, दक्षिण दिशा में पाँच दिन तक, पश्चिम दिशा में तीन दिन तक, उत्तर दिशा में एक दिन तक।

प्रस्थान प्रमाण

पाँच सौ धनुष पर्यन्त करे चार हाथ का एक धनुष होता है कोई आचार्य कहते हैं कि दो सौ धनुष पर प्रस्थान करे और किसी का मत है कि दश धनुष पर्यन्त करे अपने मकान से यात्रा करने वाली दिशा में सावधान होकर प्रस्थान करे।

दिक्शूल ज्ञान

बृहस्पतिवार व सोमवार को अग्नि दिशा में दिकशूल होता है नैऋत्य में रविवार को दिकशूल होता है वायव्य में मङ्गलवार को दिक शूल होता है।

दिकशूल ज्ञान

पूर्व दिशा में शनिश्चर सोमवार को दिकशूल होता है। एकादशी को अग्नेय दिशा में वास होता है सो वर्जित है। दक्षिण दिशा में बृहस्पति को इतवार और शुक्र को पश्चिम में होता है, बुध मंगल को उत्तर में वर्जित है। दिकशूल सन्मुख होय तो न जाय।

शूल दोष निवारण

इतवार को घी खाइये सोमवार को दूध, मंगल को गुड़ बुध को तिल बृहस्पति को दही शुक्र को जौ शनि को उड़द यह भक्षण करके यात्रा करे तो शूल दोष प्रभाव न करे।

--❀❀—

यात्रा करने का मुहूर्त योगिनी विचार

नौमी प्रतिपदा को योगिनी का वास पूर्व दिशा में है तेरस पंचमी को दक्षिण में वास होता है। द्वादशी चौथ को नैऋत्य दिशा में होता है। चौदस छट को पश्चिम दिशा में वास होता है दशमी दूज को उत्तर में वास होता है अमावस अष्टमी को ईशान में वास होता है सो यात्रा में सन्मुख पाये अशुभ है।

---०---

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ अथ पंचदशी यन्त्र पद्धतिःप्रारम्भः ॥

श्री महादेवजी ने पार्वती से कहा हे देवि ! मैंने सब यन्त्र मन्त्र कील दिये हैं केवल यह पंचदशी (१५) का यन्त्र बिना कीले रहने दिया है। परम गोपनीय है सो मैं तुझ से कहता हूँ। तू भी गुप्त रखना लंपट, अभक्त, और दुष्ट को यह मत देना। यह यन्त्र बिना कीला और प्रसिद्ध है चित्त लगाय कर सुन। नदी के तट पर सुन्दर वृक्ष जहाँ लगे हुए होंय वहाँ पर एक कोठरी उत्तम गोबर मिट्टी लिपवा कर अष्टगन्ध से एक बहुत बड़ा बीज मंत्र पृथ्वी पर लिखे उसका पूर्व दिशा की ओर मुख करे और माथे पर अर्द्ध चन्द्र अनु-स्वार लिखै तथा अष्टगंध से ही पृथ्वी पर १५ का यन्त्र लिखना चाहिये। और उसके ऊपर दीपक सुवर्ण, चाँदी, ताम्र लोहा तथा मिट्टी का किसी एक का होना आवश्यक है उस दीपक के भीतर भी १५ का मन्त्र लिख देना चाहिये। उसको गाय के शुद्ध घी से भरकर उसमें लाल सूत की बत्ती १००० तार या १०८ तार १८ तार या १२ तार की दीपक में बलाना और उस दिये के चारों ओर ४ दिया तेल के भरकर बलाना पूर्वविधी अनुसार। तदनन्तर बीच में लाल कपड़े का आसन बिछा कर यन्त्र लिखने वाला बैठे यदि क्रूर कार्य

(मारण, उच्चाटन, विद्वेषण) करना चाहै तो सूर्य स्वर में स्वाँस खींचना और दक्षिण तीन पाँव पूर्व सामा के उत्तरसामा आगे रक्खे बाद में आसन पर पूर्व दिशा दीपक के सामने बैठना । लाल धोती लाल वस्त्र और लाल ही आसन जिसमें और रङ्ग का कोई तार न होवे । आसन पर बैठ कर माया बीज ही का जप करता रहे और यन्त्र भरता रहे अष्ट गंधसे यंत्र लिखे । तथा जो अपना कार्य हो सो यंत्र के ऊपर लिखता रहै । प्रतिदिन ५०।१००।३००।५००। तथा १००० जितना पहिले दिन लिखे उसी प्रकार नित्य लिखे तथा माया बीज के पेट में यंत्र के अक्षर लिखे उसकी विधि इस प्रकार है । एक अङ्क से लिख केशर से एक लाख तो हनुमान जी प्रगट होकर दर्शन दें । इसी भाँति रोज लिखना और एक२ यंत्र को अलग २ काट कर गेहूँ के आटे में गोली बना कर मछलियों को खिलाना तालब बावरी या कूए में जहाँ होंय। मछली गोली खाय तो कार्य सिद्धि अवश्य हो । यदि न खाय तो कार्य न होगा यंत्र लिखना बंद करदें । गोली मछलियों को खाने के लिये गेरे तब भी माया बीज का जप करता रहे ।

जब एक लाख यंत्र पूरा होवे तब दशांश मेवाका हवन पानी में करै अग्नि में नहीं । (जिस प्रकार बलि वैश्य होता है) बीज मन्त्र का स्वाहांत बोलकर जल में छोड़ना

तदनंतर दशांश तर्पण, मार्जन, गोदान आदि करना प्रथमएक से लिखकर नौतक लिखे तो हनूमानजी दर्शनदें। दोसेप्रारम्भ कर ६ तक लिखे पीछे एक लिखे राजा वशीभूत होय। इसी प्रकार तीन से प्रारम्भ कर बाद में १।२ लिखे व्यापारमें वृद्धि हो। ४ से प्रारम्भ कर ६ तक लिखे बाद में १।२।३ लिखे साध्य का उच्चाटन क्रोधादि नष्ट होय। ५ से प्रारम्भ कर बाद में १।२।३।४ लिखे तो साध्य का स्थान भ्रष्ट होय। ६ से शुरू कर ६ तक लिखे बाद में १।२।३।४।५ लिखे मारण होय ७ से प्रारम्भ कर ६ तक लिखे बाद में १।२।३।४।५।६ लिखे तो सभी प्रकार के वशीकरण की सिद्धि प्राप्त होती है। ८ का ६ का प्रथम लिखकर एक से प्रारम्भ करे तो अशुभ चितकों का विपत्ति होय। ६ से प्रारम्भ कर के बाद में आठ तक लिखे अवश्य धन वृद्धि होय। इस प्रकार यंत्र अष्ट गंध से ८ अंगुल प्रमाण चमेली की कलम से १००००० प्रमाण लिखे ६ कोठे में
२ ६ ४ ७ ५ ३ ६ १ ८

द्वि नन्द वेद ऋषि वाण त्रि षट शशि वसु। यदि मायाबीज का साधन न बने तो माया बीज बिना ही अष्टगंधसे लिखना सवालक्ष १ से ६ पर्यन्त। यदिदीपक आदि सामान न होसके तो भी माया बीज का जप अवश्य करता जाय और पूर्वोक्त विधि से गोली बनाकर मछलियों को देता रहेगा तो भी

कार्य सिद्ध होगा। यंत्र लिख कर पर्वत के शिखर पर चढ़ कर उड़ाव तो उच्चाटन सिद्ध हो पृथ्वी पर खड़िया से लिखे तो जेली जेल से छूटे ब्रह्मचर्य से रहै। हविष्यान्न भोजनकरै अपनी कामना यन्त्र के ऊपर लिखे। अष्टगन्धमें इतनीवस्तु जानना। चंदन अगर जटामाँसी (बालछड़) देवदारूकूटकेशर नेत्र वाला हाऊबेर (खस) इसके अतिरिक्त महावर केशर से ही लिखे यह त्रिपुरसुन्दरी के प्रयोग में लिखा है।

॥ १५ यन्त्र की दूसरी--संयम विधि ॥

शुभ कार्य को शुभ दिन तथा क्रूर कार्य क्रूर दिन से प्रारम्भ करै और लिखकर नदी में बहा दिया करै और जो यन्त्र न बहै उसको लेकर अपने पास रख ले सब कार्य सिद्धि करे। यन्त्र की गिनती संकल्प करले जिस कार्य को किया चाहै सिद्धि होय। दो हजार लिखे तो लक्ष्मी प्रसन्न होय छै हजार लिखे तो निरोग होय। १००० हजार लिखे तो सरस्वती प्रसन्न होय तथा औषधि सिद्ध होय। दो हजार लिखे मंत्र यंत्र सिद्ध होय। ४००० लिखै तो ईश्वर प्रसन्न होय। ३ तीन हजार लिखै तो वैरी प्रसन्न होय। ६००० हजार लिखे तो तिजारी जूड़ी बुखार जाय तथा गई वस्तु पावै। हजार लिखे तो देव प्रसन्न होय। २ हजार लिखे तो

दुःख नाश और सुख होय। चार हजार बार लिखै तो उद्यम लगे दो हजार लिखे शत्रु वश्य होय ३ हजार लिखै स्त्री वश्य होयदो हजार लिखे सभा मोहन होय। ६हजार लिखै तो मद-मोचन होय २ हजार लिखे तो विदेशी घर लौट कर आवै। २ हजार लिखे खेती उत्तम हो। १० हजार यंत्र से विषनाश होय ५ हजार लिखे तो बंध्या गर्भवती होय। ३ हजार लिखे तो मित्र मिले ४ हजार लिखे तो राजा प्रसन्न हो। १५००० लिखे चित्त की इच्छा पूर्ण होय। यंत्र लिखकर जलमेंबहावै सिद्ध होय। जो कामना होय तो आटे की गोली में मछ-लियों को खिलावै सब काम सिद्ध होंय।

❀ यंत्र लेखन विधि ❀

शुभ कारज को उत्तर मुख करके लिखे तथा अशुभ को दक्षिण मुख करके लिखना। स्त्री सङ्ग न करै ब्रह्मचर्य से रहै यंत्र लिखने से पहिले मंत्र जपै एकलक्ष ओं ह्रीं क्लीं स्वाहा। मोहनार्थी १० यन्त्र नित्य लिखौ। २० आकर्षण को तीसजय के लिये दस हजार कार्य सिद्ध के लिये। सुवर्ण लेखनीऔर असली महावरसे लिखो मोहन होय। गोलोचनसे लिखोचाँदी की कलम से आकर्षण होय। चाँदीकी कलम हल्दीसे स्तम्भन होय। सोने की लेखनी और केसर से लिखे देव दर्शन होंय कनकरसाक्त काक पक्ष लेखनी से संहार होय। शव भस्मत लेखनी से द्रुति गमन होय। वट वृक्ष का रस लोह के

से विद्वेषण होय । चंदन दूर्वा से लिखे उत्पात शाँति होय । कलम को प्रमाण ८अंगुल । वंदी मोर्चनार्थ १० हजार लिखै दो लाख लिखै राज प्राप्त होय । ३ लाख लिखे वंश वृद्धि होय ४ लाख लिखे तो वाणी सिद्ध होय । २ लाख से गत-राज्य प्राप्ति हो । दस हजार पृथ्वी पै लिखे वंश वृद्धि । ४० हजार ५० हजारसे सर्व सिद्धि प्राप्त हो । मोहन होय ४लाख से राजा वशीभूत व जलमें न डूबै । ७० हजार से लक्ष्मीपति होय ८ लाख से अष्ट सिद्धि प्राप्त होंय । ३ लाख लिखेनिधि प्राप्त होय । १ लाख से महादेव समान होय । नित्य प्रति १०।२०।३२ वा ५० अथवा १०० लिखे । ब्राह्मणभोज पत्र पर क्षत्रिय ताड़पत्र पर वैश्य कागद पर शूद्र पृथ्वी पर लिखे । लालआसन लालकपड़ा पहिने पृथ्वीपर सोवै । मूँग चावल का भोजन करै।। इति पंच दशी यन्त्र विधिः समाप्तः।।

बीजयुक्त पञ्चदशी यंत्रम्

ह्रीँ ८	ह्रीँ १	ह्रीँ ६
ह्रीँ ३	ह्रीँ ५	ह्रीँ ७
ह्रीँ ४	ह्रीँ ९	ह्रीँ २

॥ कुलाकुलचक्रम् ॥

वायु	अग्नि	पृथ्वी	जल	आकाश
अ आ	इ ई	उ ऊ	ऋ ॠ	ऌ ॡ
ए	ऐ	ओ	औ	अं अः
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
ष	स	ह	क्ष	ज्ञ

ऋणीधनी चक्रम् तीसरा

साध्यांङ्का:

६	६	६	७	३	४	४	०	०	०	३
अ आ	इ ई	उ ऊ	ऋ ॠ	ऌ ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ
ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह
२	२	५	०	०	२	१	०	४	४	१

साधकाँका:

आगे कुछ बहुत ही आवश्यक यन्त्र दिये गये हैं उनको ध्यान पूर्वक पढ़ें ।

अकडम चक्रम्

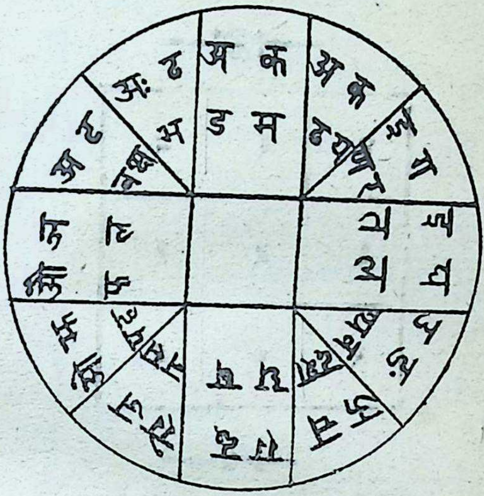

आतिशी

६	१	८
७	५	३
२	९	४

खाकी

४	३	८
९	५	१
२	७	६

बादी

४	९	२
३	५	७
८	१	६

आबी

८	३	४
१	५	६
६	७	२

तीस का यन्त्र

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

१६ कोठे का बीसा यन्त्र

२	६	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७

---o---

आठ घर का बीसा

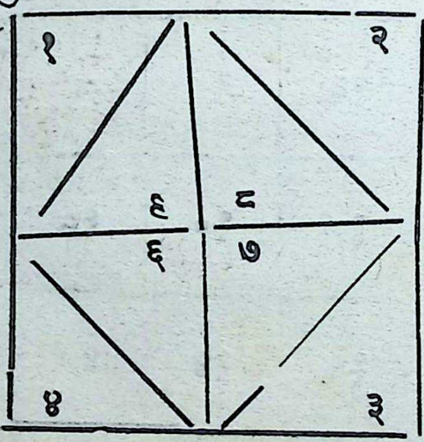

नव घर का बीसा

८	१	६
३	१०	७
४	९	

—o—

बीसा ६ कोण

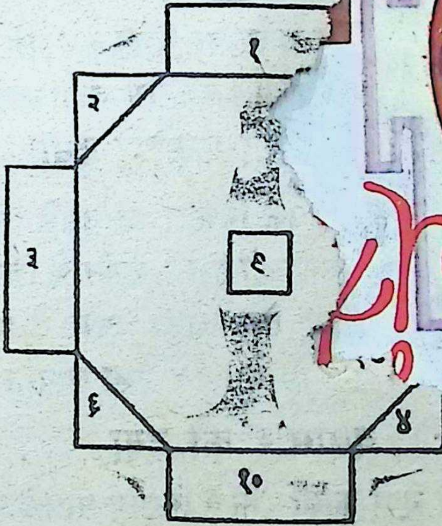

सीसा

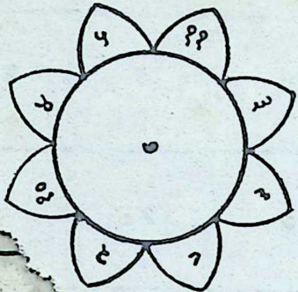

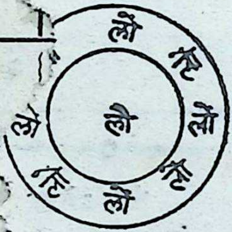

...श्री छाला पर लिख कर गले में बाँध दे
...गी) का रोग जाता रहता है ।

...की फकीरी दवा

...अर्क निकाल कर उसमें सैंधा नमक ...भी नहीं गिरे । शरीर के जिस अङ्ग पर ...ा तेल मलकर ऊपर से अर्क लगाय ...बाँध दे । दर्द चला जायगा ।

बवासीर की दवा

नीम का गूदा काली मिर्च मिलाय पीसके पीवे उसके

साथ मूली खाय तौ आराम हो।

शीतला का उपचार

नीचे लिखे यन्त्र शीतला वाले के गले में [illegible]
पर लिख कर।

१४८	१५३	[illegible]
१५०	१४३	[illegible]
१४१	१५५	[illegible]

शीतला में खाट की पा[illegible]

६१	२	[illegible]
१४	१	[illegible]
११	१६६	११

अस्य श्री शीतला मन्त्रस्य उपमन्यु ऋषिः बृहती
शीतला देवता विस्फोटक शान्त्यर्थे जपे विनि-
मन्त्र-ओं ह्रीं श्री शीतलायै नमः ॥ १२५०००
दशांशं पायसेन जुहुयात् । स्फोटानां पीड़ा
० ७ तरङ्गे ५६ श्लो० ।

ाद नाभि मात्र जलमें खड़ा होकर एक
िमंत्रित कर बुहारी से शीतला के
से तत्काल आराम होगा ।

:❀○❀:--

ं के दूर करने का

मुदो नाम वानरः ।
श्री काल ः हा काहको ज्वरः ॥

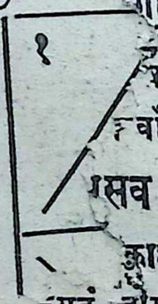

ी ूर्वं १।२।३ वा नित्य आता हो
ा में पीपल के पत्ते पर स्याही
बाँधे बुखार उतर जायगा ।

सव होने का मंत्र

काशी चरतैच हिमालये ।
च्युतं तोयं पाययेच्चैवतत्क्षणात् ।
प्रसूयते नारी काक रुद्रो वचो यथा ।
ने मन्त्र को स्वाँस को रोक कर २१ बार गुड़ को

अथवा गर्म जल या गङ्गाजल को अभिमंत्रित करके पि
पिलाने से शीघ्र ही बालक हो जायगा पीड़ा शान्ति

—०—

ज्वर नाशक मन्त्र

श्रीकृष्ण बलभद्रश्च प्रद्युम्न अ
ऊषा स्मरण मात्रेण ज्वर व्या

कागज पर लिख कर धूप दे
चला जाय। अथवा इसके विशेष
ज्वर का नाश होता है।

—✿✿—

व्यापार द्वारा ध

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं क्रीं
पूरय २ चिन्ता दूरय २ स्वाहा।

विधि—प्रातःकाल स्नान क
जपे धन लाभ होगा।

—✿✿

अथ स्वप्नेश्वर

ॐ अस्य श्री स्वप्नेश्वरीमन्त्रस्य उपमन्यु
छन्दः स्वप्नेश्वरी देवता ममाभीष्ट सिद्धये जपे वि

ॐ श्रीं हृदि, स्वप्नेश्वरि शिरसि, कार्यं शि

...नेत्र त्रयाय वौषट्, स्वाहा अस्त्रायफट् मानसोप-
...य ध्यानम् ॥

...पद्मयुगंदधानां, करैश्चतुर्भिः कनकासनस्थाम्
...चन्द्रकान्तिस्वप्नेश्वरी नौमि विभूषणाढयाम्॥
...नेश्वरि कार्यं मे वद स्वाहा ॥ मंत्र महोद
... ॥ १२५००० जपने से स्वप्न द्वारा
...म होगी।

—:❀:—

...मुखी का मन्त्र

... सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय
...शय २ ह्रीं ओं स्वाहा ॥

—❀—

...गलाध्यानम्

...देवीवीभेन शत्रून्यरिपीडयन्तीम् ।
...पीताम्बराढ्यां द्विभुजा नमामि॥१॥
...सब ...में निश्चय ही विजय होती है।

—❀❀—

कुवेरजी का मन्त्र

...ग यक्षाय कुवेराय वैश्रवणाय धन धान्या धिपतये
...मन्तमृद्धि मे देहि दायय स्वाहा ॥

C. 827/28

इसका १२५००० जप करने से कोष की निर
होती है ।

ध्यानम्

मनुजवाह्य विमान वरस्थितं गरुडरत्नवि
कम् । शिवसखं मुकुटादि विभूषितं व
तुंदिलम् ॥ १ ॥

——:❋:——

लक्ष्मीजी का

ॐ श्रीं ह्रीं श्री कमले कमलालये
महालक्ष्म्यै नमः ॥ १२५००० जप
यन्त्र और आवरण पूजा शारद

सिंदूरारुण कांति मब्जवसति
कोटीराङ्गदहारकुण्डल क
हस्ताब्जैवसुपत्रमब्जयुगल
आवीतां परिचारिकाभिर

अथवटुक

मूलम-ॐ ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारण
१२५००० जपने से भैरोंजी की सिद्धि प्राप्त ह

ध्यानम्

करकलितकपाल कुण्डलीदण्डहापाणि स्तरुण वि

प्रवोतो । क्रतुसमय समर्यविघ्न विच्छेदहेतुर्जयति सिद्धिदः साधकानाम् ॥ विशेष विधि 'शारदा के २० वें पटल में है ।

---:※:---

बाधाओं को दूर करने का मन्त्र

हनुमन्त रामदूत चल वेग चल लोहे
...ान को बीड़ा तेल सिंदूर की पूजा
... काल चं चं चं चक्र हस्त भैरव कील
... शाकिनी कील बारै जात बाधकील
... भेद कील भोंधरा भोंवरा कील
... ज्वाला कील डाड अचल चला पृथ्वी
...ाी करे उलटता के ऊपर परे खंक
...त्र को शनिवार की रात में
...८ बार जप करके सिद्ध करले ।
... ऊपर अथवा स्त्री पुरुष के ऊपर
...र करने के लिये मोरछली से ११
...ढ़ेलकर झाड़ा देवे तो हर प्रकार की
...र सर्वानन्द होगा कार्य होने पर हनूमान जी
... टे । इस प्रयोग से रोजगार न करे धर्मार्थ करे
... दायक होगा अन्यथा नहीं ।

॥ ज्वर यन्त्र ॥

ज्वर आने से पूर्व निम्न लिखित यंत्र कागज
कर धूप देकर अपनी भुजा पर बाँधे तो पारी
(जूड़ी) दूर हो।

ॐ

प	व	क
३	४१	८
३५	८७	५
५१	०	[illegible]

शनि यन्त्र

यह यन्त्र शनिवार को भोजपत्र पर लिख क
करने से शनिकृत अरिष्ट दूर होता है।

शनि यन्त्र

१२	७	१४
[illegible]	११	९
[illegible]	१५	१०

[illegible] जीतने का विजय यन्त्र

[illegible]	[illegible]	२	७
[illegible]	[illegible]	६४	६३
[illegible]	[illegible]	८	१
४	५	६२	६५

C. 8327/2867

विधि—इस यंत्र को अनार की कलम से
चंदन से ग्रहण या दिवाली की रात से लिखना
करे जब तक ३१ हजार पूरा न हो तब तक ब्रह्
किसी के घर भोजन भी न करे यंत्रों को श्री
ध्यान करके चलते जल में प्रवाहित करके
को मिष्ठान भोजन करावे । तदनन्तर य
नक्षत्र में अनार की नई कलम से
लाल चन्दन द्वारा लिखे और
कर दक्षिण भुजा में बाँधे तो ला
विजय लाभ होगा।

नोट—इस धारण किये
न रक्खे और न इसे अपवित्र
पुष्प धूपादि से पूजन अवश्य

—

रीं

...स्त्री का गर्भपात होता हो उसकी कमर में निम्न-यंत्र अनार की कलम से अष्टगंध या लाल चन्दन ... पुष्प धूप आदि से पूजन कर रविवार के दिन ... में बाई भुजामें बाँधे और साथ ही रविवार ... जे धतूरे की लाई हुई जड़ को भी अवि-...न्या के हाथके काते हुए सूत से कमर में ... र्भपात न होगा। नौ महीने के बाद ...नुम कमर से खोलकर जल में बहा ...ान ... दिवाली के दिन या ग्रहण के ... को सिद्ध कर लेवें।

... रक्षा यन्त्र

[illegible]	२४०	२३९
[illegible]	२३६	२३५
[illegible]	२३२	२३१
हीं	लं	क्लीं

C. 8277/2867

सर्प विष नाशक गारूडास्त्र य

ओं सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरोगायत्रं
यन्तरे पक्षौ । स्तोम आत्माच्छन्दा स्यङ्गानि
सामते तनुर्वाम देव्यं यज्ञा यज्ञियम्पुच्छ
सुपर्णोसि गरुत्मा न्दिवं गच्छ स्वः पत

विधि—यह यजुर्वेद का गरुड़ास्त्र
सूर्य ग्रहण के समय स्पर्श से मो
किनारे कँवल के आसन पर बैठ
की माला द्वारा जाप करे । जप
चतुर्भुजी नारायण का ध्यान कर
मंत्र सिद्ध है । तदनन्तर रोजाना
रोक्त मंत्र को सातवार जप लि
सर्प काटे तो नीम की लकड़ी
शनैः झाड़ै विष दूर हो जाय

सर्वोपरि आ

ञ्जीं	ञ्जीं	
	ञ्जीं	ञ्जीं

...क्त यन्त्र को सफेद वस्त्र पर तुलसी के रस से लिखे ...बुलाना हो सात दिन तक उसका नाम लेकर ...नित्य ब्राह्मणों को भोजन करावे। कार्य सिद्ध

सन्तान उपाय

...न्तान न होती हो उसको इक्कीस दिन ...नुम... करे तथा झूँठ बोलना, नशा ...ान ... न करे, नित्य खीर का आहार ...का पाठ यहाँ से प्रारम्भ करे।

... न्या, निशदिन जात न जान।
...ा, बाल चरित कर गान॥

...ड़ी खाला...वे, एतक नित्य करे।

८			
४			
१	...र्भ रहे	गर्भ रहे	
	...देव... ...नीत की कृपा से		
...सव	...र्भ रहे	गर्भ रहे	

...को ... ...से कागज पर लिखकर गूगल आदि फिर नीले वस्त्र में तावीज बनाकर गले में बाँधे ...गर्भ रहे।

C. 827 / 287

नोट---सर्व प्रथम सातवें अध्याय में दी हुई
से अपनी तथा मन्त्र व देवता की राशि जानले
चक्र से राशि के स्वरूप का ज्ञान करें।

॥ अथ राशि ज्ञान स्वरूप च

ज्योतिष विज्ञान

बारह राशियों का विवरण

C. 827/826

वृष	वै[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	स्त्री
मिथुन	शूद्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	विषम	पुरुष
कर्क	ब्राह्म	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	सौ०	स्त्री
सिंह	क्षत्रि	अ[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	क्रूर	विषम	पुरुष
कन्या	वैश्य	पृथ्वी	द[illegible]	द्विस्व	बुध	रवि	शनि	सोम	दोपाया	सौ०	सम	स्त्री
तुला	शूद्र	वायु	प०	चर	शुक्र	शनि	मंगल	सोम	दोपाया	क्रूर	विषम	पुरुष
वृश्चिक	ब्राह्म	जल	उत्तर	स्थिर	मंगल	सोम	शुक्र	बुध	कीड़ा	सो०	सम	स्त्री
धन	क्षत्रि	अग्नि	पूरब	द्विस्व	गुरु	रवि	शनि	शुक्र	मनु०	क्रूर	म	पुरुष
मकर	वैश्य	पृथ्वी	दक्षिन	चर	शनि	शुक्र	गुरु	सो०	चौपाया	सो०	सम	स्त्री
कुम्भ	शूद्र	वायु	पश्चिम	स्थिर	शनि	बुध	गुरु	सोम	दोपाया	क्रूर	विषम	पुरुष
मीन	ब्राह्म	जल	उत्तर	द्विस्व	गुरु	मंगल	शनि	बुध	जलचर	सौ०	सम	स्त्री

अपनी राशि तथा मन्त्र और देवता की
चक्र में स्वभाव तत्व आदि जाने यदि अपनी
तथा देवता शत्रु होते हों तब हानि समझे मि
समानता में सम ही समझे। अपनी राशि
की राशि आठवीं हो तो मृत्यु दूसरी
पाँचवी नवमी में क्लेश होता है।
करे। इसके बाद ऋणी औ
यदि साधक ऋणी होगा त
सिद्धि प्राप्त नहीं होगी।

श्लो०—स्वर्गं द्विगणी कु
अष्टभिश्चहरे द्भागं योऽधि

साधक और साध्य दोनों
रखले फिर दोनों को अलग
के गुणन फल में दोनों का
योग फल में आठ का भाग
ऋणी हुआ। साधक का
सिद्धि होगी अन्यथा नहीं—

—

स्यामलाल नाम
चाहता है अथवा

...प्तर 'क' हो। अब साधकके नाम का प्रथम ...वर्गाङ्क "८" वां है। और कालीजीका '२' को पृथक पृथक रखिये निम्न प्रकार से।

साधक अंक
...ो दुगना
...शान ने
८
...नुम
...ान
४
...ालं
...री
१
देव
...णीत
...सव
को
फिर नाम

काली जी साध्य अङ्क २ वर्ग दूसरा हुआ इनको दुगना किया ४ हुए इसमें आश्रक का वर्ग (८) जोड़ दिए १२ हुए इसमें आठ का भाग दिया तो शेष ४ रहे अतः कालीजी का शेषांक साधक से विशेष रहा इसलिए यह श्यामलाल की ऋणी हुई। यदि इनका शेषांक न्यून होता तो सिद्धि से कोई लाभ नहीं होता।

...ध्य से अधिक नहीं होना

ब्रह्म | क्षत्रिय | वैश्य

वर्ग जानने का चक्र

वर्ग	क	अक्ष			ग	मित्र	स
अ	इ	उ	ऋष	ए	गरुड	श्वान	
क	ख	ग	घ	ङ			
च	छ	ज	झ	ञ			
ट	ठ	ड	ढ	ण	श ना		
त	थ	द	ध	न			
प	फ	ब	भ	म			
य	र	ल	व				
श	ष	स	ह				

इते

… के ३६ मिलानों का कोष्ट

	वर्ग	प्रबल	निर्बल
का	का		
गरुड	सिंह	गरुड	
ग०	श्वान	ग०	श्वान
	सिंह	सम	म
	श्वान	सम	सम

गरुड	मृग	ग	मृग	श्वान	सर्प	श्वान
गरुड	मेंढा	ग०	मे०	श्वान	मूसा	श्वान
विला	सिंह	सिंह	वि	श्वान	मृग	श्वा
विला	श्वान	श्वान	वि०	श्वा		
विला	म०	मृग	सर्प	स		
विला	मषा	वि०	मू०	स		
विला	मृग	वि०	मू०	सर्प		
विला	मेंढा	वि०	मे०	स		
विला	बिला	सम	सम			
सिंह	सम	मृग	सा			
सिंह	मेंढा	सिंह	सम			
सिंह	मूसा	मृग	मूस			
सिंह	मृग	सिंह	श			
सिंह	मेंढा	सिंह	श्व			

—इते

कौतुक विधान वर्णन

...। अपना रूप पचगुना दिखाना ❀

...ालो मृत गौ के वक्षः स्थल में हल्दी की गाँठ
...दबा दें और प्रति दिन बकरी के दूध से
...सींचें ...जब हल्दी की गाँठें पृथ्वी पर
...धान ने ...लेकर इसके सम भाग श्वेत दूब
...नुम... र हरिताल मिला पीस के उब-
...टन ...प करने वाला अन्य पुरुष को
...क...।

... के समान देखना ❀

...चारु गृद्ध बिलोचनैः।
...क्षाल... दिवावत् पश्यतेनिशिः॥

...री ... और गीध इन के नेत्र तथा
...रु... नेत्रों में लगाने से रात्रि में
...देव...
...णीत...

...क जलाना ❀

...सव ... तैलं तथैवच।
...शां जलेच्चियेत्॥
...द वर्तिन संशय :।
...फिर नाल... ताल इन द्रव्यों से वर्ति
...ल देवै जब तक वत्तीजलै

तब तक दीपक सा प्रतीत हो।

—:※:—

❀ मोर का रूप धारण

बिषं गुंजोत्थितं तैलं सर्प स ंनि
सकुण्ठं तिलक यस्य तं

(अर्थ) विष-गुँजा तैल-सर्पका
जो व्यक्ति तिलक करै
शकल का दिखाई पड़े

❀ अग्नि के समा

सिंदूरं गंधकं ताल सम
तान्लिप्त वस्त्रच्छनांगो

(अर्थ) सिंदूर-गंधक-ताल-म
वस्त्र पर लेपन करे,
में वह मनुष्य अग्नि

--:

❀ हाथ के स्पर्श

चौरस्य नासिक
हस्त स्पर्शात्

(अर्थ) चोर नाम के
जो व्यक्ति अ
स्पर्श करै तो छूते

...का आग का रूप देना ❀

...ला चूर्णं अकुली तैल भावितं।
...ं शिरसि स्थितं पश्यसि वन्हिवत्॥

...ला को समान लेवे और अंकोल के तेल
...के लेप देवे और उसे पहने तो

...धान न...
...नुम... र

...ो दिखाई दें ❀

...र्ति दीपस्य तेज जा।
...व स्वर्णं वद्भवेत्॥

...छाल ...इसकी वत्ती बना उस द्वारा
...ल को लगावे तो जिस
...देव... दिखाई देवे।

...प्रीत
...सव
...को
...द वी
...फिर नां...
...राम शर्मा गौड़
...ल. व प्रकाशित।

...शि आग का रूप देना ❀

...ला चूर्णं अंकुली तैल भावितं।
...ं शिरसि स्थितं पश्यसि वन्हिवत्॥

...ला को समान लेवे और अंकोल के तेल ... से लेप देवे और उसे पहने तो

...ो दिखाई दें ❀

...र्ति दीपस्य तेज जा।
...गर्भव स्वर्ण वद्भवेत्॥

... झाल ... इसको बत्ती बना उस द्वारा ... मल को लगावे तो जिस ... देव ... दिखाई देवे।

...राम शर्मा गौड़
...ल. व प्रकाशित।